भिक्षु विचार ग्रन्थावली

ग्रन्थ २

भिक्खु दृष्टान्त

संग्रहकर्ता

श्रीमद् जयाचार्य

तेरापंथ-द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन में प्रकाशित

प्रकाशक :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

३ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता

◆

प्रथमावृत्ति
जून १९६

◆

प्रति संख्या
१५

◇

पृष्ठ संख्या
१४८

◇

मूल्य :
दो रुपये पचास नये पै

◆

प्रकाशकीय

भिक्षु-विचार ग्रन्थावली का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठकों के समक्ष है। इस
ग्रन्थ में आद्य आचार्य स्वामी भीखणजी के कतिपय जीवन-प्रसंगों का सं
। इन बहुमूल्य संस्मरणों का तेरापंथ-इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है
से स्वामीजी के जीवन की वास्तविक झांकी पाठकों के सामने आयगी अ
को उनकी भावनाओं के मूलस्रोत तक पहुंचने का अवसर प्राप्त होगा।

आशा है, पाठकों को प्रस्तुत प्रकाशन अत्यंत प्रिय प्रतीत होगा।

तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह व्यवस्था उपसमिति
पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता—१
जून १९६

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक
साहित्य-विभाग

भूमिका

यह पुस्तक आकार में इतनी छोटी होने पर भी सामग्री की दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसमें स्वामीजी के ११२ जीवन प्रसंगों का संकलन है। ये जीवन-प्रसंग मुनि श्री हेमराजजी के लिखाये हुए हैं जो स्वामीजी के अत्यन्त प्रिय शिष्य थे और शासन के स्तम्भ स्वरूप माने जाते थे। इन प्रसंगों को श्रीमद् जयाचार्य ने लिपिबद्ध किया। इस पुस्तक के अन्त में जयाचार्य की कृति 'भिक्षु यश रसायण' के जो दोहे उद्धृत हैं उनसे यह बात स्पष्ट है। इन प्रसंगों में सहज स्वाभाविकता है। रंग चढ़ाकर उन्हें कृत्रिम किया गया हो ऐसा जरा भी नहीं लगता। इन छुटपुट चित्रित जीवन-घटों से स्वामीजी के जीवन, उनकी कृतियों, उनकी साधना और उनके विचारों पर गंभीर प्रकाश पड़ता है। स्वामीजी की सैद्धान्तिक ज्ञान-गरिमा, प्रत्युत्पन्न बुद्धि, हेतु-पुरस्सरता, चर्चा-प्रवीणता, प्रभावशाली उपदेश शैली और दृढ़ अनुशासनशीलता आदि का इन जीवन प्रसंगों से बड़ा अच्छा परिचय होता है। जीवन प्रसंगों का यह संकलन एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कृति है जो स्वामीजी के समय की जैन धर्म की स्थिति, उस समय के साधु-श्रावकों की जीवन-दशा तथा उनके आचार विचारों की यथार्थ भूमिका को प्रामाणिक रूप से उपस्थित करती हुई स्वामीजी की जीवन-व्यापी अथक साधना का एक सुन्दर चित्र उपस्थित करती है। श्रीमद् जयाचार्य ने इन दृष्टान्तों का संकलन कर स्वामीजी के जीवन और शासन के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को ही सुरक्षित नहीं किया वरन् उस समय की स्थिति का दुर्लभ इतिहास भी गुंफित कर दिया है, जिसके प्रकाश में स्वामीजी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का सही मूल्यांकन किया जा सकता है।

मुनि हेमराजजी की दीक्षा सं० १८५३ में हुई थी। उनकी दीक्षा का प्रसंग बड़ा रसपूर्ण है। उसमें स्वामीजी की वैराग्यपूर्ण उपदेश-शैली का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। साथ ही उससे मुनि हेमराजजी के व्यक्तित्व की सुन्दर झांकी मिलती है। इस पुस्तक में मुनि हेमराजजी और स्वामीजी के साथ घटे हुए अन्य भी कई प्रसंगों का उल्लेख है जो दोनों की जीवन-गरिमा पर गहरा प्रकाश डालते हैं। मुनि हेमराजजी दीक्षा के बाद चार वर्ष तक स्वामीजी की सेवा में रहे। बाद में स्वामीजी ने उनका संघाड़ा कर दिया और उन्हें अलग विचरना पड़ा। इस पुस्तक में दिये गये प्रसंगों में से कुछ हेमराजजी स्वामी के प्रत्यक्ष घटे हुए हैं। कुछ उन्होंने स्वामीजी से सुने। कुछ दृष्टान्त ऐसे हैं जो दूसरों से उन्होंने सुने और प्रामाणिक समझ श्री जयाचार्य को लिखाये।

स्वामीजी से चर्चा करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकृति और धर्मों के लोग आते। कुछ स्वामीजी को नीचा दिखाने के लिए आते कुछ उनकी बुद्धि की परीक्षा करने कुछ धर्म चर्चा के नाम पर उनसे झगड़ा करने कुछ सैद्धान्तिक चर्चा करने और कुछ पक्षमत्त—दूसरों के सिखाए हुए। जो व्यक्ति जैसा होता उसके अनुरूप हेतु तर्क युक्ति कौशल दृष्टान्त अथवा सूत्र-साक्षी से स्वामीजी चर्चा करते या उत्तर देते। लिफाफा देख कर मजमून समझ लेना यह उनकी बुद्धि की सबसे बड़ी विशेषता थी और इस विशेषता के कारण वे आगन्तुक व्यक्ति के मानस का चित्र पहले से ही खींच लेते और अपनी औत्पातिक बुद्धि से युक्ति-पुरस्सर प्रत्युत्तर दे चमत्कार-सा उत्पन्न करते। इन दृष्टान्तों में उनकी इस विशेषता के अनेक अद्भुत चित्रण मिलते हैं।

उनकी वाणी सहज ज्ञानी की वाणी है। यह स्वयं स्फुरित है। उसमें अध्यात्म संवेग तथा वैराग्य रस भरा हुआ है। निर्मल ज्ञान रश्मियों का प्रकाश है। स्पष्ट और सही सूझ तथा दृष्टि है। उसमें जैन दर्शन के मौलिक स्वरूप पर दिव्य प्रकाश है तथा अर्हत् वाणी की तीव्र संवेदकता और उद्बोधन है।

स्वामीजी महान् धर्मकथी थे। छोटे-छोटे दृष्टान्तों के सहारे गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर उन्होंने इतने सुबोध और सरस ढंग से दिया है कि उन्हें पढ़ कर हृदय विस्मय विमुग्ध हो जाता है।

स्वामीजी की सी दृढ़ता बहुत कम देखी जाती है। न्याय मार्ग-पर चलते हुए वे विघ्न-बाधाओं से कभी नहीं घबड़ाए। वे दुर्दान्त योद्धा का सा मोर्चा लेते हैं और कभी पीछे नहीं ताकते।

शिष्यों के साथ उनका व्यवहार जितना वात्सल्यपूर्ण होता उतना ही अवसर पर कठोर भी। अनुशासन के समय यदि वे वज्रादपि कठोर थे तो अन्य प्रसंगों पर कुसुमादपि मृदु भी।

चर्चा के समय वे दुर्भेद्य व्यूह से देखे जाते हैं। सिद्धान्त-बल युक्ति-बल तर्क-बल हेतु-बल परम्परा-बल—इनकी अनोखी छटा सूर्य की रश्मियों की तरह एक चकाचौंध पैदा कर देती है। गंभीर ज्ञान और अभय-भेरी गिरा समुद्र की ऊर्मियों की तरह हर-हर निनाद करते हुए देखे जाते हैं। पैनी तर्क-शक्ति और अवसर-अनुकूल व्यङ्ग्योक्ति तीक्ष्ण तीर की तरह सीधा लक्ष्य भेद करती सी दीखती है।

स्व-समय और पर-समय का सूक्ष्म विवेक उनकी लेखनी द्वारा जैसा प्रकट हुआ है वैसा अन्यत्र नहीं देखा जाता। जैन धर्म को मलीन करने वाली मान्यताओं और आचार का धान और तुष की तरह पृथक्करण जैसा उन्होंने किया अन्यत्र दुर्लभ है। मिथ्या अभिनिवेशों और मान्यताओं पर उनके प्रहार तीव्र थे।

जिन्हें व्याख्यान नहीं सुहाता उन्हें रात्रि अधिक भारी दिखाई देती है। जो अनुरागी हैं उन्हें तो वह प्रमाण से अधिक भारी नहीं दिखाई देगी। (१८) स्वामी जी ने लोगों को समझाने में ऐसे सापेक्षवाद का अनेक जगह उपयोग किया है।

धन और ज्ञान के साथ सम्बन्ध होता ही है ऐसा मानना निरी भूल है। धनी जो कुछ करता है वह ज्ञान से ही करता है—यह सिद्धान्त नहीं हो सकता। उतमो जी ईराणी बोले—'आप देवालयों का निषेध करते हैं पर पूर्व में बड़े-बड़े लखपति करोड़पति हो गये हैं उन्होंने देवालय बनवाये हैं।' स्वामी जी ने पूछा—'तुम्हारे पास ५ हजार की सम्पत्ति हो जाय तो देवालय बनवाओगे या नहीं?' वह बोला—'अवश्य बनवाऊँगा।' स्वामी जी ने पूछा—'तुममें जीव के कितने भेद हैं? कौन सा गुणस्थान है? उपयोग, योग लेश्या कितनी है?' वह बोला—'यह तो मुझे मालूम नहीं।' स्वामी जी बोले—'पूर्व के लखपति करोड़पति भी ऐसे ही समझदार होंगे। सम्पत्ति मिलने से कौन-सा ज्ञान आ जाता है।' (११)

इन दृष्टान्तों में कई अनुभव-वाक्य भरे पड़े हैं 'आत्म-प्रदेशों में कामना हुए बिना निर्जरा नहीं होगी' (१२) 'खान मिट्टी की तरह अपने जमे तब संथारा कर लेना चाहिए' (१२१) 'आडम्बर न रखने से ही महिमा है' (१२५) 'साधु गृहस्थ के भरोसे न रहे' (२१ २११) 'जिस चर्चा से भ्रम उत्पन्न हो वैसी चर्चा नहीं करनी चाहिए' (२५१)। आदि आदि।

उनकी दृष्टि भविष्य को भेदती। वे बहुत आगे की देखते। उनका कहना था शिथिलता से दरार होती है। पहले कोंपल होती है और फिर वृक्ष। एक बार किसी ने कहा 'आप काफी वृद्ध हो चुके हैं। अब खड़े-खड़े प्रतिक्रमण क्यों नहीं करते?' स्वामी जी बोले 'यदि मैं बैठ कर प्रतिक्रमण करूँगा तो सम्भव है बाद वाले लेटे-लेटे करें।'

अहिंसा के क्षेत्र में उन्होंने जितना सोचा विचारा मनन किया मंथन किया उसकी अपनी एक निराली देन है। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना के वे एक सजीव प्रतीक थे। 'छहों ही प्रकार के जीवों को आत्मा के समान मानो'—भगवान की यह वाणी उनकी आत्मा को भेद चुकी थी।

अहिंसा विषयक कितने ही सुन्दर चिन्तन इस पुस्तक में हैं। स्वामी जी से किसी ने पूछा—'सूत्रों में साधु को तायी रक्षक कहा है। जीवों की रक्षा करना उसका धर्म है।' स्वामी जी ने कहा—'तायी ठीक ही कहा है। उसका धर्म है जीव जैसे हैं उन्हें वैसे ही रहने देना किसी को दुःख न देना।' (१५)

उस समय एक अभिनिवेश चलता था—'हिंसा बिना धर्म नहीं होता।' इस बात की पुष्टि में उदाहरण देते—'दो श्रावक थे। एक को अग्नि के आरम्भ का त्याग था दूसरे को नहीं। दोनों के पास [illegible] उनमें से एक पीसने लगा दूसरे ने उन्हें भूनकर अपने

कर गाँव के बाहर चला जाऊँगा। स्वामीजी ने कहा 'भगवान् ने मनुष्य को सिंह का भक्ष बनाया है। तुम सिंह के भक्ष होकर क्यों भाग कर गाँव के बाहर चले जाओगे?' वह बोला 'मेरा जी कष्ट पाने को तैयार नहीं। इसलिये भाग कर चला जाऊँगा।' स्वामीजी बोले 'सर्व जीवों के विषय में यही बात जानो। मौत सबको अप्रिय है। उससे सब जीव दुःख पाते हैं।' (२१९)

स्वामीजी के सामने जिज्ञासा की—'किसीने पत्ता लेकर सर्प भुकाया। वह सीधा चूहे के बिल में गया। वहाँ चूहा नहीं था। सर्प भुकाने वाले को क्या हुआ?' स्वामीजी ने कहा 'किसी ने काग पर गोली चलाई। काग उड़ गया उसके गोली नहीं लगी। गोली चलाने वाले को क्या होगा? काग उड़ गया इससे उसके गोली नहीं लगी यह उसका भाग्य पर गोली चलाने वाले को तो पाप लग चुका। इसी तरह किसी ने सर्प को भुकाया वह चूहे के बिल में गया अन्दर चूहा नहीं यह उसका भाग्य। पर सर्प को भुकाने वाला तो हिंसा का भागी हो गया।' (२७२)

स्वामीजी ने एक बार कहा 'एक मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य को कटारी से मारने लगा। वह मनुष्य बोला—'मुझे मत मारो।' तब वह बोला—'मेरे तुझे मारने के भाव नहीं हैं। मैं तो कटारी की परीक्षा करता हूँ। देखता हूँ यह कैसी चलती है।' तब वह बोला—'गनीमत तुम्हारा कीमत आँकने को। मेरे तो प्राण जाते हैं।' (१ १)

अहिंसा के क्षेत्र में काम और भावना दोनों पर दृष्टि रखनी पड़ती है यह उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है। स्वामीजी ने अहिंसा के क्षेत्र में तुच्छ एकेन्द्रिय जीवों के प्राणों का भी उतना ही मूल्यांकन किया है जितना कि सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य के जीवन का। एकेन्द्रिय जीवों के भी प्राण हैं। उन्हें भी सुख-दुःख होता है। मनुष्य के लिए उनके संहार में पाप नहीं यह मत धर्म और अहिंसा के क्षेत्र में नहीं टिक सकता।

स्वामीजी कइयों का प्रिय थे और कइयों को अप्रिय। कइयों के लिए स्वामठाई थे और कइयों के लिए एक महान् भय। इस तरह एक ही व्यक्ति के अलग अलग रूप दिखाई देते हैं। इसके कारण की स्वयं स्वामीजी ने ही मीमांसा की है। इसमें अपेक्षा वाद है। स्वामीजी कहते हैं—'एक ही पक्वान्न दो मनुष्यों के सामने आता है। निरोग को वह मीठा लगता है और रोगी को कड़वा। यह वस्तु का अन्तर नहीं उसके भोक्ता का अन्तर है। सम्यक् दृष्टि को साधु अच्छा लगता है और मिथ्या दृष्टि को बुरा।' (१ १)

'गाँव के मनुष्य दो व्यक्तियों के सामने आते हैं। एक व्यक्ति पीलिये का रोगी है वह उन सबको पीला ही पीला देखता है। दूसरा व्यक्ति स्वस्थ है। उसे वे पीले नहीं मालूम देते। वैसे ही मेरे श्रद्धा-आचार उनको प्रपंच मालूम देते हैं जिनमें स्वयं में प्रपंच है। जिनमें शुद्ध दृष्टि है उन्हें मेरे श्रद्धा-आचार में कोई दोष नहीं दिखाई देता।' (१)

स्वामीजी के विचारों को सही रूप से तोलने की यदि कोई तुला हो सकती है तो वह आगम-वाणी है। स्वामीजी जैन-मुनि थे। जैन शास्त्रों के आधार पर वे मुण्डित हुए थे। उनमें उनकी अनन्य श्रद्धा थी। उनके आचार, विचार और व्यवहार में जिन-वाणी का प्रत्यक्ष प्रभाव है। इस कसौटी पर देखा जाय तो वे सौ टंच सोने की तरह खरे उतरते हैं।

स्वामीजी के इन दृष्टान्तों का श्रीमद् जयाचार्य ने अपने 'भिक्षु जश रसायण' नामक सुन्दर चरित-काव्य में भरपूर उपयोग किया है। संगीतमय मधुर पद्य में उन्हें गुम्फित कर स्वामीजी के एक मार्मिक जीवन-चरित की धरोहर उन्होंने भावी पीढ़ी को सौंपी है।

लेखक की 'आचार्य संत भीखणजी' नामक पुस्तक में अनेक दृष्टान्तों का हिन्दी अनुवाद और भाव स्फोटन है। इसी पुस्तक के द्वितीय खण्ड (अप्रकाशित) में अवशेष अन्य दृष्टान्तों का प्रकरणानुसार उपयोग किया गया है।

नव प्रकाशित 'भिक्षु-विचार दर्शन' नामक सुन्दर पुस्तक में भी अनेक दृष्टान्तों के गांभीर्य उद्घाटित हैं।

स्वामीजी के दृष्टान्त आज तक हम लोग व्याख्यानों में सुनते रहे। प्रथम बार वे सम्पूर्ण रूप में मूल राजस्थानी भाषा में पाठकों के सामने उपस्थित हैं। यह प्रकाशन तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर अवश्य ही बड़ा समीचीन माना जायगा। इन दृष्टान्तों में स्वामीजी का जीवन-सन्देश भरा पड़ा है। तेरापन्थ के वे [illegible] से हैं और उच्च धार्मिक जीवन की प्रेरणा देते हैं।

१५, नूरमल लोहिया लेन
कलकत्ता
१ जून १९६

श्रीचन्द रामपुरिया

विषय-सूची

———

भिक्खु दृष्टान्त

१

बूसी में सवाईराम ओसवाल चर्चा करतां भिक्खु कह्यो : गाय भैंसरा मूंडा आगे घणो चारो नाख्यां ओगाळो करै। जब तेह कहै मोनें डोढो कह्यो। बैरागी थयो। तब स्वामीजी कह्यो ए डोडा थयां म्हारो ज्ञान चारो जाय। इम कह्यां राजी थयो। पछै सवाईराम गुरु किया।

पछ्या सवाईराम ने कह्यो मैं तेरापन्थ्यां ने यूं जाण दिया यूं ठाया। जब सवाईराम बोल्यो : दोयां रे झगड़ो लागो एक जणे तो पोतारो घर छप्पार पुन किन्यो। दूजो कजियो करतो डरै। घर को जाबतो करै, सो बोल्या डरै। थें थारो घर छप्पार पुन कियो। साध पणारो जाबतो नहीं। सो मन आवे ज्यूं बोलो। इम कही कष्ट कीयो।

एक दिन चरचा करतां सवाईराम ने कह्यो : थें म्हांने दोषीला कह्यो, पिण थांरा गुरां ने पिण किवाड़िया रो दोष लागे छै। जब सवाईराम कह्यो एक राजा रो प्रधान राजा रो माल खावे नहीं, पिण दूजा प्रधान द्वेषी। सो राजा कने चुगली खाधी ए प्रधान आपरो माल खावे छै। जब राजा दोयां नें भेळाकर पूछ्यो। तब ते चुगलखोर कहै जावड़ा में दरबार रा पाना स्याही लेखणा दीधी। जद प्रधान कह्यो : पाना स्याही लेखणा तो भणवाने दीधी छै। ए भणिया राजा रे इज काम आवसी। राजा सुणीनें राजी थयो। चुगल फीटो पड्यो, चुगल झूठी चाड़ी खाधी जमहूंतो पूंछ्यो काढ्यो, ज्यूं थें किवाड़िया रो दोष बतायो सो थें पिण झूठा छो। ●

१२

पाली में भिक्खणजी स्वामी आज्ञा लेइ नै एक हाट में ठहर्‌या। सो रूपनाथजी एक दुकान वाळा रे घरे ...आइ ने कह्यो : ए कांती सुर नमपू

ताई आय नहीं। जद तिण बाई स्वामीजी ने कह्यो म्हारी आज्ञा नहीं। जद भिक्खु कह्यो चोमासे में पिण तूं कहसी जद परहा जासां। जद बाई कह्यो मोन था सरिखा कहि गया—चौमासो लागा पछे आय नहीं तिणसूं आज्ञा नहीं। पछे स्वामीजी आप गोचरी उठ्या। जयेपुरिया बाजार में एक मेड़ी मांगी। आप बठा मे साधां नें मेल उपगरण मंगाय लिया। तिहां रहे। रात्रि हठे दुकाम में वखाण देवे। परखदा घणी होवे। लोक घणा समझ्या। रुपनाथजी सिज्यातर ने घणोई कह्यो—थे आगा क्यूं दीधी। ए अवनीत निन्हव छै। जब ते कहै—काति सुदी १५ ताई ना कहुं नहीं। पछै थोड़ा दिनां में मेद घणों आयां थी पहिली छवरिया तिण हाट रो पाट भागो। सैंकड़ा मणा बोझ पड्या। ए बात स्वामीजी सुण कह्यो म्हाने हाट सुझाई त्यां ऊपर असमाध रा स्वभाव थी मडर आवारो ठिकाणो, पिण म्हा सूं वा उपगार ईज कीधो एहवा सिमावान। ●

३

पीपाड़ में भीखणजी स्वामी न रुपनाथजी रो साध जीवणजी कहै साधु रो आहार अव्रत प्रमाद में है। जद स्वामीजी कह्यो : भगवान री आज्ञा छै सा काम चाखा। पिण जीवणजी मान्यो नहीं। फेर स्वामीजी पूछ्यो : साधु आहार करे सो काम चोखो के खोटा ? जीवणजी बोल्यो : साधु आहार करे ते खोटो काम, त्यागे ते चोखो काम। दिशा आदि जाता मिले जद स्वामीजी पूछे जीवनजी ! खाटो काम कीधा के करणो है ? इम वार-वार पूछता लाजतिवो। कहै—भीखणजी। साधु आहार करे सो काम चोखोइ है। ●

४

कणाणीया में भीखणजी स्वामी रो मित्र गुलाजी गाधइयो। तिणन स्वामीजी पूछ्यो। गुला ! काइ खेती कीधी ? हां स्वामीनाथ कीधी। स्वामीजी पूछ्यो कपत खपत कीकर है ? जद गुलजी बोल्या : स्वामीनाथ ! रुपिया दश लागा कोयक हल रे भाड़ारा कोयक निनामरा कोयक बीजरा, सब दस रुपिया लागा। स्वामीजी पूछ्या : पाछा किसतोक आयो ? जद

उदैपुर, जैपुर, जोधपुर, वाळा रे पालखी आपरीइ पालखी बणायो। इम विचार वांस पाथ ऊपर छाया करी छाल वस्त्र ओढाय पालखो बणायो। पालखी रो वांस तो छाक सहित वक्र पणे हुवै, तिणमें ता समझे नहीं अने भा पालखो बणायो ते पाधरो वांस पाछ। विपरीत पणे दीसे। पछ्रा पालखा में रावनें मसाण इवा लाबा नीकल्या। सार्थे मनुष आगे पाछे घणा गाम बारे आया। जब लोक कने रू खरी आयां विशाम लिया। जद करसणी बोल्या अठै मां बाळो र मां बाळो। छोहरा छोहरी बीहता। जद स्यांरा चाकर साथे हुंता ते बोल्या : मां बोल रे मां बोल रावजी है रे रावजी। जद करसणी बोल्या सूरगत बाव रावजी मर गया! म्हे तो रावजी री मा जाणी थी। जद चाकरां करसण्यां में कह्यो जयपुर, जोधपुर, उदयपुर वाळा रे पालखी तिणसूं परिइ पालखो बणायो है। सो रावजी अठे इवा लावा आया है। जद करसण्यां कह्यो ढोल सरिखो क्यूं बणायो ? स्वामीजी कह्यो जेसो सिरोइना रावनो पालखो जिसो वां भेषी साधपणो पचक्यां है। पिण सरधा खोटी। जीव खवायां पुन सरधे। सावद्य दान में पुन सरधे तिणसूं समकत चारित्र एक ही नहीं। *

८

गुमानजी रा साध दुर्गादासजी तिणनें भीखणजी स्वामी कह्यो : थें आधाकर्मी थानक में दोष बतावता अर थ मानता नहीं अने अबे थानें छोड्या पछै थ थानक निपेधवा लागा। जद दुरगदासजी बोल्या रावण रा उमराव रावण न खोटा जाणता था, पिण गोधी राम कानी वाढ़ता। ज्यूं थांरा भेळा हुंता जद म्हें पिण थानक न निषेधता। अने म थानक निषेधता जद म्हें द्वेष करता। *

९

गुमानजी रो साध धनजी हेमजी स्वामी ने वाद्यो : हेमजी तीन तूंबड़ा बधता हुंता ते आज फाड़ न्हाख्या। जद हेमजी स्वामी कह्यो : थां मांहि थी भीखणने नवा साधपणो पचख्या म ना घना दिन थया अनें तीन तूंबड़ा

११

एक गाम में स्वामीजी ऊतर्या। अमरसिंहजी रा दो साध, ईसरदासजी कोजीरामजी, आया। ते ऊतर्या तिहां स्वामीजी आय ऊभा प्रश्न पूछ्यो। अणुकम्पा आपने किणही भूखा मरता नें भूखा दिया, तिणमें काई हुवो? जद ते बोल्या इसो प्रश्न मिथ्याती हुवे सो पूछे। जद स्वामीजी बोल्या पूछणवाला तो पूछ लीधी। पिण कहिणवाला क्यांरी मिथ्याती हुवे तो मत कह्यो। जद ते बोल्या म्हें तो कह्यां हां—भूखामें पाप। जद स्वामीजी कह्यो भूखामें तो पुण्य पाप दोनूं है। पिण भूखा अणुकंपा आण्यनें सुवाणों केइ मिश्र कहै। जद कह्यो: मिश्र कहै सो पापी। फेर पूछ्यो—केइ पाप कहै। जद कह्यो पाप कहै सोई पापी। फेर पूछ्यो केइ पुण्य कहै। जद त्यां कह्या पुन कहै सोइ पापी। जद स्वामीजी फेर विचारण्या ऊंडी करन बोल्या केइ पुन सरधे है। जद त्यां कह्यो: सरधमी मन आइ क्यूं। जद स्वामीजी कह्यो थारे भद्रा पुन री। थे पुन परूपो नहीं। पिण पुन सरधो हो। इत्यादिक कहि कष्ट करी तिकाणे पधार्या।

१२

पाली में एक जणो भीखणजी स्वामी सूं चरचा करतां ऊंधो बोलतो चाले। कहै—थारा श्रावक इसा दुष्टी सो किणही रा गला मांहि थी पासी नहीं काढे। जणो विपरीत बोलतां स्वामी भीखणजी बोल्या थारा ने म्हारा मत कहो, समचेइ बात करो। जद कोयक मझीक आपनें कहै कोइ समचे बात कह्या। तब स्वामीजी बोल्या एक जणे रूंखड़ा सूं पासी खाधी। दोय जणा मारग जाता उणनें देखी। पासी काढे ते किसोयक? उणने नहिं काढे ते किसोयक? तब ते बोल्यो: पासी काढे ते महा उत्तम पुरुष मोक्षरो जाणहार देवलोक में जाणहार, दयावंत। भला गुण कीधा। नहीं काढे तिको महापापी महादुष्टी नरक रा जावणहार। जद स्वामीजी कह्यो वे मे थारा गुरु दोनूं जणा जाता हा। उणरी पासी कुण काढे। जद उ बोल्यो: हूं काढूं। थारा गुरु काढे के नहीं। जब कहै उवे क्याने काढे। उवे तो साधु

है। जब स्वामीजी कह्यो मोक्ष देवलोक रो जाणहार तो तूं ठहर्‌यो। थारि लेखै नरक जावणहार थारा गुरु ठहर्‌या। जब घणों कष्ट हुवो। जाब देवा समर्थ नहीं। ❁

१३

किण ही कह्यो अहो भीखणजी! बाइसटोला वाला थारा अवगुण काढे है। जद स्वामीजी कह्यो अवगुण काढे है के घाले है? जब ते बोल्यो अवगुण काढे है। जद स्वामीजी कह्यो म्होनी काढता। कांयक तो वये काढे। कांयक मैं काढां। म्हारे अवगुण काढणा इज है। ❁

१४

पीपार में किवरा इक जणा मनसोबो करनें पूछ्यो—भीखणजी! लोक में यूं कहै छै—'सात-सात तो देस्यूं अने एक-एक गिणस्यूं', तेहनो अर्थ कांई? जद स्वामीजी कह्यो पवो पापरो अर्थ छै। सात सुपारी देवे अनें एक सातो गिणे। लोक सुणनें आश्चर्य थया। ❁

१५

भीखणजी स्वामी देसूरी जातां पांगेरावनां मह्राजन मिल्या। पूछ्यो थांरो नाम कांइ? स्वामीजी बोल्या म्हारों नाम भीखन। जब ते बोल्या भीखण तेरापन्थी ते तुम्हें? जद स्वामीजी कह्यो हाँ उवेहीज। जब ते कोधकर बोल्या थांरो मूंहडो दीठा नरक जाय। तिवारे स्वामीजी कह्यो थांरो मूंहड़ा दीठा? जब स्वा कह्यो म्हारा मूंहड़ा दीठा देवलोक ने मोक्ष जाय। जद स्वामीजी कह्यो मैं तो यूं न कहां—मूंहडो दीठों स्वर्ग नरक जाय पिण थांरी कहिणो रे लेखे थांरो मूंहड़ा तो मैं दीठो सो मोक्ष ने देवलोक तो मैं जास्यां। अने म्हारो मूंहडो थें दीठा सो थांरी कहिणी रे लेखे थारि पामें नरक इंज पडी। ❁

१६

सवत अठारे पैंताळीस र वर्षे पीपार चोमासो कीधा। दसुजी चम्पुरा जी रो पिता अगु गांमी, तिण रे परचा करतां मटा बेठी। पछे अपु

गाँधी ने कह्यो — भीखणजी री श्रद्धा खोटी। किण ही श्रावक ने बाजरी दीधां मैं ई पाप कहै। किण ही गृहस्थ री बाजरी चोर ले गयो तिण में ई पाप कहै। इम चोर ने श्रावक सरीखो गिणै। तब बगू गाँधी स्वामीजी नें ए बात पूछी। एक न्याय किम ? जब स्वामीजी कह्यो — थानें पूछणो थारी पछेवड़ी एक तो चोरटो ले गयो, एक थे श्रावक नें दीधी थाने किण बातरो प्रायश्चित आवै ? जो कहै चोर ले गयो तिणरो प्रायश्चित न कहै अनें श्रावक नें पछेवड़ी दीधी रो प्रायश्चित कहै तो उणरे लेखे इज देणो खोटो ठहर्‌यो। पछै बगू गाँधी उणानें छोड़ने स्वामीजी नें गुरु किया। ✱

१७

संवत अठार पैंताळीसे पीपार चोमासे घणा लोक समझ्या। बगू गाँधी पिण समझ्यो। तिणरो रे श्रावकां ने ध्रोरो घणो लागो। जब लोक कहै : भीखणजी बगूजी समझतां बीजा ने इ ध्रोरो लागो पिण खेतसीजी लुणावत ने तो दोहरो घणों इज लागो। सोच घणौं करै। जब स्वामीजी कह्यो — परदेश में चल्यारी लुगावणी आयां सोच तो घणाइ करै, पिण कांची कांचळी तो एक अणी पहर। ✱

१८ :

तिणहिज चोमासे वखाण सुणनें लोक राजी घणा हुवे। कोई द्वेषी कहै रात्रि घणी आई सवापोहर, डोढपोहर। जब स्वामीजी कहै दुख री रात्रि मोटी लागै। विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लागै अनें सर्मी साम मनुष मूंआ ते दुख री रात्रि घणी मोटी लागै। ज्यूं वखाण न गमै ज्यानें रात्रि घणी मोटी लागै। ✱

१९ :

तिणहिज चोमासे केइ वखाण तो नहिं सुणैं अनें अलगा बैठ निंदा करै। जद किणही कह्यो — भीखणजी ! थे तो वखाण देवो अनें ए निंदा करे। जद स्वामीजी कह्यो — ग्राम रो स्वभाव भाखर बाजणा रोवण को पिण मूं न समझे घा भाखर किवाड री छे के मसाँरी छे। ...

में ज्ञानरी बात आवे, तिणसूं राजी होणो अठेइ रह्यो अपूठी निंदा करे। थांरे निंदारो स्वभाव छे तिणसूं ऊंधी सूझे।

२०

तिण पीपार में एक गेबीराम चारण भगत थयो। ते लोकांमे पूजावे। भगतां ने लापसी जीमावे। तिणने लोकां सीखायो तूं भगतांने लापसी जीमावे तिणमें भीखणजी पाप कहे। जब ते गेबीराम मोटी हाथ में छे गुधरा धमकाय तो स्वामीजी कनें आयो। कहे हे भीखण बाबा। हूं भगतांमें लापसी जीमाऊं सो कांइ हुवे ? स्वामीजी बोल्या लापसी में जैसो गुड़ घाले जैसी मीठो हुवे। इम सुणने घणो राजी हुवो। नाचवा लागो। भीखण बाबे भलो न्याय दीधा। लोक बोल्या भीखणजी पहिलां उत्तर आगे पहरम राख्यो हुंतो।

२१

संवत अठारे तेपन सोजत में चोमासो कियो। लोकां घणां समझ्या। जब किणहि कह्यो : भीखणजी। उपगार तो आछ्या कियो। घणां नें समझाया। जद स्वामीजी बोल्या खती कीधी पिण गाम रे गोरवे है सो गधा आय न चढ़िया तो टिकसी बाकी काम कठिन।

२२

स्वामीजी नीकल्या। साधवियां न हुई तठा पहिलां किणहि कह्यो : थांरे तीरथ तीन दीसे है ? जाडू है पिण लाड़ो दे। जद स्वामीजी बोल्या लाड़ो है पिण चोगुणी रो है।

२३

रीयां में पखाण बाचता आचार री गाथा सुणनें मोतीराम बोहरो बोल्यो : भीखणजी। बोहरो बूढो हुवो है तो हि गुलाब लैलणी छोड़े नहिं। क्यूं ये बूढा थया ताहि भीमाने निपपणा बोल्या नहिं। जद स्वामीजी बोल्या : थांरे बाप ईंट्यां छीली थांरे हाथे ईंट्या छिली पाटा पाटी येइ संभल्या कोइ नहीं। दीपचंद मुणोत मन में घरो देई आपरा हेतू मित्राने कह्यो—भीखणजी

रो वचन इसो निकल्यो सो पाटा-पाटी समेत तो दीसे है। जब त्यां आप आप रा रुपइया सांच लीया। पछे वोड़ा विना में परबार गयो। पाटा पाटी खोवट लिया।

२४ :

रीयां में अमरसाहजी रो साधु तिलोकजी स्वामीजी कने आय बोल्यो सूत्र में अन्न पुन्ने पाण पुन्ने आदि नव प्रकारे पुन्य कह्या है। भगवंत प्रदेशी री दानशाला कही पिण पापशाला न कही। भगवंत अन्न पुन्य कह्यो पिण अन्न पाप न कह्यो। जद ये दान दया उठाय दीधी। स्वामीजी बोल्या अनुकंपा आपने कोइ ने सेर बाजरी दीधी तिणमे छे तो पुन्यक? जद बोल्यो : हम क्या जाणे। हम तो मंदिया बांचते। हम आगरा के पाणी पीय। हम दिल्ली के पाणी पीये। जद स्वामीजी बोल्या : दिल्ली आगरा में तो गायां कटे। इण बात में कांइ सिधाई। सूत्र भण्या हवे तो कहो। इतले रतनजी जती छूंको आयो। ए बात सुण तिणने भिवेचने बोल्यो : थे दीक्षा पड गया हो तो ही माना एक दाणा में च्यार पर्याप्त च्यार प्राण ते खुवाया पुन्य किम हुसी अर्थे थे मुंहपती बांधनें क्यूं खोटी हुवा? एकेन्द्रि खुवाया पुन्य कठा को। इम कष्ट कीयां जब चाल्यो रह्यो।

२५

रीयां में हरजीमल सेठ कपड़ा री बीनती कीधी। स्वामीजी बोल्या थें साधां रे अर्थे मोल लेइ कपड़ा वहिरावा ते म्हाने कल्पे नहीं। जब सेठ बोल्यो। दीक्षा ता लेवे। हूं मोल लेइ वहिरावूं मोनें कांइ हुवा? जद स्वामीजी बोल्या उणार्थ इम पूछ लेवो। जद सेठ बोल्यो कहिण में तो मोल ले दियां में हवे ही पाप कहे पिण लेवे तो उरहो। म्हारा पहिरण ओढण ओढिलो कपड़ो आप लेवा। जद स्वामीजी बोल्या ए पिण नहिं ल्यां। दीक्षा पिण कपड़ा ले गया भीखणजी पिण ल गया। कुण तार काढे।

२६

हरजीमल सेठ रागी थया जद रुघनाथजी रे हरजाजी साधु मासा आलिया लइ बांचवा लागो। भीखणजी उठे अमकहिये गामें कापी पामी

२९

खेरवा मैं स्वामीजी कनें ओटो स्याल र थो मैं वळो बोल्यो — थे श्रावक नें दियां पाप कह्यो मैं वेस्या नें दियां पाप कहो छो इण लेखे श्रावक अनें वेस्या सरीखा गिण्या। जद स्वामीजी बोल्या — ओटाजी लोटी भरने काचो पाणी थारी मां नें पायां कांइ हुवै? जद ते बोल्यो पाप हुवै। जद स्वामीजी फेर बोल्या : एक लोटी पाणी वेस्याने पायां कांइ हुवै? जद बोल्यो इणमें ई पाप हुवै। जद स्वामीजी बोल्या थारै लेखे थारी मां ने वेस्या सरीखी गिणी कांई? जब घणो कष्ट हुवो। लोक बोल्या ओटैजी मां नेवेस्या सरीखी गिणी। ❋

३०

पूरार मैं स्वामी भीखणजी पासे श्रावगी चरचा करवा आया। बोल्या मुनी नें तार मात्र वस्त्र राखणो नहीं। राखे ते परीसह थी भागा। जद स्वामीजी कह्यो परीसह कितरा? जब ते बोल्या : परीसह बावीस। स्वामीजी कह्यो पहलो परीसह किसो? जब त्यां कह्यो क्षुधा रो। स्वामीजी पूछ्यो थारा मुनि आहार करे के नहीं करै? जब त्यां कह्यो एक टंक करै। जब स्वामीजी कह्यो थारा मुनी प्रथम परीसह थी थारे लेखे भागा। जब ते बोल्या : भूख लागां आहार करै। जद स्वामीजी कह्यो म्हे ही सी लागां कपड़ो ओढां। वलि स्वामीजी पूछ्यो थारा मुनी पाणी पीवै के नहीं? जब त्यां कह्यो पाणी पिण पीवै। जद स्वामीजी कह्यो : इण लेखे थारे मुनी दूजा परीसह थी पिण भागा। जद ते बोल्या तृषा लागां पाणी पीवै। जद स्वामीजी कह्यो सीतादिक टालवा म्हे पिण वस्त्र ओढां अनें जो भूख लागां अन्न खावां, तृषा लागां पाणी पीयां परीसह थी न भागै तो सीतादि टालवा वस्त्र राख्यां पिण परीसह थी न भागै। इत्यादिक अनेक चरचा सूं कष्ट कीयो। दिवे दूजे दिन घणा भेळा होय नें आया। स्वामीजी दिशा पधारता था सो साहमा मिल्या। करड़ा होय ने बोल्या : म्हे तो चरचा करवा आया नें थे दिशा जावो छो। त्यांरी मूराणी देखने स्वामीजी बोल्या : आज तो थे कजिया रे मतै आया दीसो छो। जब ते बोल्या : थांने किस तरे खबर पड़ी?

२३

माधोपुर में भायां तो घणां समझ्या सो गोचरी गयां कठै आया पधारो। बायां रो मन नहीं। जद भायां बायां ने कह्यो—सगळां में थिरै तो मस्तक, देही में उतरता पग। थारै पगां में तो भायो देवां फेर थोकां री किसी गिणत? इम कही नें समझाय स्वामीजी नें मांही लेजाय नें बहिरायो। ए कथा पिण भायां नें स्वामीजी सिखाई दिसै।

२४

कांकरोली में साध गोचरी गया। एक आगणी रे धोवण, पिण बहिरावै नहीं। कहै—देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसूं पीवणी आवै नहीं। साधां आय स्वामीजी ने कह्यो—एक आगणी रे धोवण मोकळो। पिण इम कहै। जद स्वामीजी पधारया। बाई ने कह्यो—धोवण बहिराव। जद ते बाई कहै: जिसो देवै जिसो पावै सो धोवण म्हांसूं पीवणी आवै नहीं। जद स्वामीजी कह्यो—गाय नें चारो देवै नाखे तो दूध देवै ज्यूं साधां नें धोवण दियां आगै सुख पावै। इम सुणनै कह्यो—ज्यो महाराज। पछै धोवण लेई ठिकाणै पधारया।

२५

पारलिया में स्वामीजी पधारया। एक बाई कह्यो—स्वामीजी म्हारै भैंस ब्यावै जद पधारो तो आछो देवूं। ते किण भव ब्यायां एक महिनो थाई दूध दही घावर देवै पिण बिलोवै नहीं। ते देवी रे ठाणे पधारज्यो। जद स्वामीजी कह्यो—थारै जद भैंस ब्यावै ने जद देवी दूवै। म्हांने जद समाचार दूवै नें कै आवो।

२६

केलवा में एक बाई कहै स्वामीजी पधारै तो साधपणो लेवूं। इम बात करती थकै। पछै स्वामीजी पधारया। धमका सूं बाई ने ताव चढ गयो। मांहे हराम करता बाई जद स्वामीजी पूछ्यो—कांई थयो? थें क्यूं बाठै है। जद वा राड करती कहै स्वामीजी! आपरा पधारणा हुआ नें म्हानें ताव चढ गयो। जद स्वामीजी पूछ्या दिक्षा रा धसका सूं तो ताव न चढ्यो

टेक। जद विप्र कह्यो मन में आइ तो खरी। जद स्वामीजी कह्यो : यू मसको पड़े तो विद्या रो काम जाब जीव रो है। ●

: ३७ :

भेरवा रो पसुरो साह स्वामीजी नें कह्यो : महाराज ! साधपण रा भाव फ्ने है। जद स्वामीजी कह्यो थारो हीयो काचो है। घर रा पुत्रादिक रोवै जद थेइ रोवणा लाग जावो तो पछे काम कठण। जद साह कह्यो आंसु तो आय जावै। जद स्वामीजी कह्यो सासरे जायो लेवा जमाई आवे जद स्त्री तो रोवै। पिण उणरे देखादेख जमाई रोवा लाग जावे जद लोक में भूंडी लागे। ज्यूं साधपणो लेवे जरे उणरा न्यातीला रोवै ते तो आपरे स्वार्थ पिण उणरी देख्यादेख दीक्षा लेणवालो रोवा लाग जावे तो बात विपरीत। ●

३८

पीपार में स्वामीजी गोचरी पधार्‌या। एक बाई इम बोली : भीखणजी री श्रद्धा लीधी तो उणरो धणी मर गयो। जद स्वामीजी बोल्या बाई ! तू ही बावक इज दीसे। थारो धणी किणसू मूवो ? तू तो भीखणजी री निंदा करे है। जद ओर बायां बोली भीखणजी पहीज छे पहीज। तिवारे उण काणी पड़्ने घरमें न्हाम गई। ●

३९

आऊवा में बलमाजी ईरानी बोल्या भीखणजी थें देवरा निषेधा सो पिण म्हाने तो बडा-बडा कमेसरी कोडमरी स्यां देवल करावा। जद स्वामीजी बोल्या थारा घरे पचास हजार रो डेरो थयो देवल करावो के नहीं। जब ते बोल्या हूं करावूं। जद स्वामीजी पूछ्यो थामें जीवरा भेद गुण स्थान उपयोग जोग लेस्या किती ? जद ते बाल्यो : या तो मोर्न खबर नहीं। जद स्वामीजी बोल्या इसा समझणा आगेइ हुवेला। डेरो दिरया ... ●

: ४० :

आऊवा में नगजी साहूकार री बेटो बोल्यो : भीखणजी बारखड़ी में 'ता' किण रा ने 'तं' किण रा ? जद स्वामीजी बोल्या भगवती में 'का' किण रा ने 'कं' किण रा ? 'खा' किण रा ने 'खं' किण रा ? 'गा' किण रा ने 'गं' 'किण रा' ? 'घा' किण रा नें 'घं' किण रा ? जब चुप हुवो।

४१ :

किणही पूछ्यो भीखणजी ने यूं कह्यो एक महाव्रत भागां पांचूंई भागे सो यूं सावे पांचूं किम भागे ? जद स्वामीजी बोल्या : पापरो धर्म हुवे जब संसार में इ जीव दुःख भोगवे। जिम एक भिखारी नें शहर में फिरतां पांच रोटी रो आटो मिल्यो। रोटी करवा लागो। एक तो रोटी ठारन चूला लारे मेली। एक रोटी तवे सिके। एक रोटी खीरां सिके। एक रोटी रो लोयो हाथ में। अनें एक रोटी रो आटो कठोती में। एक कुत्तो आयो सो कठोती में एक रोटीरो आटो ले ले गयो। तिण कुत्ता लारे भिखारी न्हाठो। ठेठे पड़ियो सो हाथ मांहलो लोयो धूल में मिल गयो। पाछो आय देखे तो चूला लारे रोटी पड़ी हुंती ते मिनकी ले गई। तवेरी तवे बल गई। खीरां री खीरां बल गई। इण रीते एक महाव्रत भागां पांचू भाग जावे।

४२ :

स्वामी भीखणजी पीपाड़ पधारया। गाम में लोक लुगाई द्वेष घणो करे। आहार पाणी री संकडाई। जद स्वामीजी साधां ने कह्यो : मासखमण इहां रहिवा रा भाव है। जद साधु बोल्या : आहार पाणी री संकडाई घणी। घणा लोक आहार दे नहीं। जद स्वामीजी एक गोचरी तो बाहरला गाम री करावे। एक गोचरी शहेर री। एक गोचरी महाजनां री करावे। सो स्वामीजी गोचरी करतां पिण लोकां रे खटोखटी भीखणजी ने एक रोटी देवे तो इग्यारे समाई देश री। कठे जाय कठे आहार पाणी री जोगवाई पूछ्यां कहे नहीं तो बानक भाइ समाई करां। एक जायगां आहार पाणी री जोगवाई पूछ्यां कहे म्हारी धणर बाजन समाई करे। सो भीखणजी ने रोटी दिवा

नर्णदरी समाइ गल जावे । पहली ऊँची सरधा । इम कठइ मायो दे देवे कठेइ
थाइ दे देवे । कितरायक दिन नीकल्या । रुघनाथजी ने खबर हुइ जद जोधपुर
सूं पाछ्या आया । लोक वखाण सुणवा आया पिण स्वामीजी रा विहार सूं
रुघनाथजी नें ताव चढ़ गयो । कनै ठोट चेला ने ल्याया ते वखाण दे जाणे नहीं ।
जद परिषद् पाछी फिरी । बजार में केयक स्वामीजी रो वखाण सुणवा लाग
गया । पछे लोक कहै आपस में चरचा करो । पछे ब्राह्मणां ने सिखाया म्हारे
चेलो अवनीत होय गयो सो ब्राह्मणां न दियां पाप कहै । पछे ब्राह्मण स्वामी
जी कनें आय चर्चा करवा लागा । जद रामचन्द्र कटारियो बोल्यो थांने
दिया रुघनाथजी धर्म कहै तो पचीस मण गुड़ री कोठी भरी है ते परही
देऊं । जद ब्राह्मण रामचन्द्र सारा रुघनाथजी कने आया । रामचन्द्रजी
रुघनाथजी ने कह्यो, थे धर्म कहो तो पचीस मण गोहां री कोठी भरी है
जिका ब्राह्मणां नें गाठ बंधाय देऊं । कहो तो घूगरी रधाय देऊं । कहो तो
आटो पीसाय देऊं । कहो तो रोट्यां करायनें दो मण चणा रे आटा रो लाटो
कराय नें ब्राह्मणां न जीमावूं । थांनें धर्म हुवे सो बतावो । जद रुघनाथजी
बोल्या मैं तो साध हां । म्हारे कठे कहणा है रे ? म्हारे तो मून है । जद
रामचन्द्र बोल्या थांरे नहिं कहणो तो अब किम कहसी ? थां दिये तो उवे
सोकड़ा चाढे । मोग्न होयने कांइ लोकां ने लगावो हो । चरचा करणी है
तो न्याय री चरचा करो । यूं कहीन पाछो आया । स्वामीजी रे मास खमण
होवारी त्यारी थई । जद भारीमलजी स्वामी ने रुघनाथजी कने मेल्या
थांरा मावक थ थां री कहै है सो चरचा करणी हुवे तो करो । जद रुघनाथ
जी बोल्या किणरे चरचा करणी है रे ? पछे घणों उपकार कर घणां ने
समझाय स्वामीजी विहार कीधो ।

४४

कंटालिया में १ भायो दीक्षा लेवा त्यार थया पिण बोल्या म्हारे माता
री मोहणी है सो माता जीवे जिते तो दीक्षा आवती दीसे नहीं । कितरायक
दिनां पछे माता आऊखो पूरो कियो पछे फेर स्वामीजी उपदेश दियो । जद
बोल्या स्वामीजी म्हारे व्यापार करूं हूं सो मेरुं थारी मोहणी लागी ।

जद स्वामीजी बोल्या माता तो एक सुती ठे मर गइ पिण मेरे मेरल्यां तो घणी सो कद मरे न कद थने दीक्षा आवे। ●

४४

दान ऊपर भीखणजी स्वामी दृष्टंत दीधो। पांच जणां सीरमें चणां रो खेत बायो। पांच सो मण चणां नीपना। पांचू जणां मतो कीधो—घर में धन तो मोकलो है मां चणांरो दान धर्म करो। जब एक जणे सोमण चणां भिखारयांने लूटाय दिया। दूजे सोमण रा भूंगड़ा सेकाय दिया। तीजे सोमण चणांनी घूगरी रंधाय सुवाइ। चौथे सोमण चणां री रोटयां कराय पाकरी काटो करायने जीमाया। पांचमें सोमण चणां वोसरायन हाथ लगावारा त्याग किया। सावद्य दान में पुन्य धर्म कहै ज्यांने पूछीजे घणो धम किणने थयो। ●

४५ :

वलि दान ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो एक बूढो डोकरो भिक्षा मांगतो फिरे। किणही अनुकम्पा आणने सेर चणां दिया। जब डोकरे किणहीनें कह्यो : एक जणे मोने सेर चणां दिया है पिण दांत नहीं सो मोने पीस दे। जब दूजी बाई अनुकंपा आणने पीस दिया। आगे जायमें किणहीनें कह्यो मोने एक जणे धर्मात्मा सेर चणां दिया है दूजी बाई पीस दिया तिणसू तू मोनें रोटी कर दे। जब तीजी बाई अनुकपा आण नें लूण पाणी घालने सेर चून री रोटयां कर दीधी। ते रोटी खाय तृप्त थयो। थोड़ी वेर में तृषा घणी लागी जद आगे जायनें कहै है रे कोइ धर्मात्मा। मोनें पाणी पावै। जद चोथी बाई अनुकंपा आणनें काचो पाणी पायो। एक जणे चणा दिया दूजी पीस दिया, तीजी रोट्यांकर जिमायो चोथी पाणी पायो सो च्यारां में घणो धर्म किणमें थयो ? ●

४६ :

हीरूमजी रो बेटो कचरोजी आछोर रो वासी सिरयारी में स्वामीजी कनें आयो। कहै भीखणजी कठे ? जद स्वामीजी बोल्या भीखण म्हारो

नाम है। जद ते बोल्यो आपने देखवारी म्हारै मनमें घणी थी। स्वामीजी बोल्या देखो। पछै कंवरोजी बोल्यो मोने चरचा पूछो। स्वामीजी बोल्या : थे देखवाने आया थानें कोइ चरचा पूछां। जब ते बोल्यो कांयक तो पूछो। जद स्वामीजी बोल्या थारे दीक्षा महाव्रत रो द्रव्य क्षेत्र काल भाव गुण कांइ है। जद ते बोल्यो आ तो मोने कोइ आवै नहीं पानां में मंडी है। स्वामीजी कह्यो पानां फाट गयो अथवा गम गयो छै तो कांई करस्यो ? जद ते बोल्यो म्हारा गुरां थाने चरचा पूछी जिणरो थाने जाब न आयो। जद स्वामीजी कह्यो थारा गुरां चरचा पूछी तिकाही ज चरचा थे मोनें पूछो। ज्यांनें जाब दियो है तो थानेइ दाखा। जद कंवरोजी बोल्यो थे तो म्हारै लेखा रा दादा गुरु हो सो हूं थासूं कठासूं जीतूं ? जद स्वामीजी बोल्या म्हारे तो इसा पाता चेला कोइ चाहिजे नहीं। •

४७

खेरपुर में स्वामीजी कने एक आयो अने बोल्यो मोनै चरचा पूछो। जद स्वामीजी कह्यो थे ठिकाण आयाने कांइ चरचा पूछां ? जद बोल्या कांइक तो पूछो। जद स्वामीजी कह्यो थे सन्नी के असन्नी ? ते बोल्यो : हूं सन्नी। स्वामी पूछयो किण न्याय? जद ते बोल्यो ना, मिच्छामि दुक्कडं हूं असन्नी। स्वामीजी पूछ्यो असन्नी ते किण न्याय ? जद ते बोल्या नहीं २, मिच्छामि दुक्कडं सन्नी असन्नी एक ही नहीं। जद स्वामीजी बोल्या ते किण न्याय ? जद ते रीस करने बोल्यो थे न्याय २ करने म्हारी मत बिगेड़्यो। आतो धका छाती में मूकी री देइ चाल्यो रह्या। •

४८

मोहटा माहें स्वामीजी रात्रि रा वखाण वांचता। आसाजी नींद घणी ले। जद स्वामीजी कह्यो नींद आवै है ? आसोजी बोल्यो नहीं महाराज। बार बार पूछ्यो नींद आवै है ? जद ते कहै नहीं महाराज। जद स्वामीजी म्हूंरो उपाइ करवा वासते उपाव बुद्धी सूं वली पूछ्यो आसाजी ! जीवो हो के ? नहीं महाराज। •

जद स्वामीजी बोल्या : माता वा एक हुतो हे मर गइ पिण मेरे मेरप्यां वो पणी सा कद मरे न कद पने दीक्षा आवे। *

४४

दान ऊपर भीखणजी स्वामी दृष्टन्त दीधो। पांच मणां सीरमें चणां रो खेत वायो। पांच सो मण चणा नीपना। पांचू भणा मतो कीधो—घर में धन वो मोकळो है यां चणांरो दान धर्म करो। जब एक जणे सोमण चणां भिखारियाने लुटाय दिया। दूजे सोमण रा मू गड़ा सेकाय दिया। तीजे सोमण चणांनी घूगरी रंधाय लुवाइ। चौथे सोमण चणा री रोट्यां कराय पालवी काटो करायने जीमाया। पांचमें सोमण चणां बोसरायने हाथ लगावारा त्याग किया। सावद्य दान में पुन्य धर्म करे त्यान पूछीजे घणो धर्म किणने थयो। *

४५

वलि दान ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो एक बूढो डोकरो भिक्षा मांगतो फिरे। किणही अनुकम्पा आणने सेर चणां दिया। जब डोकरे किणहीमें कह्यो एक जणे माने सेर चणां दिया है पिण दांत नहीं सो मोने पीस दे। जब दूजी बाई अनुकंपा आणने पीस दिया। आगे जायनें किणहीनें कह्यो : माने एक जणे धर्मात्मा सेर चणां दिया है दूजी बाई पीस दिया तिणसू तू मोनें रोटी कर दे। जब तीजी बाई अनुकंपा आण नें लूण पाणी घालने सेर चून री रोट्यां कर दीधी। ते रोटी खाय तृप्त थयो। थोड़ी वेर में तृषा घणी लागी जद आगे जायनें कहे है रे कोइ धर्मात्मा। मोनें पाणी पावे। जद चोथी बाई अनुकंपा आणनें काचो पाणी पायो। एक जणे चणा दिया दूजी पीस दिया, तीजी रोट्यांकर जिमाया चोथी पाणी पायो सो च्यारां में घणो धर्म किणनें थयो? *

४६ :

हीरजी रो बेटो रुघरोजी आछोर रो वासी सिरयारी में स्वामीजी कनें आयो। कहे भीखणजी कहे? जद स्वामीजी बोल्या भीखण म्हारो

करे। गूमरमलजी बोल्या चारित्र आतमा श्रावक में नहीं हुवे तो भीखणजी रा त्याग रा कोई काम ? इतले स्वामीजी पधार्या। उणांरे मांहो मांही लड़ती देखने एक जणो नड़ो आयने काने बातचीत कर सके नहीं तिणसूं दोई पाखे बाजोट मेल दिया। पछे न्याय बतायने दयान स्वामीजी समझाया। स्वामीजी कह्यो श्रावक में पांच चारित्र नहीं छे ऐसे सात आतमा इम कहणी अने त्यागनीं अपेक्षा देशचारित्र कहिये इम कहीने लड़ती मेटी। *

५२

गूमरमलजी सूं स्वामीजी चरचा करतां पानों बांचन लोक भेला। जद गूमरमलजी कह्यो आप म्हांने अक्षर बताओ। जद स्वामीजी अक्षर बताय दिया अने बोल्या गूमरमलजी! थांरे सम्यक्त्व रहणी कठिण है आमला कह्यो तिणसूं। लोक सुणने आश्चर्य पाया। पछे अंतकाल गूमरमलजी बोल्या—केसूरामजी आदि भायां नें—स्वामीजी ओर तो श्रद्धा आचार चोखा परूप्या पिण नदी उतरया धर्म था वात तो स्वामीजी पिण खोटी परूपी। भायां पमोई कह्या नदी उतरवारी आज्ञा सूत्रमें भगवान दीधी छे तिणसूं पाप नहीं। गूमरमलजी बोल्या : हीये बसे नहीं। जद लोक बोल्या भीखणजी स्वामी कह्यो थो थांरे सम्यक्त्व रहणी कठण है सो वचन आय मिल्यो।

५३

पालीमें रात्रि वखाण हूआं पछे स्वामीजी तो बाजोट ऊपर बेठा। अने दो भाया दुकान हेठे ऊभा। चरचा करतां २ दयानेई समझायने गुरु कराय दिया। इतरे पाछली रात्रि पडिक्कमणे री वेला थई। भाया न कह्या ऊभो पडिक्कमणा करो। *

५४

करेड़े स्वामीजी पधारया। लोक कहे—मगजी स्वामी रा हेत घणा। स्वामीजी पूछयो कोई हेत ? जद लोक बोल्या नगजी गोचरी पधारया। कुत्ती घणी भूंसे। पमोई कह्यो—ह कुत्ती। साधानें मत भूस मत भूस पिण कह्यो मानें नहीं। जद टांग पकड़नें परम घणण घणम फेंक दीधी। कुत्ती पाचरी दाब

गई। अठे पछ फेर भूंसी नहीं। जद स्वामी बोल्या : कुत्ती पड़ी अठे आवगा पूंछी के नहीं ? जद ते गृहस्थ बोल्या : थे पूंछो आपनें। निकमा भूंसणा काढो। इसा मूर्ख गृहस्थ।

५५

पाली में मयारामजी गोचरी में आहार मगायो तिणसूं आठ रोटी अधकी ल्यायो। स्वामीजी गिणी नें कह्यो आहार मंगायो उपरंत ल्याया। जब मयारामजी बोल्यो : अठे मेल दी अठे। जद स्वामीजी आठ रोटी काढ दीधी। मयारामजी साधां नें भामी दिण कोई छे नहीं। जब बाल्यो परठ देणारा भाव है। स्वामी बोल्या परठ में दूजे दिन दिगे टालस्यो। जब क्रोध करनें अकबक बोलता लाग गयो। कहे हूंतो इसा आचार्य रासूं नहीं। अकबक बोल्यो। कहै नव पदार्थ में पांच जीव च्यार अजीव री श्रद्धा ही झूठी। एक जीव आठ अजीव है। जद स्वामीजी किमादर विरपामी आहार जमेर में बोल्या था थारे संका है तो चरचा करांला। इम कहि उण वेला इण तावड़े में विहार कीधो। अणमूण में सुत्र व्यवहारसूं थी सका मेट दीधी। प्रायश्चित दीधो। पछे वेणीरामजी स्वामी नें सूंप दीधो। किंवरायक दिनों में छूट गयो।

५६

स्वामीजी दिशा जाता एक   साथे थयो। तेनें नीला ऊपर चालतो देखी स्वामीजी बोल्या : थारे चोखे मारग नीला ऊपर क्यूं हालो ? जद ते बोल्या म्हारो नाम लियो तो हूं गाम में जाय कहिसूं भीखणजी नीला ऊपर दिशा गया।

५७

रीयां पीपार बीचे एक   मिल्यो। स्वामीजी ने एकंत लेगयो। थोड़ी वेलासूं पाछा पधार्‍या। जद हेम पूछे : स्वामीनाथ ! आपने काई बात पूछी। स्वामीजी बोल्या आलोयणा कीधी। वलि हेम पूछ्यो : कांई आलोयणा कीधी ? जद स्वामीजी बोल्या : कहणो नहीं।

मोड़ो । जद स्वामीजी नें किणही कह्यो इनमें कांई आरम्भ है ? विशेष आरम्भ नहीं । जद स्वामीजी कह्यो कोइ जनमें जद पहिलो अंकूरो करे । जन्म पत्री वर्षफल वा पछे हुवे । ज्यूं ओ थानक अंकूरो जिम तो हुवो । पिण ओंदा आऊखावाळो देखेला इण ऊपर चूनो पड़तो दीसे है । पछे कितरायक वर्षां पछे थानक ऊपर चूनो पड़यो जद ठाकचन्द पोरवाला कह्यो—भीखणजी कहिता था इण थानक ऊपर चुनो पड़तो दीसे सो आवे पड़े । ❋

६९

आगला नें समझावा दृष्टांत करड़ा दे जद किणही स्वामीजी नें कह्यो आप दृष्टांत करड़ा देवो । जद स्वामीजी कह्यो रोग तो गम्भीर रो कह्यो अने कोई म्हारे सुभाओ । पिण सुभाव्या साता न हुवे । हळवाणी रा डाम दिया साता हुवे । ज्यूं रोग तो मिथ्यात्व रूप करड़ो । ते करड़ा दृष्टांत सूं हटे । ❋

७०

तिलोकचन्दजी नें चन्द्रभाणजी आचार्य पदवी रो लोभ देयनें फटायो । जद स्वामीजी कह्यो थांनें आचार्य पदवी आणी तो कठिन है नें सुरदास री पदवी तो आवे तो अटकाव नहीं । थांनें चन्द्रभाणजी ऊजाड़ में छोड़वा दीसे है । कितरायक वर्षां पछे तिलोकचन्दजी नें निजर कचो रा नाम लेयनें चन्द्रभाणजी ऊजाड़ में छाड़्यो । स्वामीजी रो वचन मिल्या । ❋

७१

एक साधु में बाहर अन्न एक में नहीं । पिण समझ्यां हुवे ते संका मिट्यां बिना दानू नहीं लावे । ज्यूं साध तथा असाध री संका मिट्यां बिना वंदणा करे नहीं । ❋

७२

कइ साधदान में पुण्य कहे । समजू हुवे ते किमत पाकी करे । असंजती ने दियां पुण्य कहो छो तो थें असंजती ने देवा के नहीं ? जद कहे म्हांनें तो दियां दोष लागे म्हांनें कल्पे नहीं । तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो ।

७५

कुशला तिलोक सम्प्रदाय में चालवा लागा। जब मन में आय भीखणजी रा श्रावकां ने फरी। परूपणा सांकड़ी करवा लागा—साधू ने तीजा पहर नी गोचरी करणी। गाम में रहिणो नहिं। पछे स्वामीजी मिल्या आगे देखे तो पहले पहर री गोचरी करे। जद स्वामीजी पूछ्यो थें तीजा पहर नी गोचरी कहो। अनें पहले पहर किम करो। तब वडकने बोल्या म्हें तो धोवण पाणी रे वास्ते फिरां छां। स्वामीजी बोल्या धोवण पाणी रो दोष नहीं तो दोय रोटी ल्यायां कांइ दोष ? जद वले बोल्या : साधू ने लाडू खाणो नहीं। साधू ने घी खाणो नहीं। साधू ने किसा चटोरा चटोरी अनभावणा है। स्वामीजी बोल्या : थे कहो छो साधू ने लाडू खाणा नहीं तो देवकी रा पुत्रां लाडू वहिर्‍या इम सूत्र में कह्या छै। जद ते बोल्या उवे तो मोटा पुरुष था। जद स्वामीजी बोल्या : मोटा पुरुष छै सो बली खावै इम है। जद कामकर बोल्या तुमे तेरापन्थी नाम दिया उठाय दीधी सो तुम ने जगत में मोड कर देख्या। स्वामीजी बोल्या : दो हजार आगे कह्या है। जो घटता है तो दोय हजार पूरा हुवा। अने दोय हजार पूरा है तो दोय वधता सही। पछे उठासूं नेणावे गया। स्वामीजी रा श्रावकां रे शंका घाल वारो उपाय करवा लागा। जद श्रावक पिण वणांरै ठागारो उपाड़ करवा लागा। दोयां में एक जणो बेले २ पारणो करे तिणने कह्यो थ तो तपस्या ठीक करो छो पिण दूजो ते तो करै नहीं। जद ते बोल्यो क्रोधपणो झूठो तप छै। अने ए क्रोधपी छै। जद श्रावकां तिणने कह्यो उवे तो थाने क्रोधपी कहै। तब ते बोल्यो ओ तपस्या करै पिण क्रोधी छै। जद दूजाने कह्यो थाने ऊ क्रोधी बतावे छै। जद दोनूं भेला होय झगड़वा लागा जद लोक बोल्या

जोगी तो जुगती मिली। कुशलो ने तिलोक।
उपावे ऊ उपवे। किण विध जासी मोक्ष॥

पछे फीटा पड़ने चाल्या गया।

७६

पाचीस टोळा मांहो मांही सबै सगान झूठा कहै सबै सगाने झूठा कहै। जद स्वामीजी बोल्या : कहिणी रे लेखे दोनूं साचा है। सबै ही झूठा है। अनै सबै ही झूठा है। इण लेखे दोनूं साच बोलै है। ●

७७

पाली में एक भायो कह्यो हेमजी स्वामी री पछेवड़ी मोटी दीसै। जद स्वामीजी लम्बपणे चौड़पणे माप दिखाइ। अनमान नीकळी। पछै स्वामीजी तिणनें निषेध्यो घणो। कह्यो च्यार आंगुल रा फरकारै वासतै म्हारो साध पणो म्हे गमावां इसा म्हानें भोळा जाण्या? इसरी थांनें प्रतीत नहीं तो रसता में काचो पाणी पीवै तो थानें कांइ खबर इत्यादि घणो निषेध्यो। जब ते हाथ जोड़ने बोल्यो म्हारे झूठी संका पड़ी। ●

७८

टोळा में थकां रुघनाथजी साथे स्वामीजी गोचरी उठ्या। एक भायो चरखो छोड़तो तिण रा हाथ सूं आहार बहिरयो। आगे रुघनाथजी बोल्या : भीखणजी! संका पड़ी? जद स्वामीजी बोल्या साक्षात् असूझतो ईम बहिरयो। इणमें फेर संका कांइ? जद रुघनाथजी बोल्या भीखणजी! दृष्टी ऊंडी राखणी। आगे थां सरिखो एक नवो चेलो गुरां साथे गोचरी में असूझतो लेतां गुरां नें बरज्या जद गुरां दे आहार न लीयो। पछै एकदा विहार करतां उजाड़ में तृषा घणी लागी। गुरां नें कहै मोनें तृषा घणी लागी गुरां कह्यो साधु रो मारग है सेंठाइ राखो। पिण चेलै तृषा मरतै काचो पाणी पीयो। मोटो प्रायश्चित्त आयो। मर्हि तरता थोड़ा मेंइ गुदरतो। जद स्वामीजी जाण्यो थानें इसो इ दरसै। ●

७९

केइ इम कहै हिवड़ां पांचमो आरो है। पूरो साधोपणो पलै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या अठमंहै तो साहूकार र भायै अनें दिवाल्या रै भाये सरिखा मंहै। घणी मोंगधी दिघारे दुरव देसी। उधार काम पावै नहीं।

आकरा दीपता लेह्या। पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तो मांग्या पड़े। साहूकार तो ब्याज सहित देवे अनें दिवाल्यो मूल ही में घोटो घाले। ज्यूं भगवति सूत्र भाख्या तिम प्रमाणे चाले ते साधू अने पांचमो आरा नों नाम लेइ सूत्र प्रमाणे न चाले ते असाध।

८०

वैद किण ही री आंख्यां री कारी कीधी। आंख ठीक हुवां वैद बधाइ मांगे। जद कहै पंचा ने पूछसूं। पंच कहसी सूझतो हुवो तो बधाइ देसूं। जद वैद बोल्या थो ने काइ दीसे है? जद फरमाएयो पंच कहसी सूझतो हुवो तो देसूं। जद वैद जाण्यों बधाई आय चूकी। ज्यूं कोइ रे श्रद्धा वैसाणी ने कहै हिवे तू गुरु कर। तब ते कहै दोय च्यार जणाने पूछसूं तथा आगला गुरु ने पूछसूं। ते कहसी तो गुरु कर सू। जब जाणनी इणरे श्रद्धा पकी बैठी नहीं।

८१

कोइ न कोइने साधी श्रद्धा कीधी। गुरू कीधा। पिण कुगुरां रो परचो छूटे नहीं। बार बार जावे। जद स्वामीजी पूछ्यो थारो परचा क्यूं राखे? जद ते बोल्यो म्हारे आगलो सनेह है। जद स्वामीजी बोल्या किण ही ने मेरो पकड़ ले गया। बेरो खोस लीधो। फाटका पिण दीधा। पछे घर रा मेहनत कर छुड़ा ल्याया। केतलायेक काले मेला मे भेला थया। आंख्यांने मेरो सू मिल्यो। लोकां पूछ्यो थारे काइ संबंध? जद बोल्यो म्हारे भाइजी रा हाथ रा फाटका लागा है सहलाणी है। आ भाइजी रा हाथ री सहलाणी है। जद लोकां जाण्यो ओ पूरो मूरख है। ज्यूं कुगुरां रे जोग सु थो खोटा मत मैं पड़ गयो हो। तिण ने उत्तम पुरुषां चोखो मारग पमायो। पछे ते वली कुगुरां सु हेत राखै तो बड़ो मूरख।

८२

सरियारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। तिहां कपूरजी पोतीया बंध हुंतो अने पोत्याबंध री बाया पिण हुंती। संवत्सरी बायां कपूरजी कह्यो मीखणजी! बायां सूं खामाखामी हुइ सो खमावानें जाऊं हूं। स्वामीजी

मानी तिण सूं। जद स्वामीजी बोल्या आज तो पाछा पाछो तिण आज पछे इसी विगती कीज्यो मति।

८७ :

केलवामें परषदा बेठां ठाकर मोहकम सींहजी पूछ्यो। आपनें गाम-गाम विगतीजां आवे। घणा लोग लुगाइ आपनें चावे। नरनारी आपनें देखनें राजी घणा हुवे। थाई मायाने आप वल्लभ घणा लागो। सो काइ कारण? आप में इसो काइ गुण? जद स्वामीजी बोल्या कोइ साहूकार परेश थो। तिण घरे कासीद भेज्यो। कागदी भेली। सेठाणी कासीद नें देखनें राजी घणी हुइ। उन्हा पाणी सूं उणरा पग धोवाया। आछी तरह भोजन करनें जीमावे। पछे बेठी समाचार पूछे। साहजी कीशा में कीसायक है? सुखसाता है? साहजी कठे पोहे है? कठे बेसे है? कासीद जिम जिम समाचार कहे तिम तिम सुणने घणी राजी हुवे। पिण कासीद नें देखने राजी हुवा रो कारण धणी रा समाचार कहे तिण सूं। तिम म्हें भगवान रा गुण बतावां छां। ससार मोक्ष रो मार्ग बतावां छां। तिण कारण लोग लुगाइ म्हांसूं राजी हुवे छै।

८८

पछे केलवा में ठाकरां पूछा कीधी। आप आगामिक तथा गया काल मां लेखा बतावो छो सो कुण देख्या है? जद स्वामीजी बोल्या : थांरा बाप दादा पड दादा आदि पीढ़ियां रा नाम तथा स्यारी पूराणी बातां जाणो हो सो किण देखी है? जद ठाकर बोल्या भाटां री पोथ्यां में बडेरां रा नाम चारवा मडी है तिण सूं जाणां हां। जद स्वामीजी बोल्या भाटां रे झूठ बोलण रा सूंस नहीं। त्यांरा लिख्या पिण थे साचा जाणो हो तो ज्ञानी पुरषां रा भाख्या शास्त्र झूठा किम हुवे? ओ तो साचा ही है। इम सुणनें ठाकर घणा राजी हुवा भला भाव दीधा।

८९

ढुंढार में एक गाम में स्वामीजी पधार्या, जद ठाकर अवेजी रा टका पगां में मेल्या। जद स्वामीजी बोल्या म्हे तो टका पइसा कोइ रखां नहीं।

जब ठाकर बोल्या आप मोहोर लायक हो पिण म्हारी पोहच इतरीज है। आपके पधारस्यो जद रुपयो निजर करसूं। जद स्वामीजी बोल्या म्हें तो रुपयो मोहर आदि कोइ न राखां। इम सुणनें ठाकर घणो राजी हुवो। गुणग्राम करवा लागो—आपरी करणी मोटी है। ❀

९०

पुर में स्वामीजी कने गुलाब ऋषि दोय जणा सूं   रा श्रावक घणा साथे लेइने चरचा करवा आयो।   रा श्रावक ऊंचा अबला बोले। जद स्वामीजी बोल्या होली में राब बणाय साथे गहरीया तमासा रूप हुवे। क्यूं थें थाने तो राब बणाया नें थें गहरीया क्यूं बणीया दीसो हो। पिण ज्ञान री बात तो कोइ दीसे नहीं। डिवै स्वामीजी गुलाब ऋषि नें पूछ्यो शीतलजी रा टोला रा साधां नें साध सरधो के असाध ? जद ते बोल्यो असाध सरधूं छूं। शीतलजी रा साध संथारो करे त्यांने कांइ सरधो ? जद बोल्यो त्यां रा अकाम मरण। रघुनाथजी जयमलजी आदि टोला वाला में कांइ सरधो ? जद बोल्यो असाध। त्यांरा टोला में संथारो करै जद ? बोल्यो अकाम मरण। ❀

पछे   रा श्रावक बोल्या भीखणजी नें कांइ सरधो। तब स्वामीजी पहिलां ही बोल्या म्हें तो यांनें आगे देख्याइ नहीं अनें म्हारे थांरै मद्रा आचार भिन्न जासी तो आहार पाणी भेलो कर लेवां तो अटकाव नहीं। तिवारे त्यांरा श्रावक झिखायक विखर गया। डिवै गुलाब ऋषि नें स्वामीजी पूछ्यो समदृष्टि नें पाप लागे के नहीं लागे ? जब ते बोल्यो न लागे। स्वामीजी पूछ्यो समदृष्टि स्त्री सेवे तो ? जद बोल्यो— पाप तो न लागे पिण भेष में साजे नहीं। स्वामीजी बोल्या मांचे पाविचो वांधम सेवे तो ? इत्यादिक अनेक प्रश्न पूछ्या जद पाछा जाब देवा असमर्थ थयो घणों कष्ट हुवो। जद कोप कर बोल्या म्हांसूं चरचा करो हो पिण गोगूंदा रे भाया सूं चरचा करो तो खबर पड़े। गोगूंदा ना भायां डेंगिया नगरी ना श्रावक छे। गोगूंदा ना श्रावक अकबरी मोहर छै। जद स्वामीजी बोल्या थांसे थारे सीसा सेत्र

हुवे सो बतावो। गुलाब ऋषि बत्तीस सूत्र बांचे किया फिरतो घिण सरचा खोटी। बळी पंच महाव्रत नां द्रव्य क्षेत्र काल भाव पूछ्या। जद बोल्यो पानां में मळ्या है। स्वामीजी बोल्या : पानो फाट जासी तो ? साक्षातपणे बे पासो हो के पानो पासे ? इत्यादिक घणो कष्ट कीधो। पछे स्वामीजी गोगुंदे पधार्या। गोगूंदे रै भायां सूं चरचा करनें समझाया। सुणनें गुलाब ऋषि आयो। स्वामीजी सूं चरचा करवा लागो। जद भाया बोल्या महाराज थांसूं चरचा म्हें करस्यां। म्हारा आगला गुरु है। पछे भायां गुलाब ऋषि सूं चरचा करमें घणों कष्ट कीधो। जद क्रोध करनें बोल्यो गोगूंदा नां भाया ठीकरी रा रुपिया छे। घणों फीटो पड़ने चाल्यो गयो। पछे गोगूंदा रा भाया स्वामीजीनें भठारै सो बाइस पानां री भगवती बेराइ। बनें पन्नवणा। सूत्र बहरायो।

९१

पाली में संतिविजय संवेगी रुघनाथजी सूं चरचा कीधी। जिण री साधा नें मिश्री रे भेळो सूत्र वहिरायो। संतिविजय तो कई काळ जाणो पाछे जाय पड्या तिण कारण बनें रुघनाथजी कई घणीनें मूळावणो जबवा परठ देणो। भावक नें साइपुर थाप्यो। ते पिण बोल्या काळ जाणो। पछे रुघनाथजी आचारंग काढ्या। जद संतिविजय रुघनाथजी कन सूं पानो खोसनें फाड़ न्हाख्यो। घणा लोग लुगायां सुणतां कष्ट कीधो। जद संवेगियां री भायां गावा लागी—

ज्ञानी गुरु जीता रे जीता सूत्र रे प्रताप ज्ञानी गुरु जीता रे।

जद रुघनाथजी घणा उदास हुवा। पछे भावका नें कह्यो इणन जीते जिसा तो भीखण है। म्हे बाइसटोळा साधा स्थानक मूठा पाड़ है ता भा तो साक्षात सांचा रो रुपइया है सो इणन ता हटावणो सारो है। जद म्हारा भावक स्वामीजी रा भावका न कहिवा लागा थांरा गुरु मेवाड़ में है सो विणती भेजनें बोलावो। पछे स्वामीजी पिण मेवाड़ सूं मारवाड़ पधार्या। पाली में म्हांरा भावक स्वामीजी न कहिवा लागा पूजजी कह्यो है— संतिविजय में चरचा करनें हटावो। संतिविजय ह भा घणो बोले। बूंदीमारे

मूँडे में आंगुली घाती पिण दांत देख्यो नथी । एक भीखन काढियो रह्यो छै । इसो ऊघो बोलै । पछै स्वामीजी विचरता विचरता कांकरोली पधार्या । शांतिविजय पिण पीपार नां घणां श्रावकां सूं देवल नीं प्रतिष्ठा हुवै त्यां आयो ।

शांतिविजय नें घणां लोक कहै भीखणजी सूं चरचा करणी । एकदा कुंभारा रे बास में मारग वहता साम्हा मिल्या । स्वामीजी नें पूछ्यो थांहरो नाम कांई ? स्वामीजी बोल्या म्हारो नाम भीखण । शांतिविजय बोल्यो थे तेरापंथी भीखणजी छो तुम्हे ? जद स्वामी बोल्या हां छां म्हे । जद शांतिविजय बोल्यो तुमारे सूं निक्षेपा नीं चरचा करणी छै । स्वामीजी बोल्या निक्षेपा कित्ता ? ते बोल्यो निक्षेप । च्यार—नाम १, स्थापना २, द्रव्य ३ भाव ४ । स्वामीजी पूछ्यो यां च्यारां में वंदना भक्ति किसानी करणी ? शांतिविजय बोल्यो च्यारूं ही निक्षेपा नीं वंदना भक्ति करणी । स्वामीजी बोल्या : एक भाव निक्षेपा तो म्हे पिण वांदा पूजा छां । बाकी तीन निक्षेपा नीं चरचा रही । तिणमें प्रथम नाम निक्षेपा । किणही कुम्भार नो नाम भगवान दियो । तिणनें थे वांदो के नहीं ? जद ते बोल्यो तिणनें सूं वांदीयै ? प्रभू नां गुण नथी । स्वामीजी बोल्या गुण बाहिर तो म्हे इ वांदां छां । इम गुण न्याय देवा असमर्थ थयो । हिवै स्थापना री चरचा स्वामीजी पूछी । रत्नारी प्रतिमा हुवै तो वांदो के नहीं ? ते बोल्यो वांदा सोना री चांदी रूपा री तथा सर्व धात री हुवै तो वांदा । पाषाण री हुवै तो वांदो के नहीं ? तब ते बोल्या वांदा । वली स्वामीजी पूछ्यो गोबर नीं हुवै तो ? शांतिविजय क्रोध करनें बोल्यो तुम सूं निक्षेपा नीं चरचा करवी नहीं । तूं तो प्रभू नीं आसातना करै । अम्हनें गमै नहीं । इम कही चालतो रह्यो । स्वामीजी पिण ठिकाणे आया । पछै शांतिविजय नें लोकां कह्यो भीखणजी सूं चरचा करो । इम बार-बार कहियां थी शांति विजय घणां लोकां सहित आसरै दश हाटरै आय बैठो । हिवै स्वामीजी नें लोकां आय कह्यो शांतिविजयजी चरचा करवा आया छै । सो आप पिण पधारो । जद स्वामीजी बोल्या म्हारा भाव तो अठै इज छै । शांति विजयजी इतरी दूर आया छै चरचा करवा रो मन हुसी इतरी र आर

माव छै। पछै सरूपजी मूंहतो सांति विजय ने साय कह्यो। × × × ×
भीखणजी कहै है सो चरचा करो। × × पिण सांती विजय तो
फेर स्वामीजी सूं चरचा करी नहीं। स्वामीजी मास समय रही विहार
कीनो। विहार करतां सांतिविजय रे उपासरा कने हुआ रह्या तो पिण
बोल्यो नहीं। फेर एकदा पाली में सांति विजय सूं चरचा हुई। मिश्री रे
घरथे छूण आयां सांतिविजय कहै पात्रे आय पड़यो तिण सूं साय जाणों।
जद स्वामीजी बोल्या : गुरु रे बदले किण ही श्रमण बहिरायो, मिश्री रे
बदले सोमल्लार बहिरायो है पिण थारे लेखे आय आणो पात्रे आय
पड़यो तिण कारण। अब घणों कष्ट हुवो शुद्ध साम देवा असमर्थ। ॐ

१२

पींपार नों वासी चोथजी बोहरो पाली में दुकान मांडी। चोमासो
उतर्यां स्वामीजी तिण रो कपड़ो लेवा गया। चोय वासती बहिराय
पूछा कीधी—हूं थांने असाध सरधूं। थांने वामनी दीधी मोनें काइ हुवो ?
जद स्वामीजी बोल्या किण ही सांधी तो मिश्री नें जाण्यो जहर तो ऊ
मरे के न मरे ? जद ऊ बोल्यो न मरै। इणरो गुण मारवारो नहीं। तिम
म्हें साध। म्हांने तुमें असाध जाण में बहिरायो तो थारे जाणपणां री
खामी, पिण साधां नें बहिरायां धर्म छै। ॐ

१३

स्वामीजी अमरसीगजी रे स्थानक गया। मांहि सोजड़ी नो रूख देखी
स्वामीजी बोल्या : रात्री में लघु परठता हुस्यो जद इणरी दया किम रहै ?
तब त्यांरो साधु स्वामीजी री कूट पाड़ने बोल्यो। जद स्वामीजी बोल्या :
आ कूट काड़वा री बावनी थारे ममसूं इसीक्या के गुरां दीधी ? जद अमर
सीगजी वेदा में फिरयो। स्वामीजी नें बोल्या ओ तो मूरख छै ये मनमें
काइ आयज्यो मती। ॐ

९४

गुमानजी रो चेलो रतनजी बोल्यो हूं भीखणजी सूं चरचा करूं। जद गुमानजी बोल्या म्हे पिण भीखणजी सूं चरचा करता संका छा। तो थांरी कांइ आसंग? जद रतनजी पूछ्यो—क्यूं संको? जद गुमानजी बोल्या भीखणजी सूं चरचा करतां तिणरी न्याय पकड़ उणरी जोड़कर ग्रहस्थ ने सीखायने गाम २ में खराबी कर देवे। तिण कारण भीखणजी सूं चरचा करतां सका।

९५

पाली में स्वामीजी चोमासो कीधो जद बावेचा हाटरा धणी नें कह्यो थोनै भाड़ो थारो हाट म्हानें दे। जद हाट रो धणी बोल्यो अबार तो स्वामीजी उतर्या है सो आखी घड़ी रुपियां सूं जड़ देवो तो ही न द्यूं। स्वामीजी विहार किया पछे भलाइ दीज्यो। पछे बावेचा जेठमलजी हाकम कनैं जाय कूंपीयां न्हाखी। कह्यो—के तो भीखणजी रहसी के म्हे रहस्यां। जद हाकम बोल्यो इसो अन्याय तो म्हे नहीं करां। बसती में वेस्या कसाई पिण रहै त्यां नें पिण न काढां। तो भीखणजी नें किम काढां हाकम दृष्टान्त दियो—विजयसिंहजी रो राज है मोती बाळदियो। तिणरे बाळद पळद तिण सूं लूणी बाळदियो बाजतो। ते लूण लेवा मारवाड़ आवतो। जद जाटां रा खेत भेळै। जद जाटां विजयसिंहजी कनै पुकार करी। राजाजी बाळदिये में कह्यो—जाटां रा खेत भेळो मती। जद मोती बोल्यो: म्हे तो आवसूं जद यूं ही होसी। राजाजी कह्यो यूं ही होवे तो म्हारे देश में आवो मती। म्हारे लूण है तो दूजा बाळदिया घणाइ आवसी। अन्याय तो करवा देवां नहीं। तिम हिज जेठमलजी कह्यो थे—आपां तो च्यार व्यापारी आण बसासां पिण साधां नें काढां इसो अन्याय म्हे करां नहीं। जद बावेचा कूंपियां लेइ आप आपरे घर गया। ओर कांइ उपाय नहीं मिल्यो। जद ब्राह्मणां नें कह्यो: थांनें दान देवां तिणमें भीखणजी पाप कहैछै। सो म्हे तो अब दान देवां नहीं। जद ब्राह्मणां स्वामीजीनें आय कह्यो म्हांने दियां आप पाप कहो सो बावेचा म्हांने देवै

नहीं। जद स्वामीजी कह्यो थांनें बाबेचा पांच रुपइया देवै तो पिण म्हारै मां कहिवारा त्याग है। जद ब्राह्मण बाबेचा नें जाय कह्यो बापूजी पांच रुपइया रो हुक्म कियो है। इम सुण बाबेचा घणा फीटा पड्या। तो पिण स्वामीजी रात्रि में बखाण बांचै जठे बाबेचा ढोलक बजावै। गावै। बखाण में विघ्न पाड़ै। जद भायां कह्यो महाराज! दूजी जायगां उतरो स्वामीजी बोल्या खेतसीजी मन दिढ़ है सो देखां परीषह समता किसायक सेंठा है। किसायक दिनां वेदो कियो पछै बाबेचा हार गया। पजूषणां में ईरष्या घाल्यो। स्वामीजी रा मूंढा आगे घणी वेलां ऊभा रही गावै बजावै धाम करै। जद केई श्रावक बाबेचा सूं वेदो करवा लागा जद स्वामीजी कह्यो वेदो मत करो। यांनें रोका मति कारण ए प्रतिमा नें भगवान न मानै है सो के तो भगवान पनें करै अनें के भगवान रा साधां पनें करै। जद बाबेचा बोल्या पछो सभी सभी विचारै। इम कही बाजता रह्या। *

९६

नाडोलाइ रो सोमाचन्द सेवग तिण नें बाबेचा कह्यो भीखणजी खेरवै है सो त्यांरा अवर्णवाद बिखर जोड़। सतरे प्रकार नी पूजा रचे है तिण मांहि सूं थोनें दश बीस रुपया देस्यां। जद सोमाचन्द बोल्यो : भीखणजी सूं बात करनें पछै बिखर जोड़सूं। इम कही खेरवै आयो। स्वामीजी नें वंदना कीधी। स्वामीजी बोल्या थारो नाम सोमाचन्द? जद ते बोल्यो हां महाराज। वली स्वामीजी पूछ्यो तूं रोड़ीदास सेवग रो बेटो? ते बोल्यो हां महाराज। पछै सोमाचन्द बोल्यो आप भगवान नें उथापा हो ए बात आछी न कीधी। जद स्वामी बोल्या म्हे तो भगवान रा वचनां सूं घर छोड़ साधपणो लियो सो म्हे भगवान नें क्यांनें उथापां। जद सोमाचन्द बोल्यो आप देहरो उथापो। जद स्वामीजी बोल्या देवल रो तो हजारां मण पत्थर हुवै। म्हे तो सेर दोय सेर क्यांनें उथापां। जद ते बोल्यो आप प्रतिमा उथापो प्रतिमा नें पत्थर कहो। जद स्वामीजी बोल्या म्हे तो प्रतिमा नें क्यांनें उथापां। म्हारै मूळ पाखडा रा सूंस है। सो म्हे तो सोना री प्रतिमा नें सोना री रूपा री नें रूपा री सप्तधातु री प्रतिमा नें सप्तधातु री कहां। पाषाण री प्रतिमा न

ल्यारो। पिण धणा पांणीवाळी २१४ कोस री अवळाई सुइ टळे तो टाळो। अने थें फूल चढ़ायो सो एक तो सूका फूल पड़्या है। एक २।३ दिनारा कुमळाया फूल है। एक काची कळियां है थ किसा चढ़ायो? जद उवे बोल्या म्हे तो काची कळियां नखां सूं चूंटी चूंटी चढ़ाया। जद स्वामीजी बोल्या थांरा परिणाम तो जीव मारवा रा अने म्हारा परिणाम दया पाळवा रा। इण न्याय नदी ऊपरे फूलां रो दृष्टान्त न मिळे। ❀

९८

किणही पूछ्यो भीषणजी थ बार टोळा बाळा न असाध सरधा तो थांन रुघनाथजी रा साध, ए जेमलजी रा साध यूं क्यूं कहो। जद स्वामीजी बोल्या कोइरे किरियावर थयो गाम में नहता फेरे। जद कोई अमकड़ीया रे नेंहतो खेमांसाह रे घर रो। अमकड़िया रे नेंहतो धर्मासाह रा घर रा। अने त्यां दिवाळो काढ्यां हुवे ताही नाइ बाजे। ज्यूं साधूपणो न पाळे अने साधू रो नाम धरावे सो ते द्रव्य निक्षेपा रे लेखे साधइ बाजे। ❀

९९

किणही पूछ्या एतळा टोळा है ज्यां में साध कुण अने असाध कुण? जद स्वामीजी बोल्या कोइन आंख्यां म सूझे तिण पूछ्यो सहर में मागा किना अमें तकियाकिता? जद बद बोल्यो आंख्यां में औषध घाल मे सूझता ता हूं कर देऊं अने मागा तकिया तूं देखसे। ज्यूं आखरणा तो म्हे बताय द्यां ने साध असाध तू ओळखसे। पहिला नामलेइ असाध कह्यां आगवा कळिया करे। तिणसू ज्ञान तो म्हे बताय द्यां पछे निरनय तू करसे। ❀

१००

वळि किणही पूछ्या थांमें साध कुण अने असाध कुण? जद स्वामीजी बोल्या किणही पूछ्या सहर में साहुकार कुण दिवाळ्या कुण? हेवने पाछा देवे ते साहुकार। लेवने पाछा न देवे मांग्यां भगड़ा करे ते दिवाळ्यो। ज्यू पांच महाव्रत लेवने चोखा पाळे ते साध अनें न पाळे ते असाध। ❀

१०७

भीखणजी स्वामी नै घर में छतां वैराग आयो। जद वैरां रो ओसावण दीवारा छोन्यिा में घालनें ठामा री पहेल भ भेल्यो। पणी वेळा सूं पीवतां कष्ट पणों हुवो। विचारे विचारयो साधपणो दोहरो पणों। वले विचारयो इसो दोहरो जद मुक्ति मिलै। नवो साधपणो लियां पछै इकावना र आसरै हेमजी स्वामी नें स्वामीजी कह्यो इसो आण नै साधपणो लियो। पिण इसो पाणी पीवारो कदेइ काम पड्यो दीसे नहीं। जद हेमजी स्वामी बोल्या इसा वैराग सूं आप घर छोड्यो जद उणां में किसें खेले रहो। ❀

१०८

टोळावाळा मांही थी नीकळिया जद रुघनाथजी कह्यो। भीखणजी अबारू पांचमो आरा है थाय घड़ी चोखो साधपणो पाळै तो केवळ ज्ञान पामैं। जद स्वामीजी बोल्या यूं केवळ ज्ञान उपजै तो दोय घड़ी तो नाक भींच ने इ बेठा रहा। वलि भगवान स्वामीजी आदि पंचमां आरा में हुंता त्यां चोखो साधपणो न पाल्यो कांइ? ❀

१०९

रुघनाथजी रा टोळा मांहीं निकल्या जद रुघनाथजी आडयां में आघू कावणा लागा। जद स्वामीजी विचारयो—घर छोड़तां थां विचे तो म्हारी मा घणी रोइ हुंती। इम विचार नें छोड दीधा। ❀

११० :

गुणसठे रा साल पवरे साधां सूं तथा पवदे आर्यां सूं केलवा में भीखणजी स्वामी विराज्या हुंता तिहां तीन साध बोल्या भीखणजी में तीन जणां आनेइ पूरा आहार नहीं मिल्यो, तो थांनें इतरा ठाणा ने आहार किण रीते मिलै। जद स्वामीजी बोल्या द्वारका में इतरा साधां में आहार पाणी मिल्या थो जने ढंढण रे अंतराय सो पकवानें ई कठिण।

१११

घर में हुतां रजपूत ने सायै चोमासो रैइ किणही गाम वालां रजपूत बोल्यो तमाखू बिना आयो हाली जै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या ठाकरां आगे चालो तिन थोड़ो है। रजपूत बोल्यो तमाखू बिना चले तो हाली चले नहीं। जद स्वामीजी पाछे रही ने आरणिये छाणे ने नान्हा पाटी पुड़ी बांधने कह्यो : ठाकरां तमाखू चोखी तो है नहीं इसड़ी है। जद तिण रजपूत चिबठी भरनें सू घी अनै बोल्यो ठीक इस है। जद स्वामीजी पुड़ी उगने सूपी। इसी चतुराइ करनें कुशले ठिकाणे आया। ❀

११२

सिरयारी में स्वामीजी चोमासो कीधो। विजैसिंहजी नाथदुवारे आवतां घणां रा जोग सू सिरयारी में रह्या। मुसद्दी स्वामीजी रा दरशण करवा आया। प्रश्न पूछवा लागा – पहली कूकड़ी हुइ के अडो। पहली घण हुवो के अहिरण। पहिलां बाप हुवो के बेटो। इत्यादिक अनेक प्रश्नां रा जबाब स्वामीजी दिया युक्ति सहित। जद मुसद्दी राजी होय बोल्या : यह प्रश्न घणी जगांइ पूछया पिण इसा जाब किणही दीधा नहीं। आपारी बुद्धी तो इसी है किणही राजा रा मुसद्दी थया हुंता तो घणां देशां रा राज वश करे करता इसी आपरी बुद्धी है। जद स्वामीजी बोल्या : पछे ऊ जाय कठे। मुसद्दी बोल्या : जाय तो नरक में। जद स्वामीजी बोल्या

बुद्धी तिणारी जाणीये। जे सेवे जिन धर्म।
और बुद्धी किण काम री। सो पड़ियां बांधे कर्म॥

जिण बुद्धी करावां नरक में पड़े ते बुद्धी किण कामरी जद मुसद्दी घणां राजी हुवा। ❀

११३

जोधपुर में स्वामीजी पधारया। जद भेला होय चरचा करवा आया। ऊभी मंडली चरचा करवा लागा। जीव बचायां कांइ हुवे? विजयसिंहजी पहरा फरायां तेहनों कांइ थयो? इत्यादिक राज में टाटी लगावा लागा जद स्वामीजी बोल्या सूत्र में किसनजी री नरक गति कही। इत्यादिक सब चरचा सूत्र सोधन राजाजी कनै करो जद कायर गया। ❀

११४

रुघनाथजी स्वामीजीनें पूछ्यो विजयसिंह जी पट्टो फेरायो ताळाब कूवां पर गळना मलाया। दीवां पर ढाकणां दिराया मुद्रा मां आपरी चाकरी करणी, इत्यादिक कार्यों में राजाजी न काइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या राजाजी समदृष्टि है के मिथ्यात्वी? इम पूछ्यां जाब देवा असमर्थ थया। *

११५

किणही कह्यो भीखण जी थे अने एक होय जावो। जद स्वामीजी बोल्या : महाजन कुंभार, जाट, गूजर, सर्व एक थावो के नहीं? जद ऊ बोल्यो : म्हे तो एक न थावां। थांरी जाति इम और है। जद स्वामीजी बोल्या ए पिण मूसगा मिथ्यात्वी है। गाजीखां मुल्लाखां रा साथी है। त्यां पूछ्यो गाजीखां मुल्लाखां कुण थया। जद स्वामीजी कह्यो एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी परदेश गया। त्यां ब्राह्मण माल मोकळो कमायो। केतले एक काळे ब्राह्मण आऊखो पूरो कीधो। जद ब्राह्मणी पठाण रा घर में पेठी। दोय पुत्र थया। एकण रो नाम गाजीखां दूजारो नाम मुल्लाखां दियो। केतले एक काळे पठाण पिण काळ कर गयो। जद ब्राह्मणी सर्व धन पुत्र लेई देश आई। माल देखनें घणां न्यातिला भेळा हुआ। कोइ भूवाजी कहै काइ काकी कहै। हिवै ब्राह्मणी कहै डावडा नें जनेऊ घो। जिमणकर घणां ब्राह्मणां नें जिमाया जनेऊ देवा पुत्रां ने हेलो पाड्यो – आवरे बेटा गाजीखां आवरे बेटा मुल्लाखां। नाम सुण ब्राह्मण कोप कर बोल्या : हे पापणी। ए काइ नाम? ब्राह्मण रा नाम तो श्रीकृष्ण रामकृष्ण हरिकृष्ण हरिदास, के रामदास श्रीधर इत्यादिक हुवै।। अने एहतो मुसलमान रा नाम है। कटारी काढ नें बोल्या : साच बोल ए किण रा पेट रा है। नहीं तो दोनें मारस्यां। अने म्हेंइ मरस्यां। जद आ बोली मारो मती। सर्व बात मांड नें कही। एतो पठाण रे पेट रा है। जद ब्राह्मण बोल्या हे पापणी! म्हामें भ्रष्ट किया। अबै गंगाजी जाय स्नान पाणी रा लेपकरी शुद्ध थास्यां। जद आ बोली : थांरा थां दोनूं डावडा भेळ के जावो अनें शुद्ध करो। सो फेर मल भोजन करने जिमा सू। जद ब्राह्मण

चूरी न मिली। ज बोल्या चूरी न मिली तो किण सूं पंचारी ? जद बा बोली : शाता सूं बनाली म्हानें है। जद ए बोल्या : हे पापणी म्हानें भिष्ट किया। बाळी फरकवा लगा। जद बा बोली : रे बीरां बाळी मती मोगल्यो समकड़िये सूसनी मांगने आणी है। व्यापारी बोल्या तु कावरी कुण है। जद बा बोली रे बीरा हूं बणी बणाइ ब्राह्मणी हूं। साव री तो गुरणी हू। जने मेरा मोनें ब्राह्मणी बणाइ छे। मोडने सारी बात कही। भीखणजी स्वामी बोल्या : तिम ए बोषण कन्हो पाणी पीवे पिण समकित चरित्र रहित तिण सूं बणी बणाइ ब्राह्मणी रा सांघी है।

११७

अमरसिंहजी रे जीवणजी हेमजी स्वामी नें कह्यो हेमजी सोजत में भीखणजी चोमासो कीधो। तिहां नजीक अमरसिंहजी रा साधां पिण चोमासो कियो हुंतो। सो आगले चोमासे तो भिखकाळां में बहावतानें इसो दृष्टांत दियो—अमरसिंहजी रा बड़ेरां रुघनाथजी जैमलजी रा बडेरां नें गुजरात मारवाड़ में आव्या। जद मांहोंमांहि गाढो हेत थो। दोय तीन पीढी ताइ तो हेत रह्यो। पछै रुघनाथजी जयमलजी कोढ़ोजी ए भूदरजी रा चेला सो अमरसिंहजी रा क्षेत्र जोधपुर आदि करहा लिया। जद हेत रह्यो नहीं। ज्यूं एक साहूकार जिहाज में बैस समुद्र पार व्यापार करवा गयो। पाछो आवतां रूपद री मसूल में एक गर्भवती कूंवरी आय सो ल्याई। साहूकार देखिनें बोलयो इणमें समुद्र में नहीं न्हाखणी। आवता करें। पछे साहूकार पोता रे घरे आयो। थोड़ा दिनां में कूंवरी री परिवार वध्यो। जद कूंवरी बोली ओ साहुकार उपगारी है। सो इणरो आपां नें बिगाड़ करणो नहीं। साहूकार पिण कूंवरा कूंवरयां ने दुख न दे। एक दोय पीढ्यां तांइ तो कूंवरा कूंवरयां बिगाड़ करयो नहीं। पछै बिगाड़ करवा लागा। साहूकार नां कपड़ा करंड़िया कुतरवा लागा। ज्यूं दो तीन पिढ़िया तांइ तो अमरसिंहजी रा साधां सूं हेत राख्यो। पछे अमरसिंहजी रा क्षेत्र दाबवा लागा। श्रावक श्राविका फारवा लागा। बेसते चोमासे तो ए दृष्टांत दीधो। तिणसूं अमरसिंहजी वाळा तो राजी रह्या। भिखकाळा ने समझावा लागा। पछे उतरते चोमासे फतैचन्दजी गोटावत बोल्यो : भीखणजी भिखकाळा नें

इम निपजो पिण ए पुन्यवालां नेड़ा बैठा त्यां नै क्यूं नहीं निपजै। जद स्वामीजी बोल्या— एक जाट खेती वाई। जवार घणी नीपनी। पाकी। च्यार चोर आय नै सिटां री गांठा बांधी। जाट देख उत्पात सूं विचार आय नै बोल्यो— थांरी जाति कांइ है? एक जणो बोल्यो हूं तो रजपूत। दूजो बोल्यो हूं साहूकार। तीजो बोल्यो हूं ब्राह्मण। चोथो बोल्यो हूं जाट छूं। जद जाट बोल्यो राजपूत नें— आप तो धणी हो सो हासल रो लेवा हो। महाजन बोहरो है सो ठीक। ब्राह्मण पुन्य रो लेवै सो ही ठीक। पिण ओ जाट किम लेवै लेवै? इण नें म्हारी मा कनै ओलमो दिरावसूं। इम कहि गांठ पकड़ जवार में ले जाय थांवलिया रै उणरी पाग सूं बांध दियो। फेर पाछो आय नै बोल्यो— म्हारी मा कह्यो है रजपूत तो लेवै लेवै धणी है। वाण्यो ले पिण ठीक बोहरो है। पिण ब्राह्मण किसे लेखे लेवै? ब्राह्मण तो दियो लै। बिना दियो किम लै? आतो म्हारी मा कनै। इम कही इणनें पिण पकड़ ले जाय नें थांवलिया रै बांध दीयो। फेर आय नें बोल्यो रजपूत तो लेवै लेवै पिण तूं वाण्यो किण लेखै लै। तूं किसै दिन मोनें धान दियो हो। अन कद म्हारा बोहरो थयो। इम कहि ले जाय नें तीजै थांवलिया रै इण नै बांध दिया। फेर पाछो आय नै बोल्यो ठाकरां धणी हुवै सो आवता करै के चालता करै। इम कहि इणनै ई पकड़ नै आयनें बांध दियो। रावल जाय नें पकड़ाय दिया। ●

बुद्धि सूं च्यारां ने पकड़णी मांड राख्यो। अनै एक साथै च्यारां सूं झगड़णो तो कद पूगतो। ज्यूं मिथ्यात्वी मांहि सूं तो फेर समझाया अनै पुन्यवालां री बारी। पछै पुन्य री सरधा वाला में निपजवा लागा। इसा भीखणजी स्वामी कलावान। ●

११८

किणही कह्यो आम अर्सणजी ने दान देवार त्याग करावो। जद स्वामीजी बोल्या— थें म्हारा पचम सरधिया प्रतीतिया रंगिया जिण सूं त्याग करो हो का म्हांनै भांड़वा नै त्याग करो हो। इम कहिनै कष्ट कीधो। ●

समाम मांड्यां क्रिम कीजे। बीरां रा भायड़ो पूठ थाप सुद्ध कियां जीवे। ज्यू भेषधारयां सूं चरचा करणी सो पक्का साव मीलने करणी कथा माय सू न करणी। ❀

१२४

किणही पूछ्यो—भीखणजी काइ श्रावक भाठा सू कीड़यां मारता तिण रा भाठा खोसनें परहा कियो तिण नें काइ थयो। जद स्वामीजी बोल्या : उणरा हाथ में काइ आयो। जद ऊ बोल्या उण रै हाथ में भाठो आयो। जद स्वामीजी बोल्या अर्थ थइ विचार लवा। ❀

१२५

पुर भीलवाड़े बिच स्वामीजी पधारतां कुंभार नी तरफ रा एक भायो मिल्यो। तिण पूछ्यो आपरा नाम काइ? जद स्वामीजी बोल्या म्हारा नाम भीखण। जद ऊ बोल्या भीखणजी री महिमा तो घणी सुणी है सो आप एकला र रह्या हूठे चरा हां। म तो आपरा साथे आडम्बर घणा सुणी। घोड़ा हाथी रथ पालखी प्रमुख घणा कारखानों सुणी। जद स्वामीजी बोल्या इसा आडम्बर न राखां जद हिज महिमा है साधुरा मारग री हिज है। इम सुणने राजी हुवो। ❀

१२६

काचा पाणी पायां पुण्य सरधे त पुण्य री मरयादा बांधी भीखणजी मिश्र री श्रद्धा घणी खोटी है। जद स्वामीजी बोल्या किणरी १ फूटी किणरी फूटी। ज्यू यां री तो एक फूटी है अन थांरी दोनूं फूटी है। ❀

१२७

रूपनाथजी बाबा बोल्या भीखणजी देख्या जोधपुर में मसवाली बालां र थानक आधाकर्मी आरम्भ घणा हुवा। जद स्वामीजी बोल्या यां रे तो आरंभ थयो अनें बीजां रे आरम हुता दीसे है। चरचा रा पन्ना हुता दिसे है। ❀

१२८

किणहि पूछ्यो भीषणजी कोइ बकरा मारतो में बचायो तिण नें कांइ थयो। जद स्वामीजी बोल्या ज्ञान सूं समझाय नें हिंसा छोड़ायां तो धर्म छै। स्वामीजी हाथ आंगुली ऊंची कर नें कह्यो—ओ तो रजपूत अनें ओ बकरो यां दोयां में डूबे कुण। मरण वालो डूबे के मारण वालो डूबे। नरक निगोद में गोता कुण खासी। जद ऊ बोल्यो मरण वालो डूबे। जद स्वामीजी बोल्या साधू डूबता नें तारे रजपुत मे समझावे बकरा नें मारयां सूं गोता खासी। इम ज्ञान सूं समझायनें हिंसा छोड़ावे ते मोक्ष रो मारग है। पिण साधू बकरा नीं जीवणा वांछे नहीं। जिम एक साहुकार रे दोय बेटा एक तो करड़ी आगां रा मूण माथे करे अने दूजो करड़ी आगां रो मूण ऊतारे। पिता किण ने बरजे। मूण माथे करे तिण नें बरजे पिण ऊतारे तिण नें न बरजे। ज्यूं साधू तो पिता समान है अने रजपूत नें बकरा दोनूं पुत्र समान है। यां दोयां में कर्म मूण माथे कुण करे। अने कर्म मूण ऊतारे कुण। रजपूत तो कर्मरूप मूण माथे करे है अने बकरा आगला कर्मरूप मूण भागवे ऊतारे है। साधू रजपूत नें बरजे तूं कर्मरूप मूण माथे मतकर। ए कर्म बांध्यां घणां गोता खासी। इम रजपूत नें समझायनें हिंसा छोड़ावे। *

१२९

वलि ससार नां उपकार ऊपरे अनें मोक्ष नां उपकार ऊपरे स्वामीजी दृष्टांत दियो। किणही न सप खाधा। गारड़ झाड़ो देइ बचायो। जद ऊ घणो लागे बोल्या थारा दिन तो जीतब मारतां रो दियो हुंतो। अनें अबे थाट सूं जीतब आपरो दियो। माता पिता बोल्या—थें म्हानें पुत्र दियो। बहिन बोली—थ म्हानें भाइ दियो। स्त्री राजी हुइ—चूड़ो—चूनड़ी अमर रहसी सो आप रो प्रताप है। सगा सम्बन्धी राजी हुवा—आछो काम कीधो लाख रुपिया देवे ते दिवे ए उपकार मोटो। पिण ए उपकार ससार नों। हिवे मोक्ष नों उपकार कहे छे। किणहि न सप खाधो तिण समाइ में तिहां साधु आया। जब ते कहे मानें सर्प खाधो झाड़ो देवो। जद साधु कहे म्हानें झाड़ा आवे तो है पिण दणा न कल्पे। जद ऊ बोल्यो।

मोनें ओखध बतावो। साधु बोल्या ओखध आणो थां पिण बतावणो नहीं। जद ऊ बोल्यो थे यूंही मूंडो बांध्या फिरो छो कोई थां में करामात पिण है। जद साधु बोल्या म्हांमें करामात इसी है थ्यो म्हारो कह्यो मांने तो किणहि भव में सर्प खावे नहीं। जद ऊ बोल्यो जिका कोइ बतावो। जद साधु बोल्या सागारी संथारा करदे। इण उपसर्ग सूं बच्या जद तो बात न्यारी, नहीं तो च्यारूं आहार नो त्याग। इम सागारी संथारो कराय नवकार सिखायो च्यारूं शरणा दीधा परिणाम चोखा रखाया। आऊखो पूरोकर देवता हुवो मोक्ष गामी हुवो। ओ उपकार मोक्ष नो ❀

१२०

वलि संसार नों तथा मोक्ष नो मारग ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहुकार रे दोय स्त्रीयां एक तो रोवण रा त्याग किया धर्म में घणी समझे। अने एक जणी धर्म में समझे नहीं। केतला एक काले भरतार काल कीधो। जुणने धर्म में न समझे ते तो रोवे विलापात करे। समझे ते रोवे नहीं समता धारनें बेठी। लोग लुगाई घणा भेला हुवा। ते सर्व रोवे तिण न सरावे—ए धन्य है पतिव्रता है। न रोवे तिण में निंदे—आ पापणी तो मूओ इज वांछती थी। इण रे आंसूई आवे नहीं। अने साधु किणनें सरावे। साधु तो न रोवे तिणन सरावे। ए प्रत्यक्ष मोक्ष रो मारग न्यारो अने लोक रो मारग न्यारो। ❀

१२१

केइ कहे आज्ञा बारे धर्म जद स्वामीजी बोल्या आज्ञा मांही धर्म तो भगवान परूप्यो। पिण आज्ञा बारे धर्म कहे ते किण रो परूप्यो। ज्यूं किणही पूछ्यो थारे माथे पाग ते कठा सूं आइ। जद साहुकार हुवे ते तो पेंतो बतावे माईदार मराये अमकड़िये बजाज कनें लीधी अमकड़िये रंग रेज कनें रगाइ। अमे चोरल्यायी हुवे तिण सूं पेंतो बतावणी आवे नहीं चोड़ा में अटक जावे। ज्यूं आज्ञा बारे धम कहे तथा असंत सेवायां धम कहे ते ठाम ठाम अटके पेंतो पूगावणी आवे नहीं। ❀

१३१

कोइ स्वामीजी कनें चरचा करवा आयो। दान दया री अठ आज्ञा री चरचा करतां ठोड़ ठोड़ अटके। अरड़ बरड़ बोले। न्याय री एक चरचा छोड़ दूजी पूछे दूजी छोड़ने तीजी पूछे पिण प्रथम न्याय री चरचा ने पार पुगावे नहीं। जद स्वामीजी बोल्या घर रो धणी खेत बाढ़े ते तो आंतरे री आंतरे बाढ़े। अनें चोर आय पड़े तो काटा बरड़ो करे। एक ठा सूं तोड़े एक ठा सूं तोड़े ज्यूं ए घर रा धणी होय न्याय री एक चरचा पार पुगाय दूजी करा। चोर जिम मत करो।

१३३

भेषधारी चरचा करतां आचार सरधा री न्याय री चरचा छोड़नें जीव बचावा रो बेठो घाले। जद स्वामीजी बोल्या कुबदी चोर हुवे ते चोरी करम आप लगाय आवे। लोक तो लाय र धन्धे लाग जावे नें आप माल लेय में जाय तो रहे। ज्यूं आचार तो शुद्ध पालणी आवे नहीं तिणसूं आचार नी न्याय श्रद्धा री चरचा छोड़ने लोकां सूं लगावणी बातां करे। ए जीव बंचाया पाप कहे। दान दया उठाय दीधी। भगवान नें चूका कहे। इम लोकां नें लगावे पिण न्याय रा अर्थी नहीं।

१३४

कुमाग सुमाग ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। भगवान रो मारग अनें पाखंडिया रा मारग किम ओलखिये। भगवान रो मारग तो पातसाइ रस्ता जेहवो सो कठेइ अटके नहीं। अनें पाखंडिया रो मारग ढांढा री डांडी समान। थाड़ी डांडी दिसे अनें आगे उजाड़। ज्यूं थोड़ो सो दान शीलादिक बताय न पछे हिंसा में धर्म बतावे।

१३५

कइ पाखंडी इम कहे भीखणजी री इसी श्रद्धा चकरो बचाया पछे ऊ कूंपडो खावे काचा पाणी पीवे अनेक आरंभ करे तिण रा पाप पाछे सूं आवे। जद स्वामीजी बोल्या म्हारे तो आ सरधा छै—असंयती नें बचायां

रू अनेक आरम्भ करसी। तिण री अनुमोदना रा पाप उण वेलाइज भगवान देख्यो जितरो लाग चूको, अनें थें तपस्या रो धारणों कोइ नें करावो आगामी काल नीं तपस्या नो धर्म थोनें हुसी इम जाणनें धारणों करावो। जद थारे लेखे असंयती ने बचायां रू आरम्भ करसी आगामी काल नो पिण पाप थानें लागसी थांरी श्रद्धा रे लेखे। कारण धर्म आगामी काल नों पाछा सू आवे तो पाप पिण लागसी। अनें भगवंते तो कह्यो : असंजती नें बचायां जितरो पाप ज्ञानी पुरुषां देख्यो तितरो उण वेलाइज लाग चूको।

१३६

किणही पूछ्यो थें कोइनें सूंस करावो ते सूंस पछा भांगे तो थानें पाप लागे। जद स्वामीजी बोल्या : किणही साहुकार सो रुपियां रो कपड़ो बेच्या। नफो मोकलो थयो। लेणवाले एक-एक रा दो-दो कीधा तो उणरो नफो उण साहुकार रे आवे नहीं। तथा रू कपड़ो लेण वालो आगे आयने सर्व कपड़ो माल देवे वा टोटो उणरा घर में पड़े पिण साहुकार रे घर में नहीं। ज्यूं म्हें सूंस दिराया तिणनों नफो म्हानें हुं चूको आगला सूंस चोखा पालसी तो नफो उणनें। अनें भांगसी तो पाप उणनें लागसी पिण म्हानें न लागे।

: १३७ :

फेर स्वामीजी दृष्टान्त दियो। किणहि दातार साधू नें घृत वहिरायो। साधू नेहराइ राख्यो। तिण घृत सूं अनेक कीड्यां मूइ तो पाप साधू नें लागो पिण दातार नें न लागो। अनें साधू ते घृत द्रव्य सहित संयमी नें दीधो पाते म राख्यो तिणरे तीर्थंकर गोत्र बंध्या ते नफो साधू रे थयो। आप आपरा भाव प्रमाणे नफो हुवे।

१३८

किणही पूछ्यो असंजती जीव नें बाच्यां पाप कह्यो छो ते किण न्याय। जद स्वामीजी बोल्या : किणही रे रुपियां री नोली कड़ियां बंधी उणनें चोर लारे म्हाठो। आगे तो साहुकार अनें लारे चोर म्हाल्या जाय। इम म्हालता चोर आगइने हठो पकूयो उण किणही चोर नें अमल रवाय पामी पायनें

सेंठो कियो। तो ते असल खवावण वालो साहुकार रो वैरी जाणवो वरी ने साफ कियो तिण कारण। ज्यूं छ काया रा हणवावाळा नें पोतें ते छ काया रो वैरी जाणवो वैरी नें साफ कियो तिण माटे।

१३९

किणही खास खायो। खैस पाको हलके घणी रे खालो दुखणी आयो। अब किणही ओषध देइ सातरा कीधो। साजो हुवो अब खत काम्यो। सहाय देणवाळा नें पिण पाप लागा। ज्यूं पापी रे साता कीधां घर्म कठासूं।

१४०

किणही राजा दश चोर पकड्या। मारवारो हुकम दीधो। तिवारें एक साहुकार अरज कीधी। महाराज एक २ चोर नां पांच सौ २ रुपिया देऊ चोरां नें छोडो। राजा कह्यो : चोर दुष्ट घणा है सो छोड़वा योग्य नहीं। साहुकार फेर कह्यो नव नें तो छोड़ो। तो पिण राजा मानें नहीं। इम साहुकार घणी अरज कीधी अब पांच सौ रुपइया लेयनें एक चोर नें छोड्यो। नगरी नां लोक साहुकार नें धन्य २ कहिवा लागा। गुण-ग्राम करै। थारी छोडाय में मोटो उपकार कियो। चोर पिण घणो राजी हुवो। साहजी म्हां सूं घणो उप कार कीधो। पछे चोर पोता रे ठिकाणे जाय चोरां रे न्यातिला नें समाचार कह्या। ते सुणनें द्वेष पकड्या। ते चोर ओरां नें लेइ आयो। शहर रे दरवाजे चिठी बांधी नव चोर मारया तिणरा इग्यारा गुणा निनाणवे मनुष्य मारयां पछे चिष्टालो कर सूं। साहुकार नें न मारू। साहुकार रा बेटा पोता सगा संबन्ध्या ने पिण न मारू। पछे मनुष्य मारवा लागो। किणरोइ बेटा मारयो किणरो भाइ मारयो, किणरो ही बाप मारयो। शहर में भयंकार मच्यो। नगरी नां लोक साहुकार नें निंदवा लागा। तिण रै घरै जाय रोवा लागा : रे पापी थारे धन घणा हुँतो तो कूवा में क्यूं नहीं न्हाख्या। चोर छुडायनें म्हारा मनुष्य मरावा। साहुकार लातरियो। शहर छोडनें दूजे गाम जाय बस्यो। घणो दुखी थयो। जे लोक गुण करता तेहिज अवगुण करवा लागा। संसार मा उपकार इसो है। साम रा उपकार करै ते मोक्ष तिण में कोइ जोखो नहीं।

१४१

सिरयारी में मोहर सीबेसर पूछयो : नरक में जीव जावै तिणनें ताणै कुण। जद स्वामीजी बोल्या : कूवा में पत्थर न्हाखे तिणनें खेंचनवालो कुण। भारे करी आफेइ तले जाय तिम जीव कर्म रूप भारे करी माठी गति में जाय। ❀

१४२

वलि मोहरे सीबेसरे पूछयो जीव देवलोक में जावै तिण नें लेजावणवालो कुण। जद स्वामीजी बोल्या : लकड़ा नें पाणी में न्हाख्यां ऊंचो आवै ते कुण ही ल्यावै नहीं पिण हलकापणा रा योग सूं तिरै। तिम जीव पिण कर्म करी हलको थयां देवगति में जावै। ❀

१४३

किणही पूछ्या : जीव हलको किम हुवै जद स्वामीजी बोल्या : पइसो पाणी में मेल्यां डूबै अनें उण ही पइसा नें ताप लगाय कूट २ नें बाटकी कीधी ते तिरै। उण बाटकी में पइसा मेलै तो ते पइसो पिण तिरै। तिम जीव तप संयमादि करी आतमा हलकी कीधां तिरै। ❀

१४४

कोइ मायां री निंदा करे अनें आप कुमत करन अलगा रहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही गाम में एक पुगल रहतो। सो एकदा फोजवाला आया ज्यांने लाकां रा धन धान बताय दियो। फोजवाला कयक तो गया अनें कयक गया नहीं। गाम रा लोक बार न्हाम गया था मा कयक पाछा आया। पुगल धन धान बतायारी बात सुनने लाकां मोसंमा दीधा। अर इमा काम करै। जद ऊ पुगल फोजवाला नें सुनायनें बोल्या : हूं बतायता तो अमकडिया ना घोड़ा ऊपरे गरदया त बता दयतो, पला पारा लाड़ा ऊपर गदरा ते बता दयता। इगरो धन पलाजी आगो गरदया ते पिग बना दयता। इम सुपरद करनें धाकी त्या त पिग बताय दीधा। तिम निंदक कुबद हुय त निंदा करता पूरा पाडने अलगा रह। ❀

१४५

केयक स्वामीजी नें कहिवा लागा : इसी सरधा तो कठेइ सुणी नहीं। थें दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी बोल्या : पजूसणां में कोइने आखा घालै नहीं आटो घालै नहीं। पजूसण धर्म रा दिनां में जो धर्म जाणै तो जो दान देणो बंद क्यूं कियो। आ बात तो घणां काल आगली है जद तो म्हैं था ही नहीं फेर आ थाप किण कीधी। ❀

१४६

केयक बोल्या : भीखणजी थांरा श्रावक कोइनें दान देवै नहीं। इसी श्रद्धा थांरी है। जद स्वामीजी बोल्या : किणही शहर में च्यार बजाज री हाटां हुंती। तिणमें तीन तो दिवाला गया। पाछै कपडा रा ग्राहक घणां आया। तिवे एक बजाज रह्यो ते राजी हुवै के बेराजी। जद ते बोल्या राजी हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : थे कह्यो भीखणजी रा श्रावक दान नहीं देवै तो थे लेवाल ते सर्व थारै इज आसी। जब थे कह्यो ते थम थांनें इज हुए, थे बेराजी क्यूं थया। थे निंदा क्यूं करो। इम कहि कष्ट कीधो। पाछो जाब देवा समर्थ नहीं। ❀

: १४७ :

स्वामीजी नवी दिक्षा लीधां पछै केतलायक वर्सें तीन जणियां दिक्षा लेवा त्यारी थई। जद स्वामीजी बोल्या : थें तीन जणियां साथे दिक्षा लेवौ अनें कदाचित एकण री वियोग पड़ जावै तो दोयां नें कल्पै नहीं सो थांनें संलेखणा करणी पड़ै। थांरो मन हुवै तो दिक्षा लीज्यो। इम धार कराय तीन जण्यां नें साथे दीक्षा दीधी। पछै मालजी आर्यां थई तिण स्वामीजी री नीव ठेट सूं इसी रीती हुंती। ❀

१४८

दया ऊपर स्वामीजी तीन दृष्टांत दिया—

चोर हिंसक ने कुसीलिया, यांरे ताई हो साधां दियो उपदेश।
यांनें सावद्य रा निरवद्य किया एहवी छै हो जिन दया धर्म रेस।
भव जीवां तुमें जिन धर्म ओलखो ॥३॥

किणही सेठ नी हाटे साधु उतर्या। रात्रे चोर आया। हाट खोली। साधु बोल्या : थे कुण हो। जब ते बोल्या : म्हें चोर छां। साहुकार हजार रुपइयां री थेली माँहि मेली है सो म्हें पराही ले जास्यां। जब साधां उपदेश दीधो : चोरी नां फल माठा है। आगे नरक निगोद नां दुख भोगवणा पड़सी। भिन्न २ करनें भेद बताया। ए धन खासी सो घर का सगला अनैं दुख थानें भोगवणो पड़सी। इम समझायनें चोरी नां त्याग करायां। साधां रा गुणग्राम चोर करतां थकां प्रभात थयो। एतलै हाटरो धणी आयो। धणी नें नमस्कार करी बोड़ो छटको साधां नेंड़ कीधो। चोरां नें देखनें पूछयो थें कुण हो। ते बोल्या म्हें चोर छां। थें दुकी बटायनें हजार रुपइयां री थेली मांय नें मेली, सो म्हे लेवता हा। रात्रि में आय ठेवा लागा। साधां म्हांनें देखनें उपदेश दे समझायनें चोरी नां त्याग करायां। सो थां साधां रो भलो होइस्यां। म्हांनें डूबतां नें राख्या। सेठरी सुण नें साधां रे पगां पड़यो, गुण गावा लागो। म्हांरे हाटे आप भलाई उतर्या। म्हांरी थेली राखी। एह धन चोर ले जावता तो म्हारा च्यार बेटा कुंवारा रहिता। अब च्यारूं ई परहा परणावसूं। ते आपरो उपगार है। सेठरी इम कह्यो पिण साधू तिण रा धन राखवा उपदेश न दियो। चोरां नें तारवा उपदेश दियो।

बकरां नें मारणहार कसाई हाथ में कत्ती साधां कनैं आय उभो रह्यो जद साधां पूछ्या : तू कुण है। जद ऊ बोल्या : हूँ कसाई छूं। जद साधां पूछ्या : थारे कांई किसब। जब ते बोल्यो : घर बीस बकरा बंध्या त्यांरे गले कत्ती करूं बधम्। जद साधां उपदेश दियो : सर धान ग्राणों पड़ तिण रे अर्थे इसा पाप करे। जद कसाई बोल्या मान तो भगवान कसाई रे घर मेल्या है सो म्हांरो दोष नहीं। जद साध बोल्या : भगवान क्यांनें मेले। थें आगै माठा कर्म किया तिण सूं कसाई रे कुल उपनों। वले इसा कर्म करसो तो नरक में जाय पड़सी। इम भिन्न करनै समझायो। बकरा मारवा रा जावजीव पचखाण करायो। कसाई बोल्यो : म्हांरे घर बीस बकरा बंध्या है सो आप कहो तो नीला पाणी नीरू अन कापा पाणी पाऊं। आप कहो तो छप्पर में छाऊं कहि पाछल बाड़ में

कोइ। आप कह्या तो आपन आप सूंपूं। धोवण उन्हो पाणी पायो। सूसो मारा छाम्यो। साधां रा उपर म्हारो उछेरयो। जद साध बोल्या थारे सूंसा रो आगला कीजै। सूंस चोखा पालजै। इम सूंसां री भलावण दध पिण बकरां री भलावण न देवै। कसाइ साधां रा गुण गावै : मोंने हिंसा छोडाइ तारयो। बकरा जीवता बचिया ते पिण हरखित हुवा।

कोइ एक पुरुष पर स्त्री नो लंपट। ते साधां कने पर स्त्री गमन नो पाप सुणीने त्याग किया। घणो राजी होय साधां रा गुण गावै : आप मोंन कूवामें तारयो। नरक जाता में राख्यो। अनें उवा स्त्री शील आदरयो सुणनें उपर कनें आयनें बोली : हूं तो थां उपर इकतार री धार बैठी थी सो मों सागे गृहवासो करो नहीं तो कूवा में जाय पडसूं। जद तिण कह्यो : साधां तो उत्तम पुरुषां पर स्त्री नो घणो पाप बतायो। तिण सूं म्हे त्याग कीधा। म्हारे तो थां सूं काम नहीं। जद स्त्री क्रोध रे वस कूवा में जाय पडी।

हिवै च्यार समझ्या अनें धन धणी रे रह्यो। कसाइ समझ्यो अनें बकरा बच्या। लंपट शील आदरयो नें स्त्री कूवा में पडी। चोर कसाइ लंपट यां तीनां में धारवान उपदेश साधां दियो। आ तीनांने साधां तारया। ए तीनूं इ तिरया। तिण रा साधां नें धर्म थयो। अनें धणी रो धन रह्यो बकरा जीवा बच्या तिण रो तो धर्म अनें स्त्री कूवा में पडी तिण रो पाप साध नें नहीं। केइ अग्यानी कहै : जीव बच्या अनें धन रह्यो तिण रा धर्म। सो उणरी श्रद्धा रे लेखै स्त्री मूइ तिण रो पाप पिण लाग।

१४९

किण ही कह्यो जीव बचिया ते धर्म। जद स्वामीजी बोल्या : कीडी नें कीडी जाणे सो ज्ञान के कीडी ज्ञान। जद उ बोल्यो : कीडी नें कीडी जाणे सो ज्ञान। कीडी ने कीडी सरधै सो सम्यक्त्व के कीडी सम्यक्त्व। जद ते बोल्यो कीडी नें कीडी सरधै ते सम्यक्त्व। कीडी मारवा रा त्याग किया तिका दया के कीडी रही तिका दया। जद उ बोल्यो

पेसाफनो गाम में आण्यों तिण नें कोइ भया। जद ऊ बोल्यो : गयेरी वात क्यूं करो। स्वामीजी बोल्या : थे गाडे पेसाण आण्या धर्म कहो तो गधे पेसाण आण्या हि धर्म। साधू रे तो दोनू ही अकल्पनीक है। *

१५४

फमूजी आदि पांच जण्यां ने पंडावद में स्वामीजी कयो : थांरे कपड़ो चाहिजे सो लेवो। त्यां मांग्यो तिण प्रमाणे दीधो। मन में सका पड़ी कपड़ो बधतो दीसे। तिवारे अखैरामजी स्वामी न भेळने त्यांरे ठिकाणे सू कपड़ो मंगायने मापियो तो कपड़ो बधतो नीकल्यो। पछे स्वामीजी त्यांनें घणी निरधी। आगमिया काल नीं अप्रतीत जाणनें पांचू जण्यां ने साथे छोड़ दीधी। *

१५५

बूढार में एक भाया रे थीरमाणजी री संका पड़ी। पछे स्वामीजी कने आयो। सामायक नों उपदेश दियो। जद ते बोल्यो : सामायक तो न करूं कदाच सामायक में थांनें स्वामीजी महाराज कहिणी आय जावे तो मोनें दोष लागे। जद स्वामीजी बोल्या : एक मुहुरत नो संवर कर। इम कही संवर कराय पछे उण सूं चरचा कर भिन २ भेद बताय उण री सका मेटने पगां लगाय दियो। *

१५६

माधजी द्वारा में नैणसिंघजी रा जमाई उदेपुर सू आयो। नैणसिंघजी कयो महाराज यांनें समझावो। जद स्वामीजी समझावा लागा। तिणनें पूछ्या साधां नें आधाकर्मी थानक में रहिणो के नहीं। जद ते बोल्यो : ठीक है न रहिणो। वलि स्वामीजी कयो : केयक साध नाम धरायनें आधाकर्मी थानक में रहे है। जद ते बोल्यो : रहे छे तो कलेपक सूत्र में चाल्यो हुवेला। वली स्वामीजी पूछ्यो साधू नें किंवाड़ जड़णो नहीं नित पिण्ड एक घरणों लेणो नहीं। जद ऊ बोल्यो : आ वात तो साची कही। किंवाड़ जड़े सो साधु रे कांइ रुखालनों है। किंवाड़ जड़े सा साध ठीक नहीं।

जद स्वामीजी कह्यो केइ किंवाड़ जड़ दै। एक घर नों नित्य पिण्ड लेवे है। जद ते बोल्यो : हां महाराज किंवाड़ जड़े है नित्य पिण्ड लेवे है सो कठेयक सूत्र में चाल्या हुज हुवेला। जद स्वामीजी जाण्यों ओ तो समजतो कोइ दीसै नहीं बुद्धि तिसी नहीं विग्रमूं। ❀

१५७

कोइ सूं चरचा करतां बुद्धी तो जावक काची देखी अनें छोक करी स्वामीजी इणने समझावो। जद स्वामीजी बोल्या : दाल हुवै तो मूंग मोठ चणा री हुवै पिण गाहा री दाल न हुवै। ज्यूं हलुकर्मी बुद्धीवत हुवै ते समझै पिण बुद्धी हीण न समझै। ❀

१५८

किणही कह्यो आप उत्तम करा सा कानी कानी हलुकर्मी जीव जगत में घणाइ है समझै जिसा। जद स्वामीजी बोल्या : मकराणा रा पत्थर में प्रतिमा होयवारा गुण तो है पिण इसरा करणवाला कारीगर नहीं। यूं समजे जिसा तो घणाइ हैं पिण इसरा समझावणवाला नहीं। ❀

१५९

वेणीरामजी स्वामी स्वामीजी नें कह्यो : हेमजी नें वखाण अस्तखित परचरा मूंढ़ै सो आवै नहीं आड़ता आय अनें वखाण देता जाय। जद स्वामीजी बोल्या : केवली सूत्र व्यतिरिक्त हुज हुवै। ज्यांरे सूत्र रो काम नहीं। ❀

१६०

वेणीरामजी स्वामी बालपणे था। जद स्वामीजी नें पूछयो हींगलू सूं पात्रा रंगणा नहीं। जद स्वामीजी बोल्या म्हारे तो पात्रा रंगीवाइ है थारे संका हुवै तो तूं मत रंग। जद वेणीरामजी स्वामी बोल्या म्हारा मेंहूडा पी रंगवारा भाव है। जद स्वामीजी बोल्या : केइ सेपा आय जद उणरी कानी तो पीला कचा रंगता कदइ अनें आगे लाल पका रंगता कदइ पछै देखनें धार रगै पहिला रंग्या माही समा। पात्रा केइ रंगै तो ध्यान तो मुंगे रंगता हुज टाल्या इम कहिनै समझायो समझ गया। ❀

१६१

कोइ कहे पात्रा नें सुरगा पक्का रंगो। जद स्वामीजी बोल्या : कुंभारी निगै चोखी तरै पड़ै। एक रंग सूं दूजो रंग उपर आवै जद दीसणो साहरो। फोरो हीगळू बोम्भल पिण हुवै। काळा फोरो हुवै। पासी उतारणो सोरो। इत्यादिक अनेक कारण सूं जू जूवा रंग देवै ते पिण सूत्र में बरज्या नहीं।

१६२

बाळपणै वेणीरामजी स्वामी सूं घणा कावृता। स्वामीजी आप बिना जोयां बिना पूंज्या पग सरकाया। एक दिन वेणीरामजी स्वामी तो अळगा बेठा हा अनै स्वामीजी गुप्त पणै पूंजनै पग सरकायो नें साधां न कह्यो रू घणो अळगो बेठो देखै है। इतलै वेणीरामजी स्वामी बोल्या : रू स्वामीजी बिना जोयां पग सरकायो। जद और साध स्वामीजी कानी देखनें हसवा लागा। पछै साधां कह्यो पूंजनें पग सरकायो। जद लजवाणा पड्या अनै पगां आय लागा।

१६३

पीपार में वेणीरामजी स्वामी दुखी हाट में बेठानें स्वामीजी देखा पाख्या था वेणीराम २। इम दोय तीन हेला पाड्या पिण पाछा बोल्या नहीं। जद गुमानजी लुणावत नें कह्यो घणो छूटतो दीसै है। जद गुमानजी वेणीरामजी स्वामी नें आय कह्यो थानें इतो पाख्या बोल्या नहीं तिण सूं स्वामीजी रा मन मांही घणो छूटतो दीसै है। इम सुणनें वेणीरामजी स्वामी डरिया आयनें पगां लागा। जद स्वामीजी बोल्या रे मूरख इतो पाख्या पिण पाछो बोलै नहीं। वेणीरामजी स्वामी नरमाइ करनें बोल्या महाराज म सुणिया नहीं। पछै घणी नरमाइ करी। इमा वनीत तो वेणीरामजी स्वामी इसा जब्बर स्वामीजी।

१६४

वेणीरामजी स्वामी कह्यो हूं घणी में जाऊं चन्द्रभाणजी सूं चरचा करूं। जद स्वामीजी बोल्या : थारै त्यां सूं चरचा करवारा त्याग है।

इसो हिज अवसर वृस नें ए त्याग कराया। इसा स्वामीजी अवसर ना जाण। ❀

१६५

मैणाजी आर्या नें अनें थैणीरामजी स्वामी नें स्वामीजी बोल्या : ए आंख्या रो ओषध घणा करै सो आंख गमावता दीसै है। तो पिण ओषध छोड्यो नहीं। पछै आंख्यां भणी कची पड़ गई। ओषध घणो कीधो तिण सूं आंख्या नें जोखो थयो। ❀

१६६

गुजरात सूं सिघजी आय नाथद्वारै में स्वामीजी कनें दीक्षा लीधी। पछ किसरा एक दिन तो ठीक रह्यो पछै सिरयारी में अयोग्य जाण नें छोड़ दिया। ते मांहडै परहा गया। पछै खेतसीजी स्वामी बोल्या : सिघजी नें प्रायश्चित देइनें पाछो क्यूं न ल्यो, हूं जाय नें ल्याऊं। जद स्वामीजी बोल्या : ते लेवा योग्य नहीं। तो पिण कमर बांधने ल्यावा नें त्यार थया। जद स्वामीजी कह्यो उगा भेलो में आहार कीधो है तो थां भेलो आहार करवारा त्याग है। इम सुननें मोटा पुरुष कोइ ल्यावानें गया नहीं। इसा अवसर भीखणजी स्वामी। पछै सिघजी रा समाचार सुण्या ऊनो राछी ओढ़नें धरटी रे जोड़े सूता है। ❀

१६७

दोय साधां रे मांहों मांहि अडवी लागी। स्वामीजी कनै आया। एणरे छोट मांही की पाणी रा टपका पड़ता ऊतो कहै इती दूर आयो ऊ कहै इतरा पोवड़ा। परस्पर विवाद करै। समझाया समझे नहीं। जद स्वामीजी कह्यो : में दानूं जणा डोरी ले जायने जायगां माप आवो। जद दानूं जणां अडवी छोड नें सुद्ध होय गया। ❀

१६८

वली दोय साधांरै आपस में अडवी लागी अनें ऊ कहै तू छोलपी। ऊ कहै तू लालपी। इम परस्पर विवाद करता स्वामीजी कनै आया

तो पिण विवाद कोई नहीं। जद स्वामीजी बोल्या : दोनूं जणा विगरा त्याग करो आज्ञा रो आगार राखो। पहिलां आज्ञा मांगी तिका कह्यो। एक जणे च्यार मास रै आसरै विगै न खाधी पछै आज्ञा मांगी। जद इम रैइ विगैरा आगार होय गयो। इम कहिनें समझाया।
*

१६९

मावजी द्वारा में ५६ रे वर्षे स्वामीजी रै वायरा कारण सूं १२ मास रै आसरै रहिणो पड़ यो। तिहां हेम गोचरी गया। दाळ घणा री न मूंगा री भेळी हुइ। स्वामीजी देखनें पूछ्यो आ चिणा री मूंगा री दाळ भेळी कुण कीधी। जद हेमजी स्वामी बोल्या : मैं भेळी आणी। जद स्वामीजी बोल्या : कारण वाळा रै वासतै ऊपरी मांगने न्यारी स्यामी तो अळगी राखी था भेळी क्यूं कीधी। पछै हेमजी स्वामी बोल्या : अजाण में भेळी हुइ। जद स्वामीजी घणा निषेध्या। जद एकान्त आवगो जाय सूवा उदास थया। पछै स्वामीजी आहार कर आयनें कह्यो : ओगुण आपरी आतमा रा सूझै है कै म्हारा। जद हेमजी स्वामी बोल्या : माहाराज ओगुण तो म्हाराइ सूझै। जद स्वामीजी बोल्या : ठीक है आज पछै सावचेत रहिजै। ऊठ जा आहार कर इम कहिनै आहार करायो।
*

१७०

काफरला में खेतसी स्वामी नें हेमजी स्वामी गोचरी गया तिहां धोवण विना चाख्या भेळो थयो। तिवारै खेतसीजी स्वामी कह्यो : हेमजी आज विनां चाख्यां धोवण भेळा कीयो है। माफक निकळीयो तो स्वामीजी इसा निषेधता विस है बाकी कांण राखै म्हूं कोइ नहीं। पछै काफरला मो देहरा में पाणी चाख देख्यो चोखो नीकल्यो जद मन राजी हुवा।
*

१७१

कारण वाळा साधां रै वासतै दाख मंगावता तो दोय फानी भेळ्या। काइ चरकी हुवै काइ खारी हुवै, किण्यही में खूण घणो हुवै, किण्यही में

सूम थाड़ा हुवै। कारणीक नें कोइ मावै कोइ न मावै। तिण सू जू जूआ मेल्या। इसो कारणीक रा आगलो करता। ❀

१७२

कांकड़ोली में सेंहलोतां री पोल में स्वामीजी उतरया। पिषायनें री साल रात्रि में पाछली षारी खोल नें स्वामीजी षारे दिशा गया। जद हेमजी स्वामी पूछ्यो : महाराज षारी खोलवारो अटकाव नहीं कोइ। जद स्वामीजी बोल्या ए पोली रो चोषजी सकलपो दरसन करवा आया। घणो संकीला तो आ छै पिण इण वातरी संका तो उमरइ न पड़ी। या थार मा संका क्या सू पड़ी। जद हेमजी स्वामी कह्यो : महाराज म्हार संका थां नें पड़े हूं था पूछा करूं छू। जद स्वामीजी बोल्या : तूं पूछै छै इण रा अटकाव नहीं। इणरो अटकाव हुसी तो म्हें थानें खोलस्यां।

१७३ :

ग्यांरा आचार खोटा श्रद्धा पिण खोटी इसा तो समदृष्टीहीण गुरु इसा ही श्रद्धा शून्य समकतहीण श्रावक। ते कहे म्हांनें भीखणजी साध श्रावक सरधे नहीं। जद स्वामीजी बोल्या कायलां री ता गाय काला बासण में रांधी अमावस नी रात्री आंधा जीमण वाला आंधाइ परुसण वाला जीमता जाय नें सुंखारा करें। कहे समरकार काला कूलो टालस्या। कोइ न्हाले। सर्व काला ही कालो भेला हुया। ज्यूं श्रद्धा आचार नो ठिकाणा नहीं ते साध श्रावक किम हुव। ❀

१७४

रा श्रावक बोल्या भीखणजी इण पातरा मार काढ़ा। जद स्वामीजी बोल्या : तार कोइ कहे डाडाइ सूझ नहीं। ज्यू आधाकर्मी आदिक मोटा दोष ही सूझै नहीं या छोटा दोषां री खबर किम पड़े। ❀

१७५

पाय रे वेग परटी मांडी। पीसती जाय ज्यू उडती जाय। आगी रात्री पीसनें स्हारगी में उसारया। ज्यू सांपपती श्रावक पणा लेय नें जाण २ नें दोष लगाय अने प्रायश्चित लेय नहीं स्यारे सारे ज्यूं ही पिसण रही सारी। ❀

१७६

धामली में आर्ज्यां बिना भूळायां चोमासा कियो। तिहां आहार पाणी री संकड़ाइ घणी रही। किणही स्वामीजी नें पूछयो महाराज धामली में आर्ज्यां बिना भूळायां चामासो कियो त्यां नें कांइ दंड देस्यो। जद स्वामीजी बोल्या : प्रथम तो वह उ गाम देवांइस है। पछे भेळा थया जद त्यां आर्ज्यां नें प्रायश्चित देइ सुध कीधी।

१७७

धनांजी री प्रकृति करड़ी जाण नें स्वामीजी बिचारयो आ भारमलजी सू निमणी कठिन है। साहमी बाछे जीसी है। यू जाणनें छोड़णरो उपाय करनें कला सू पर पूठ छाड़ दीधी।

१७८

छै लेश्या हुंती जद वीर में हुंता आठूंइ कर्म।
छद्मस्थ चूका तिण समें मूरख थापे धर्म।
चतुर नर समजो ज्ञान बिचार।

ए गाथा जोड़ी जद भारमलजी स्वामी कह्यो : छद्मस्थ चूका तिण समें ओ पद परहो फेरा लोक बेदा करे जिसो है। जद स्वामीजी बोल्या : आ पद साचो के झूठा। जद भारमळजी स्वामी कह्या : है तो साचो। जद स्वामीजी बोल्या : साचो है तो लोकां री कांइ गिणत है। न्याय मारग चालतां अटकाव नहीं।

१७९

सम्वत अठार सेपनें स्वामीजी सोजत चोमासो कीधो। पछे बिचरता २ मांहडे पधार्या। तिहां सिरयारी सू गृहस्थपणे में हेमजी स्वामी दर्शन करवा आया। पोळ रा चौंतरा उपर तो स्वामीजी पोढ्या अनें हेठे मांचो बिछाय नें हेमजी स्वामी सूता। जद साध अनें स्वामीजी मांहों मांहि साध आर्यां नें क्षेत्रां में मेलवारी बातचीत करे। अमुक साध नें अमुक गाम में मेलणा फलाणी नें अमुक गामें मेलणो है। पिण सिरयारी मेलवारी बात न कीधी।

जद हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ सिरयारी में साध आम्ना भेळा बात ही न कीधी। जद स्वामीजी करड़ै वचनां करी घणा निषेध्या। फरमायो गृहस्थ सुणतां बात हीज न करणी साधां रै तिण बोलबारो काम हीज कांइ। हेमजी स्वामी नें करड़ी घणी लागी। मून साझनें सूय रह्या। पछै प्रभाते हेमजी स्वामी तो बखाण करनें सिरयारी कानी नींबली रो मारग लीधो अनें स्वामीजी कुशालपुर कानी विहार कीधो। आगै जातां स्वामीजी नें कायक सकुन पाछा हुवा जद पाछा फिरया। आप पिण नींबली कानी पधारया। हेमजी स्वामी री चाल तो धीरे नें स्वामी री चाल उतावळी सो आय पूगा। इलो पाधरों हेमड़ा म्हैं आवां छां। सुण नें हेमजी स्वामी ऊभा रहिनें वंदना कीधी। पछै स्वामीजी बोल्या : आज तो थां ऊपर हीज आया छां। जद हेमजी स्वामीजी बोल्या : भलांइ पधारया। स्वामीजी बोल्या तूं साधपणो लेऊं २ करतां नें उघाड़तां नें तीन वर्ष आसरै हुवा सो सर्व समाचार सांचा कहि दे। हेमजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ साधपणो ल्यांरा भाव सरावरी है। स्वामीजी बोल्या म्हां जीवतां लेसी कै, मरयां पछै लेसी। आ बात सुणनें घणी करड़ी लागी। स्वामीनाथ इसी बात करो। आप रै सका हुवै तो नव वर्ष पछै कुशील रा त्याग कराय देवो। स्वामीजी बोल्या : त्याग है थारै। जद त्याग करावताइ हुवा। त्याग कराय नें बोल्या : परणीजवा रै आसरै नव वर्ष थें राख्या है कै। हां स्वामीनाथ। जद स्वामीजी बोल्या : एक वर्ष तो परणीजतां लागै बाकी आठ वर्ष रह्या। तिण में एक वर्ष स्त्री पीहर रहै। पाछै रह्या सात वर्ष तिण में दिनरा त्याग है। थारै कारै थारै तीन वर्ष रह्या तिका में पांचूं तिथ्यांरा थारै त्याग है। बाकी दोय वर्ष में च्यार महिना आसरै रह्या। इम संकावतां २ पोहर रा लेखो करतां पछै घड़ियां रै लेखै छ मास रो कुशील आसरै बाकी रह्या। वळी स्वामीजी फरमायो : परण्यां पछै एक हाथ दोरा कारी होयनै स्त्री मर जावै तो सब आपदा पातां रै गळ पड़ै। दुःखी हुवै। पछै साधपणो आवणो कठिन है। इम कहीनें वळे उपदेश देवा लगा : आव जीव शील आदर लै, जोड़नें हाथ। एतलै खेतसीजी स्वामी बोल्या जोड़लै २ हाथ जोड़ लै, स्वामीजी कहे है। जद हाथ जोड़या। स्वामीजी पूछ्यो शील अदराय

देऊ । इम बार बार पूछ्यो । जद हेमजी स्वामी बोल्या अंतराय देवो । जद स्वामीजी आवजीव पांच पदां री मास करनें त्याग कराय दिया । हेमजी स्वामी बोल्या अबे सिरयारी वेगा पधारज्यो । जद स्वामीजी बोल्या : अबार तो हीराजी नें भेळा हा सो साधां रा पडिक्कमणो परहो सीखजै । इम कहिनें नींबली में आया । ए सर्व बात ऊभां कीधी । नींबली में आया पछै हेमजी स्वामी कनें मिठाई री वेहरनो बारमो ब्रत निपजायो । भारमलजी स्वामी नें स्वामीजी कह्यो । अबै थारै नचीताई थई । आगै तो म्हें हा अनें अबै पाछलथी सूं परमारथ रो काम पड़ तो हेमजी हुवज । पछै हेमजी स्वामी बोल्या म्हें शील आदर्‍यो ते बात अबार लोकां में प्रसिद्ध न करणी । स्वामीजी बोल्या : हूं न करूं । हेमजी स्वामी तो सिरयारी आया नें स्वामीजी पेलावास पधार्‍या । वेणीरामजी स्वामी नें सर्व बात कही । हेमजी शील आदर्‍यो पिण कह्यो बात प्रसिद्ध न करणी । वेणीरामजी स्वामी सुणनें घणा राजी हुवा । स्वामीजी नें घणा सरांस्या । आप बड़ो भारी काम कीधो । म्हें घणी इज खप कीधी पिण कोई टप लागी नहीं, आप आछो काम कीधो । अनें शील आदर्‍यो ते बात प्रगट करणी म्हानें न राखणी । आप भलाई मत कहो । वेणीरामजी स्वामी बात प्रसिद्ध कर दीधी । पेलावास रा बाया भाया राजी घणा हुवा । म्हे तो पहिलाइ जाणता हा हेमजी दीक्षा लेसी । पछै स्वामीजी सिरयारी पधार्‍या । हेमजी स्वामी बनोला जीमें । महा सुदि १२ शनैश्चर वार दीक्षा रो मुहूर्त ठहरायो । पछै भाया रा बेटे भाइ रावले जाय पुकार्‍यो । जद ठकुराणी स्वामीजी नें चाकरां साथै कहिवायो : गाम में रहिज्यो मती । पछै गाम रा पंच भेळा होय नें हेमजी स्वामी नें साथ लेइ रावले गया । जद ठकुराणी हेमजी स्वामी न गहणा कपड़ा सहित देखन बोली हूं तो नै यूं को यूं गहणां कपड़ां सहित परणाय देसूं । म्हारा दोलतसिंह रा सूंस है । जद हेमजी स्वामी जाब दीधो परणायो तो गाम में कुंवारा डावड़ा घणाई है । म्हारे तो सूंस है । इम कही स्वामीजी कनें आय बेठा । स्वामीजी नें गाम में रहिवारी आज्ञा देय नें पंच पिण पाछा आया । माघ सुदी १५ पछै हेमजी स्वामी रै छ कायां रा हणबारा त्याग हुवा अनें स्यादिका कह्यो फागण वदि बजर साहबे बगीचे में परणाय

दीक्षा लीधी। सो ऊमा रो कह्यो मान्यो। पछे स्वामीजी नें आय पूछ्यो। जद स्वामी जी फरमाया। रे भोला अनर्थ करे है। एक दिन पिण न उल्लंघणो। पछे पाछा आयनें जे धीजरे साहबें बहिन परणाय दीक्षा लेणी इसो कागद कीधो ते फाड़ न्हाख्यो। अनें घरका नें कह्यो : थे इसा दगा करो। म्हारा त्याग मंगावो जद लोक बोल्या भीखणजी समझाया दीसे है। पछे इकवीस दिन बनोला जीमी नें माघ सुदी १३ नें १८५३ गाम बारे दीक्षा थइ। बड़ला रे नीचे हजारू मनुष्य भेला थया। घणा उछव मोच्छव सहित स्वामीजी रे हस्ते दीक्षा लीधी। आगे सर्व चार संत हुंता पछे तेरह थया। ढठा पछे बधवो कीधा बधोतर थइ। बंक चूलिया में कह्यो स १८५१ पछे धमरा धर्मों उद्योत हुसी ते बात आय मिली। दीक्षा देइ स्वामीजी विहार कीधो। पछे घणो उपकार थयो। ✿

१८०

कच्छ देश थी पाली में टीकम डोसी आया। अनेक बोलां री संका पड़ी ते मेटवा। जद पाली में रे श्रावकां कह्यो टोडरमलजी थांरी संका मेट देसी। थे थानक में चालो। इम कही थानक में ले गया। पछे टोडरमलजी सूं चरचा कीधी। टीकम डोसी रा प्रश्नां रो उत्तर आयो नहीं। जद टीकम डोसी बोल्यो या प्रश्नां रा जाब देणवाला तो एक भीखणजी स्वामी इज है और कोइ दिसे नहीं। इम कही ठिकाणें आयो। केतलायक दिनां पछे स्वामीजी मेवाड़ सूं मारवाड़ पधार्या। सिरयारी होयनें गुण सठै बरस पाली चोमासो कीधो। टीकम डोसी मोकला प्रश्न पूछ्या ज्यांरा जाब स्वामीजी दीधा। टीकम डोसी बोल्यो : बंकचूलीया में कह्यो संवत अठारे तेपन पछे धर्म रो उद्योत होसी। इण वचन रै लेखै तो तेपनां पहिली साध नहीं इम संभवै। जद स्वामीजी फुरमाया इहां साध नहीं इसो तो कह्यो नहीं। सं० १८८३ पछ धर्म रा घणा उपकार आसरी उद्योत कह्यो छै। तेपनें पहीली थोड़ा उद्योत हो तेपनां पछे घणों उद्योत। इम कहीनें समझायो। ✿

१८१

भारमलजी स्वामी बालक था जद स्वामीजी फरमायो : गृहस्थ सूंपणों काढे तिसो काम न करणो। गृहस्थ सूंपणों काढे जिसो काम करे तो तेला रो डंड। जद भारमलजी स्वामी बोल्या : कोइ कूड़ाइ सूंपणों काढे तो। जद स्वामीजी कह्यो : कूड़ो सूंपणों काढे तो आगला पाप उदे आया। तो पिण भारमलजी स्वामी बड़ा वनीत सो वचन अंगीकार कियो। इसा वनीत उत्तम पुरुष हुवे ते सूंपणों कढावे ही किण लेखै।

१८२

बालपणें भारमलजी स्वामी नें आखी उत्तराध्ययन उभा २ चितारणी इसी आज्ञा स्वामीजी दीधी। जद भारमलजी स्वामी बोल्या : स्वामीनाथ कदाचित नींद में हेठो पड़ जाउं तो। जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूंजनें सूंणें उभा रहो। इण रीते आखी उत्तराध्ययन री सज्झाय अनेक वार कीधी। इसा वैरागी पुरुष।

१८३

साध आर्य्यां री प्रकृती करड़ी देखता तो तिणरी खोड़ स्वामी मेटवानें इम दृष्टान्त देता। कषाय रो टूक, आर्णें वासति रो टूक, सर्पनी परें फूं, इम कहि नें प्रकृती सुधारवारा उपाय करता।

१८४

कल्याण वाणी देवें सूत्र सिद्धांत वांच छेहड़े जीव सुधार्यां पुन्य मिश्र परूपे सावद्य अनुकंपा में धर्म कहे तिण उपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : आखी रात्रि में संसार लेखै च्यारा २ गीत गाय अनें छेहड़ आली मोल्यो माल गाय। ज्यूं पहिलो तो कल्याण में अनेक बातां कहे पिण छेहड़ सावद्यदान सावद्यदया में पुन्य मिश्र परूपे।

१८५

विजयचंदजी पटवा में आमकरण कोठारी कह्यो : विजयचंदजी थांरा गुरु भीखणजी कंबाड़ ज्यांसूं मढ़ी में उतरया। इम सुण नें विजयचंदजी

करता । स्वामीजी आठम चवदश रा उपवास करता । अनें उदैरामजी बेले २ पारणों पारणां में आम्बिल । खेतसीजी स्वामी उदैरामजी नें आहार अधिक देवै । जद स्वामीजी बरज्या । फरमायो : बेला रा पारणो इ आहार अनमान सूं द्यो । तो पिण अधिक देवा री चेष्टा देख नें स्वामीजी फुरमायो खेतसी ! उदैरामजी री मोत थारे हाथे हुंती दीसे है । केतलायक वर्षां पछ मारवाड़ में इगसठे री साल उदैरामजी आम्बिल वर्द्ध मान तप करतां इकताळीस ओळी तो हुइ एक अठाइ कीधी । अठाइ रो पारणो खारचियां कीधो । डील में कारण आय नें चलावास मारमलजी स्वामी कनें आवतां कराड़ी गाम में थाका ।

जद भोपजी तपसी चेलावास आय नें समाचार कह्या । जद खेतसीजी स्वामी हेमजी स्वामी भोपजी तपसी आदि आय नें सांधे बैसाण चलावास लेय आया । घास रो बिछावणो कर ऊपर सुवाण्यां । पछै हीराजी हेमजी स्वामी नें कह्यो आप खिचणों काड़ करो । उदैरामजी स्वामी नें पाणी पावा । जद खेतसीजी स्वामी हेमजी स्वामी दोनूं कनां आया । खेतसीजी स्वामी मोरां पाछे हाथ देय नें बैठा कीधा । इतले आंख्यां फर दीधी । मारमलजी स्वामी फरमायो सरधा तो थारे च्यारू आहार नां त्याग है । खेतसीजी स्वामी र हाथ में डील चालता रह्या । जद खेतसीजी स्वामी कह्यो : मोनें स्वामीजी फुरमाया था क उदैरामजी री मोत थारे हाथे आवती दीस है । सा स्वामीजी रो वचन आय मिल्या । ❀

१८९

माजत रा बजार में छत्री स्यां स्वामीजी विराज्या । वरजूजी नाथाजी आदि सात आर्य्यां आर गाम थी आया । स्वामीजी में वदणा कीधी अनें बोल्या उतरवा न आयगा चाहिजे । जद स्वामीजी पात उठनें नजीक उपाश्रय जठ्या हुंता स्यां आर्य्या नें साथ लेयनें आया अनें बोल्या : ठेरे काइ भाया इण उपाश्र री आज्ञा देणवाला । जद एक भायो बोल्या म्हारी आज्ञा है । आर आयगां सूं कूची ल्याय नें ताला खोल कपाड़ खोल दिया । पछे माहै आर्य्यां न उतार नें आप पाछा ठिकाण पधारिया ।

ए समाचार नाथाजी रे मूहढ़े सुण्यां ज्यूं हीज लिखिया छै। आर्ज्यां नें कमाई खोलायनें न उतरणो इसी परूपे ते अजाण छै। आ तो गीत थी स्वामीजी बकारी है। ❀

१९०

खेरवारा भगजी दीक्षा नें त्यार थया। जद काका बाबा रा भायां घणो धर्मो कियो। इम कहै म्हांइ री आज्ञा नहीं। जद स्वामीजी फरमायो थांरी आज्ञा री जरुरत नहीं। पछै बड़ी बहिन री आज्ञा लेयनें दीक्षा दीधी। पछ त्यां घणा धर्मो कीधो। स्वामीजी रे मूंढा मूंढ भगड़ो घणो किनो तोइ कीधा पिण स्वामीजी कांइ गिनत राखी नहीं। पछै भगजी नें स्वामीजी पूछ्यो तोनें उवे पाछा लआवला तो तूं कांइ करेला। जद भगजी बोल्या पर में लआवेला तो म्हार ज्यारूं इ आहार नो त्याग है। स० १८५६ री ए बात छ। अनें पछ माठ चोमामो सिरयारी कीधो तिहां चोमासा में ते काका बाबा रा भायां घणे मोकलो किया। स्वामीजी न्याय मारग चालतां कांइ री गिनत राखी नहीं। ❀

१९१

दमूंगीवासा नाथूजी साध नें जीभ रा लालपी जाणनें पूग दूध दही मिष्ठान कढ़ाइ विग ग्यावारी मर्यादा माधी र बांधी स० १८५६ र वर्षे। ❀

१९२

वीरभाणजी नें स्वामीजी फरमाया : पन्ना नें दीक्षा देवारी आज्ञा नहीं। अनें जो दीक्षा दीधी तो आपां र आहार पाणी रा संभाग भला नहीं। पछै वीरभाणजी पन्ना नें दीक्षा दीधी। जद स्वामीजी आहार पाणी नों संभाग भाइ नाख्या। पछ इण्यां मावण स्मी विपरीत सरधा ए उन्या ❀

१९३

आगे सानार में दीक्षा दीधी। तथा थीरा कुंभारी में दीक्षा दीधी। समपग प्रतस्या महा तिणसं मदाजन विनां ओर नें दिक्षा देया री रुचि नहीं ❀

वा साध ओर भाछणाई हुंता दीसे है। यां नीकलियो रो लिगार अटकाव नहीं। पछे स्वामीजी उणानें अवगुण वाद बोलता जाण नें उणा रे लारे लारे विहार कीधो तिण सूं एक पण में मात मो कोरा आमरे वाछ्यों पड़्या। मेट पूरू सांड़ पधार्या। लेग्रां में कठेई टीप लागी नहीं। उणां होनां विहार करतां अनेक कूड़ कपट कीधा। जिण गाम आवता तिण गाम रो मारग सो न पूछता अनें दूजा गाम रा मारग पूछता कारण सार भीखणजी आवेला तिण मं। पाछे लारे सूं स्वामीजी पधारता अनें लोकां नें पूछता उवे किस गाम गया है। जद लोक कहे फलाणे गाम रो मारग पूछता हा। पछे स्वामीजी पोतारी बुधी सूं विचार में देखता उण गामरो मारग पूछ्यो है सा फलाणे गाम गया दिसे है सो तिण हिज गाम पाछो। जद साध कहता उवे सो ऊण गाम रो मारग पूछ्यो कहता था अनें आप अठि नें क्यूं पधारो। जद स्वामीजी फरमायो हूं जाणूं छूं उणारी कपटाई। ऊण गाम रो मारग पूछ्यो सो उण गाम नहीं गया अठिनें इज गया दिसे है। आगे जाय नें देखवा तो पैठा लाधता। अनें कदेइ गोचरी करता मिलता। साध देख में बड़ा आश्चर्य करता। आप बड़ी होडी। उवे लोकां रे मका धाले हे ठाम २ स्वामीजी मका मेट निमक किया। श्रावक श्राविका न सुध कर दिया। उणांने ओलखाय दिया। मोटा पुन्य बड़ो उद्यम किया। भलो जिन मारग दिपाया। पूरू कानी पधार्या जद आगे चत्रमाणजी तीलोकचंदजी पहिलां सिवरामदासजी नें संतोखचंदजी नें फटाय नें आहार पाणी भेला कर लियो। पछे स्वामीजी पधार्या जद सिवरामदासजी संतोखचंदजी स्वामी जी में आवता देखनें मत्थेन वंदामि कहिनें ऊभा थया। जद चन्द्भाणजी कह्यो आपां र थांरे आहार पाणी तो भेलो नहीं नें थें वंदणा क्यू कीधी। जद सिवरामदासजी संतोखचंदजी बोल्या। आपां रा गुरु है सो वंदना तो करस्यां इज। पछे उणां दोयां नूं स्वामीजी बात करनें समझाया। चंद्रभाण नें ओलखाय दिया। पछे स्वामीजी तो पाछा मारवाड़ पधार्या। मारा मूं उणां चंद्रभाण तीलोकचंद मूं आहार पाणी तोड़ दिया। उणां नें आलगा पिन लिया। बोल्या : यां नें जिमा स्वामीजी कहता था जिमाइ निकलिया। पछे सिवरामदासजी संतोकचंद जी वानूं सुनम

पणें रह्या। उवे दोनूं इ विमुख रह्या तो पिण स्वामीजी उणांरी गिणत राखी नहीं। इसा साहसिक पुरुष एकान्त न्याय रा अर्थी। ❀

१९६

सामजी रामजी पूरी रा वासी। भावगी जातिरा बद। दोनूं भाई वेकारा (ओडे जनम्या)। उणीयारो सूरत एक सरीखी दिसे। केलवे दीक्षा लेवा आया। तिहां सामजी दीक्षा लीधी सं० १८३८ रे वर्षे। पछे थोड़ा दिनां पछे नाथजी दुवारे में खेतसीजी स्वामी घणां वैराग सूं घणां महोच्छव सूं रंगूजी नें सतमी जी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी। जिन मारग रो उद्योत घणों थयो। पछे थोड़ा दिनां सूं राम स्वामी दीक्षा लीधी। खेतसीजी स्वामी सूं सामजी तो बड़ा अने रामजी छोटा। केलवे एक काले साम राम रो टोलो कीधो। त्यांरा विचरी नें स्वामीजी रा दरशण करवा विहार करने आवे। जद खेतसीजी स्वामी सामजी रे भोलें रामजी नें वंदणा करे एक सरीखो उणियारो तिण सूं। जद ते कहे हूं रामजी छूं साम जी तो उवे छै। इण मुजब घणी वार काम पड़यो जद स्वामीजी बुद्धी सूं कह्यो : रामजी में पहली खेतसीजी नें वंदना कियां करो जद खेतसीजी जाण लेसी छोटा थाकी रह्या तिके सामजी छै। इसी बुद्धी स्वामीजी री। ❀

१९७

कोटावाला दोलतरामजी रे टोले रा च्यार साध स्वामीजी भेला आया। वधमानजी १ बड़ो रूपजी २ छोटो रूपजी ३ सूरतोजी ४। तिण में छोटो रूपजी बोल्यो : मोन ठंडी रोटी न भावे। जद स्वामीजी आहार नीं पांती करतां ठंडी रोटी ऊपर एकर लाडू मेल दिया। कह्या : जे ठंडी रोटी लोवे ते लाडू री कोर रखा। उम्हीं रोटी लेवे तिणरे लाडू न आवे। जद अनुक्रमें आप आपरी पांती उठाय लीधी। कोइन पिण ठंडी उम्हीं बोलवारा काम नहीं। ❀

१९८

गाम खारड़ा में आमर ढ्य साधां सूं स्वामीजी पधारया। गाम में एक रजपूत रे बारो। तिहां बोध   आया सो भारामां हीं भी

छापसी ले आया। पछै साधां नें पिण छोकां कह्यो थारा मांहि थी और साध छापसी ल्याया सो थे पिण लेइ आवो। जद साधां कह्यो : म्हांनें तो थारा में आणो कल्पै नहीं। पछै साधां आयनें स्वामीजी नें समाचार कह्या जद स्वामीजी आप्यो पाछी जावा छां कोइ म्हारा नाम अणहुंतोइज ले लेवै। इम विचारी नें   कनें जाय पूछ्यो थें थारा मांहि थी छापसी ल्याया के नहीं ल्याया। जद उवै बोल्या : थें क्यूं पूछो थांरे म्हारे किसो आहार पांणी भेलो है। स्वामीजी बोल्या थेंई पाछी जावो हो अनै म्हेंई पाछी जावां छां सो ल्याया तो होसी थें अनें कोइ नाम लेवै म्हांरो इण वासतै पूछां हां सो म्हारा पात्रा तो थें देख लेवो अनें थांरा म्हांनें दिखाय देवो। जद वडकनै बोल्या : म्हे ल्याया ? नें फेर ल्याया। जद स्वामीजी बोल्या वडको क्यूं यूं हिज कह्यो नी म्हारै रीत है सो म्हे ल्याया। इम बुद्धि सूं साच बोलाय नें ठिकाणें आया।   ❀

१९९

स्वामीजी गोघा में हुंता दरजी रे गोचरी गया। जद दरजी बोल्यो : थांरा चेला काले गुल ले गया सो आज विन थांनै कल्पै नहीं। जद स्वामीजी ठिकाणें आयनें सर्वनें पूछ्या के काले दरजी रे घर सूं गुल कुण ल्याया। पिण सर्व नट गया। पछै स्वामीजी सर्व नें लेय नै दरजी रै घरे आया। दरजी नै पूछ्या गुल ले गया ते यांमें सूं किस्या है सो ओलखनै बतावो। जद दरजी जयमलजी रा चेलो रायचन्द बालक हुंता तिणनें बतायो। जद स्वामीजी तिण नें आण ल्यो एहिज गुल ल्याय में नट गया दीसै है। इम ठागा रो कूड रो उघाड़ कर दियो।   ❀

२००

पीपाड़ में   रा श्रावक मालजी स्वामीजी सूं चरचा करता स्वामीजी पूछ्या मालजी ! इम कायरा जीव खाव तो काइ हुवै। जद तिण कह्यो पाप है। वली पूछ्या खपायां कोइ हुवै। तिण कह्यो पाप है। जद स्वामीजी बोल्या : भारमलजी आदी साध नें तिरस्या मालजी पांणी पायो पाप कहै है। जद मालजी आपको बालका ठागा म्हें पाणी पायां

पाप कर कह्यो जद स्वामीजी बोल्या : पाणी झुकाया मांहें छै के बारै। जद बोल्यो ऐ ऐं-रै लिखल्यो मती २। इम कष्ट कर न चाल्यो रह्यो। ●

२०१

मिडारै स्वामीजी विराज्या तिहां   रा श्रावक आय प्रश्न पूछ्यो : भीखणजी किणही श्रावक सर्व पापरा त्याग किया तिणनें आहार पाणी बहिरायां कांइ हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : धर्म हुवै। जद उण कह्यो : थांरे तो श्रावक नें दियां पाप री श्रद्धा है थे धर्म क्यूं कह्यो। जद स्वामीजी बोल्या : थें पूछ्यो थो सो प्रश्न संभालो। श्रावक सर्व पापरा त्याग किया, जद तो श्रावक रो साध ईज थयो। ते साध नें दियां धर्मईज छै। ●

२०२

स्वामीजी   मांहि थी नीकळी नवा साधपणो पचखवानें त्यार थया। जद कनें साध था ज्यांरी प्रकृति देखी। भारमलजी स्वामी रा पिता किसनाजी ज्यांरी प्रकृति करड़ी हुंती। आहार बधता मंगावै। अधिकाइ री रोटी बधै सो उतरती लेवे नहीं। चाखी न देवे तो कजियो करै। जद बीलाड़ा में भारमलजी स्वामी नें कह्यो : थांरो पिता तो साधपणें लायक नहीं सो परहो छोड़स्यां। थांरो कांइ मन है। जद भारमलजी स्वामी फरमायो : म्हारै तो आप सूं काम है। आपरी इच्छा आवै ज्यूं कराइजै। पछै किसनोजी नें स्वामीजी कह्यो : थांरै म्हारै आहार पाणी भेळो नहीं। इम सुणी किसनोजी बोल्या : म्हारा बेटा नें ले जासूं। जद स्वामीजी बोल्या : ऊ न आवे तो थांरी इच्छा। जद जबरन भारमलजी स्वामी नें उणनें दूजी ठाम साथ नें चल्या। आहार पाणी त्याग में कराया लागो। जद भारमलजी स्वामी बोल्या : हूं तो न करूं। नित्य थांमें पिण करूं नहीं। तीजो दिन आया जद घणी मनुहार करवा लागा जद भारमलजी स्वामी कह्यो : थांरा हाथ रा आहार करवारा जावजीव त्याग है। पछै भीखणजी स्वामी नें आय सूंप्या। बोल्या : आ तो थांनूं इज राखी है। थां कनें इज राखो। बे नवी दीक्षा न लीधी है जितरै महाराज ठिकाणो बांधो। जद स्वामीजी

हेमाय नें खेमळजी न सूंप्या । जद खेमळजी बोल्या देखो भीखणजी री
बुद्धि । किसनोजी नें म्हानें सूंपतां तीन घर बधापणो हुवा । म्हें तो जाणी
म्हारै चेला पानें पड्या । किसनोजी जाणै म्हारो ठिकाणो थप्यो ।
भीखणजी सूंप्यै म्हारा दक्षिण थप्यो । पछै केतलै एक काले किसनोजी
आदि साथ साथ भारा माहीं थी छापसी ल्याय न चूकाय न विहार कीधो ।
मारग में तृषा घणी लागी । छापसी खायाड़ी अनें उन्हाले रा दिन । तृषा घणी
लागी सा सहन करी पिण काचो पाणी न पीधो । आऊखो पूरो कर गयो ।
भारा माहिं थी छापसी ल्याया सो तो उणां रा टोला री रीत है पिण
नेम में दृढ़ रह्यो । काल कर गयो पिण काचो पाणी पीधो नहीं । ❀

२०३

स्वामीजी कनें अथवा साधां कनें कोइ बखाण सुणवा आवै । त्यांनें
वरजै । जद स्वामीजी दृष्टान्त दियो । जिनरख जिनपाल नें
रयणा देवी तीन बाग तो बरज्या नहीं अनें दक्षिण नो बाग बरज्यो । भूंड
पाखी सप आकारा भय बतायो । बाप्यों दक्षिण रा बाग जासी तो मानें
खासी जाणस्यै । रागा रा उपाड़ दाय जासी । यूं जाणनें दक्षिण रो बाग
वरज्यो । ज्यूं बाइस टोला बारासी गच्छ तीन सौ त्रेसठ
पाखंड त्यांरे जातां तो विरोध न बरजै अनें शुद्ध साधां कनें जातां बरजै ।
कारण भीखणजी कनें गयां म्हांनें खोटा जाण लेसी । इण म्हारा श्रावक उरहा
रहसी तिणसूं बरजै । ❀

२ ४

तपा लोकां नें साधां सूं भिड़कावै । जद स्वामीजी बोल्या :
मातै भगू पुरोहित पिण बेटां नें भिड़काया । कह्या साधां रा विश्वास कीज्यो
मती । पाप कह्या थी बेटो पिण साधां न खोटा जाणें । पछै साधां सूं
मिल्या जद बाप नें खोटा जाण नें दीक्षा लीधी । जिम पिण साधां
सें खोटा कहै । पिण उत्तम जीव हुवै ते साधां री संगत करनें त्यांनें आछ्या नें
ठाय आवै । ❀

२०५

आछा २ खेत्र देखनें पाणें बेसे। अब स्वामीजी बोल्या : पाणें न बसे, खाणे बेसे है। असल पाणों तो अमीचंदजी रो सो सेंसाळीसे मारवाड़ में बिखो पड़्या अब दूजा ठाणांवाळा तो चोमासा में पगां २ विहार कर गया अनें अमीचंदजी तो चोमासा में पीपाड़ सू पयूषणा में भादवा बिद १४ नें रात रा बाजरी रा गाड़ा ऊपर बेसीनें गया। मारग में तृषा लागी जद काचो पाणी अणगळ पीधो। ते पिण आट रा हाथ रो। तिण सू खरो बाणों अमीचंदजी रो सो पगे न हाल्या। ❀

२०६

किणही स्वामीजी नें कह्यो थे अनें बाइस टोळा एक होय जावो। जद स्वामीजी पूछ्यो थे अनें आछी जाति गियारादिक भेळा हुवो के नहीं। जद ते बोल्यो : नहीं हुवां। जद स्वामीजी बोल्या तिम ह्विज म्हे अन ‑‑ भेळा न हुवां। आछी जात ते महाजन रे घरे जनम लियां हुज महाजन हुवे। ज्यूं ‑‑ ‑‑ नें पिण सम्यक्त्व साधपणों आयां हुज भळा हुवां ❀

: २०७

रा श्रावक बोल्या पडिमाधारी श्रावक नें सूजतो आहार पाणी दियां काइ हुय। जद स्वामीजी बोल्या : कोइ नें काचो पाणी पावे तथा मूळा ममाव तिण में थे काइ मरधा छा। जद ते बोल्या : म्हानें तो पडिमाधारी कोइज बतावो। चीजी बात में था म्हे न समझ्या। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो काइ बोल्या मोनें फीडी फू धुमा दिखायो। जद तिण नें पूछ्यो ता में हाथी दीस है क नहीं। जद ते बोल्या क हाथी तो मानें दीसे नहीं। जद तिण नें कह्यो हाथी पिण ताने न सूझ तो फीडी फू धुवा किम कर सूझसी। ज्यूं जीव बचाया में पाप ते पिण थे न जाणो तो पडिमाधारी नें असूजतो सेवायां पाप थाय किम जाणस्यो। आ परचो तो घणो झीणी है। ❀

२०८

केइ कहै पोथी आगणे मेलणी नहीं। पूठ देणी नहीं। पोथी पाना तो ज्ञान है। तिणरी आशातना करणी नहीं। जद स्वामीजी बोल्या पोथी पाना नें थे ज्ञान कह्यो छो तो पोथी पाना फाट गया तो कांइ ज्ञान फाट गया। अथवा पोथी पाना सिड़ गया तो कांई ज्ञान सिड़ गयो। पाना उड़ गया तो कांइ ज्ञान उड़ गयो। पाना बल गया तो कांइ ज्ञान बल गयो। पाना चोर ले गया तो कांइ ज्ञान नें चोर ले गया। पाना तो अजीव है। अनें ज्ञान जीव है। अक्षरां का आकार तो आरूपणी र वासते छै। पाना में लिख्या त्यारा जाणपणो ते ज्ञान है। ते आतमा छै। आपरै कनै छै। अनें पाना अनेरा छै।

२०९

गृहस्थां न कहै अनेरां न अन्नादिक दीधां पुन्य है तथा मिश्र है। जद गृहस्थ बोल्या थांरै आहार बध्या थ अनेरा न देवा के नहीं। जद ते कहै म्हें तो न द्यां। म्हांन कल्प नहीं। म्हें देवां तो म्हांरा साधपणों भागै। अनें थे अनेरा नें देवा तिणमें थांन पुन्य है तथा मिश्र है। तिण उपर स्वामीजी दृष्टांत दियो जिको वायरो वाज्यां हाथी उड़ जाय तो रूइ री पूणी क्यू नहीं उड़। अवश्य उडै इज। ज्यू साधू सू अनेरा ने दान देवा थी साधु रो व्रत भागै तो गृहस्थ नें पाप क्यू नहीं लाग। लागै इज।

२१०

हिंसाधर्मी कहै हिंस्या बिना धर्म नहीं हुय। वलि दृष्टान्त इम कहै। च्यार श्रावक था तिण में एक जणे तो अग्नि आरंभ रा त्याग किया। अनें एक जणे न कीधा। कांन् जणां पड्म पड्म रा पिणा लिया। मागन न कीधा तिण तो सचनें भूगड़ा कीधा। अनें मागन कीधा ते कांरा पिणा धाव राख्या है। इतरै मासखमण रै पारणै मुनिराज पधारया। मा जिमर त्याग नहीं तिण तो भूंगड़ा वहिरायनें तीर्थकर गोत्र बांध्या। अनें त्यागवाला घटा शुल्क जोय। क कांइ वहिरावै। इण न्याय हिंसा

री धर्म हुवे। अनें हिंसा बिना धर्म न हुवे। इम कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो दोय श्रावक हुंता। तिणमें एक श्रावक तो जाव जीव लगै शील आदर्यो। अनें एक जणें कुशील ना त्याग न किया। परणीजीया। पछै तिणरै पांच पुत्र थया। मोटा हुवा। धर्म में समझ्या। वैराग आयो। दोय जणांनें हरख सूं दीक्षा दीधी। घणो हरख आयो तिण सूं तीर्थंकर गोत्र बांध्यो। थे हिंस्या में धर्म कह्यो सो थारे लेखै कुशील में पिण धर्म ठहर्यो। हिंसा बिना धर्म नहीं सो कुशील बिना पिण धर्म नहीं थारे लेखै। इम कह्यां कष्ट थया। पाछो जाब देवा असमर्थ।

२११

कोइनें वैरी न करणो। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ई रे कोइ वैरी। जद संसार में तो कहै पेली उधारो। अनें धर्म लेखै ई रे कोइ वैरी तो कह पूछे नो कलछी बरछा। कलछी बरछा पुछ्यां जाप न आप जद आफई वैरी हुवे। ई र कोइ वैरी तो कहै काढ़ेनी लूंघणो। लूंघणों कांच्या आगलनें दागी लागै जद क्रोध में आयनें आफई वैरी हुवे।

२१२

भीखणजी स्वामी नें किणही कह्यो। आप तो पुजता हा। वर्षा में घणा हा मा पडिकमणा बठा इम करो। इतरी लद क्यां नें करा। जद स्वामीजी बोल्या : म्हें जो पडिकमणा बठा ? करां तो लारला सूका २ करबारा टिकाणा ह।

२१३

पुर मांहे स्वामीजी फरमायो दश प्रकार श्रमण धर्म। जद अमरचंदजी बोल्या महाराज! दश प्रकारे यति धर्म। जद स्वामीजी फरमायो भलांइ महात्मा धर्म कहामी।

२१४

कोइ साध धार उपयोग चूक पिण नीत में फरक नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो धान रा कुणका पडूयां हरजन किणही साध में

२१८

स्वामीजी कनै एक ब्राह्मण आयनें पूछ्यो थांरा व्याकरण भण्यां हो। स्वामीजी बोल्या म्हें तो व्याकरण कोइ भण्या नहीं। जब ब्राह्मण बोल्यो : व्याकरण भण्यां बिना शास्त्र ना अर्थ हुवै नहीं। जब स्वामीजी बोल्या : थें तो व्याकरण भण्या हो। जब ऊ बोल्यो हुं तो व्याकरण भण्यो छूं। थे शास्त्र नां अर्थ कर लेवो। जब ऊ बोल्यो : हुं तो शास्त्र नां अर्थ कर लेवूं। जब स्वामीजी पूछ्यो कयरे मग्गे अक्खाया इणरा अर्थ करो। जब ऊ ब्राह्मण बोल्यो : कयरे कहतां केर। मग्गे कहतां मूंग। अक्खाया कहतां आखा न खाणा। जब स्वामीजी बोल्या : ओ तो अर्थ आमो नहीं। जब ऊ बोल्यो : इणरा अर्थ किम छै। जब स्वामीजी बोल्या : कयरे कहतां किसा। मग्गे कहतां मोक्ष रा मार्ग अक्खाया कहतां तीर्थंकरे कह्या। एहनों अर्थ इम छै।

२१९

संवत १८४४ स्वामीजी ७ साधां सूं खरवे चौमासो कीधो। तिहां पजूसणां में कमक श्रावक गच्छ वास्यां कनें सुणवा गया। उपाश्रय वखाण सुणनें पाछा स्वामीजी कनें आया नें कहिवा लागा : स्वामीनाथ आज उपाश्रय वखाण सुणियो तिणमें इसी बात बांची : कुर्मापुत्र केवल ज्ञान ऊपना पछै ६ मास राज कीधो। पछै ७ साध ऊभा वंदना न करी। जब कुर्मापुत्र बोल्या : म्हांनें केवल ज्ञान ऊपनो छै नें थें वंदना न करो सो किण कारण। जब साध बोल्या : आप केवली हो पिण लिंग गृहस्थ रो छै तिण कारण आपनें वंदणा म्हें न कीधी। जब कुर्मापुत्र बोल्या : ठीक कही। भये जाणीयो। आ बात आज उपाश्रय सुणी सो सांची है कांई। जब स्वामीजी बोल्या : आ बात सांची जाणे जिणमें सम्यक्त्व नहीं। राज करै ते तो मोह कर्म रा उदय सी कर। अनें केवली मोह कर्म नें क्षय किया। सो केवली थया पछै राज किम करै। आ बात बांचणवाला में तो सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै। पिण थां सुणवा वाला री पिण संका पड़े है। इम कहे समजाय दिया।

२२० :

केलवा में नगजी आस्यां अणसम श्रावक हुवो। बुद्धि घणी कोइ नहीं। वीरभाणजी कह्यो म्हें नगजी नें समदृष्टी कीधो। जद स्वामीजी बोल्या : समदृष्टी आवै जिसी तो उणरी बुद्धि दीसै नहीं सो समदृष्टी किसतरै कीधो काइ सीखायो। जद वीरभाणजी बोल्या : ओलखणा दोहरा भव जीवां रा ठाठ सिखाइ। अनें एक नंदण मणीयारा रा वखाण सीखायो। पछै केलवे स्वामीजी पधार्या। नगजी नें स्वामीजी पूछयो तू नंदणमणीयारा रो वखाण सीखयो है सो ओ मणीयो लकड़ा रो है कै सोना रो है कै रुद्राक्ष माला रो है। जद नगजी बोल्यो : शास्त्र में चाल्या है सो मणियो सोना रो हुसी लकड़ा रो रुद्राक्ष रो कीकर हुसी। वलि स्वामीजी पूछ्या : रे नगजी सावधीयां न जड़ना चाल्या। सो ए धवीयां गाडुलिया लोहारां नी छोटी धवीयां है के बीजा लोहारां नी मोटी धमणि ते मोटी धवीयां है। जद नगजी बोल्यो : म्हांनें धवीयां बतानें हुवै महाराज शास्त्र में कह्यो है सो धवीयां मोटी हुसी। पछै स्वामीजी मन में जाण लियो सो बुद्धि बिना सम्यक्त्वी किम हुवै। वीरभाणजी सम्यक्त्वी किया केहता सो बात कची ठहरी। *

२२१

कनै काइनें रुपिया दिया उणरी ममता उतरी तिण रो धर्म हुवो। जद स्वामीजी बोल्या : किण रै बीस हल री तथा २ बीगां री खेती हुंती सो १ बीगा तथा १० हल री खेती किण ही श्रावक में दीधी तो उण रे लेखे या पिण ममता उतरी। ओ पिण धर्म तिणरै लेखे कहिणो। *

: २२२ :

पाली में हीरजी जती स्वामीजी कनै पधार्या जद मांहै २ आय। रूपी २ बात्यां पूछै। तिण री श्रद्धा हिंसा में धर्म १। सम्यक्त्वी नें पाप न लागै २। सब जगत रा जीव मार्यां एक समो संसार वधै नहीं ३। सब जीव नीं दया पाल्यां एक समो संसार घटै नहीं ४। होणहार हुवै सो हुवै

करणी रो काम नहीं केवली देख्यो जद मोक्ष पर हो जासी ५। इत्यादिक विरुद्ध श्रद्धा स्वामीजी कनै करै। जद स्वामीजी पाछो जाब दीधो नहीं। मारग चालतां न बोलणो जिण कारण। जद हीरजी बोल्या : म्हें थांरी विरुद्ध श्रद्धा थांरै पिण बेठी दीसे छ जिण सूं थे पाछो जाब दीधो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या कोइ मूंझ्यू रो भिष्टो खावो हो। साहुकार रिसां खावो सेहजै दृष्टि पड़ी देखनें मूंझ्यू रा बोल्यो : साहजी रो पिण मन हुआ दीसे छै। म्यूं थें पिण चाखो हो। पिण म्हा थांरी असुद्ध श्रद्धा भिष्टा समान जाणा म्हां सो मन करनइ चाखा नहीं। ❀

: २२३

एक दिन हीरजी प्रश्न विपरीतपणें पूछवा लागो। कहै मानें इणरो जाब देवो। जद स्वामीजी बोल्या कोइ भिष्टा सूं भरीयो ठीकरो लेइ आवो। कहै इणमें मानें घी तोल द्यो। सो असुद्ध वासण में घी कुण घाले। ज्यूं असुद्ध श्रद्धा विपरीत हुवे तिण नें सुद्ध जाब बतायां गुण दीसे नहीं। जिम सूं अबारू जाब न देयां। ❀

: २२४

वैरागी री वाणी सुण्यां वैराग आवे। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ज्यूं चो पानें गलै जद वस्त्र रै रंग चढावै। पिण ज्यूं चा री गांठ बांधे तो पिण वस्त्र रै रंग न चढै पोते न गल्यां विण सूं। ज्यूं शुद्ध श्रद्धा आचार वंत वैरागी साधु पोते वैराग में लीन हुआ औरां रै वैराग चढावै। ❀

२२५

केइ कहै साधु रा धर्म न्यारा नें गृहस्थ रा धर्म और। जद स्वामीजी बोल्या चोथा गुण ठाणा री अनें तेरमा गुण ठाणा री श्रद्धा तो एक छै। अनें फरशणा जुदी छै। काचा पाणी में अपकाय रा असंख्याता जीव अनें नीलण रा अनंता जीव चोथा सूं तेरमा गुण ठाणावाला सव सरधै परूपे। पिण फरशणा में फेर। चोथा पांचमा गुण ठाणा रा धणी तो पाणी रा आरम्भ करै छै। अनें साधु रै त्याग छ। ए फरशणा जुदी छै। हिंसा में पाप चोथा सूं तेरमा गुणवाला सव सरधे परूपे। इण लेखे सरधणा तो

एक। अनें श्रावक पांचमां वाला हिंसा करें छै अनें साधु रे हिंसा रा त्याग छै। ए कथणी जुदी छै। पिण सरधणा जुदी नहीं। श्रावक तेरमां गुणठाणा वाली री सरधा एक छ। तेरमां गुण ठाणावाला री श्रद्धा सूं फरक पड़्यां चौथा गुणठाणा रो पहले गुण ठाणे आय जावै।

२२६

रायपुर में स्वामीजी सालभद्र रो वखाण दीधा सो श्रावकां सुण नें घणां राजी हुआ। स्वामीनाथ आगे सालभद्र रो वखाण तो घणी वार सुण्यो पिण इम रीते तो आगे सुण्यौ नहीं। जद स्वामीजी बोल्या: वखाण तो उहीज है पिण कहिण वाला रे मूंहड़ा में फेर है।

२२७

किणही पूछ्यो पोसा वाला नें जागां दीधी जिणरो कांइ हुवै। जद स्वामीजी बोल्या: उण कह्यो म्हारी जागां में पोसो करो इम कहिण वाला नें धर्म। जद फेर पूछ्यो जागां दीधी जिण में कांइ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या: जागां किसी आघी दीधी है। जागां में पोसा री आज्ञा दीधी जिण रो धर्म है। जागां तो परिग्रह मांहि छ ते सूंप्यां सेवायां धर्म नहीं। सामायक पोसारी आज्ञा देवै ते धर्म है।

२२८

कोइ कहै सामायक में पूंजनें खाज खणे तो श्रावक नें धर्म है। बिना पूंज्यां खाज खणें तो पाप लागे। जद स्वामीजी बोल्या: कीड़ी माछर सामायक में चटका दियो ते चटका काया रे दिया के सामायक रे दियो। जद तिण कह्यो: चटका काया रे दिया। जद स्वामीजी बोल्या: पूंज नें खाज खणे है सो आवता सामायक रा करे है के काया रा करे है। जद उण ऊंधी श्रद्धा सूं कह्यो आवता सामायक रा करे है। जद स्वामीजी बोल्या: खाज न खणतो तो ही सामायक रा आवता तो अपूरा घणां हुता। जे बिना पूंज्यां खाज खणवारा त्याग। जो पूंजे नहीं तो खाज खणणी नहीं। खाज न खणे तो मछरादिक ना चटका सह्यां निर्जरा घणी हुवी। तिण सूं सामायक घणी पुष्ट हुवी। तिण कारण पूंजे सो

सामायक रा आवता रे अर्थे न पूंजे। अनै जे पटको काया रै हिमो पिण सामायक रै न पियो इम तो तेहिज करै। तो काया रा आवता रे अर्थे शरीर पूंजे न खाज खणे छै। पिण सामायक रा आवता रै अर्थे पूंजै नहीं। जे अढाई द्वीप बारला तिर्यच श्रावक सामायक पोसा करै ते किसी पूंजणी राखै छै। अनें सामायक रा आवता थी त्यांरै पिण तीखा छै। अजैणा न करै ते हीज सामायक रा आवता छै।

: २५९

पोसा में श्रावक कोइ तो वस्त्र घणा राखै कोइ थोड़ा राखै। घणा राखै जिण रै घणी अव्रत। थोड़ा राखै जिण रै थोड़ी अव्रत। जद कोई कहै पोसा में पडिलेहण न कर तो उणनें प्रायश्चित क्यूं देवै। जद स्वामीजी बोल्या : पोसा में अण पडिलेह्या उपगरण भोगवण रा त्याग। तिण पडिलेह्या तो नहीं अनैं भोगव्या जिण लेखै त्याग भागा। तिणरो प्रायश्चित आवै। पोसा में पिण शरीर अव्रत में है। ते शरीर नी साता रै अर्थे वस्त्रादिक भाषा पाथा पूंजणादिक करै ते सावद्य छै। जे वस्त्र राख्या जिणरो पडिलेहण न करै अनै न भोगवै तो विशेष कष्ट उपजै तिण सूं पोसो अपूठो पुष्ट हुवै। ते कष्ट सहिण री समर्थाई नहीं, तिण सूं वस्त्रादिक पडिलेही भोगवै छै। जिम कोइ रै अण छाण्यो पाणी पीवा रा त्याग। हिवै ते पाणी छाणै ते पीवा रै वासतै पिण दया रै वासतै नहीं। नहीं छाणे तो दया अपूठी चोखी पाळै। ते किम। जे न छाणे जद पीणो नहीं। ते अणछाण्यो पीवारा तो त्याग अनें छाणै नहीं तो पीणो पडै नहीं। इण वासतै जे छाण ते पाता री अव्रत सेवा रै वासते छाणै। तिण में धर्म नहीं।

२६०

केई कहै श्रावक री अव्रत सीच्यां व्रत वधे। तिण ऊपर कुहेतु लगावै : नींवरा रूंख में आंबो रूंख लग्या। नींब री जड़ीयां में पाणी सींच्यां नींबन आंबो दोनूंई प्रफुल्लित हुवै ज्यूं श्रावक री अव्रत सींच्यां व्रत अव्रत दोनूं वधे। जद स्वामीजी बोल्या : इम अव्रत सींच्यां व्रत वधे तो तिण रै लेखे

श्रावक स्त्री सेवै तिण पिण अव्रत सेवी तिण सू व्रत पुन्य हुवै। तथा नीवरी जड़ीया में अग्नि न्हास्या दोनू चलै ज्यू किणहि जावजीव शील आदर्यो तो अव्रत टाली तिण रै लेखै व्रत अव्रत दोनू चलै। तथा गृहस्थ ने पारणो करायां अव्रत सीची तिण सू व्रत घघती कहै तो तिण रै लेखै उपवास करायां अव्रत सूकां व्रत पिण सूक जावै। इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्यां सेवायां अव्रत सींची तो उण र लेखै व्रत पिण वधती कहिणी। तथा हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह रा त्याग किया करायां अव्रत सूकै तो तिण रै लेखै व्रत पिण सूकी कहिणी। ॐ

२३१

कई कहै सावद्य दान में पुन्य पाप मिश्र न कहिया तिण सू सावद्य दान में मूंई मून राखां। जद स्वामीजी मुनी रो दृष्टान्त दियो। ज्यू एक मुनी गाम में आयो। सार्थ मोकला बेठा। आटा घी गुल मूंहढा सू बोलन तो मांगे नहीं पिण सानी करनें मांगे। आंगुलियां ऊंची करै इतरा सेर आटो इतरा सेर घी इतरी दाल इतरा गुल। जद गाम रा चोदरी पटवारी आछो आमें जद चला नें हुंकारो करनें घर हाटां रा पैस पाड़ावै। जद लाक बोल्या

मुनि मून पारसी मपे हुंकारे पट कप्या हपे।
अप बोल्यांई छदम करे, तो बोल्यां कहो कांइ गति करे॥

स्वामीजी बोल्या : जिसी उण मुनि री मून जिसी सावद्य दान में थांरै मून है। मूंहढा सू तो मून कहिवा जाए पिण श्रावक श्राविका नें जीमायां पुन्य मिश्र री थापना करै। साहूमां री दया पलावा री थापना करै। ॐ

२३२

पाले हाथ ना कमाइ अड़ उपाड़ अनें गृहस्थ ग्यासनें दबे ता लप नहीं तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दिया जिम काइ मानवी पर गाम जातां भंगी भीट लियो। उमनें पूछ्या तू कुण। जद तिण कह्यो हूं भंगी छ। जद तिन कह्यो म्हारो आखो भीट लियो। इम कहितां मांडो मांहि

गाढि राति बोलतां पगोथम आय गया। भगी ऊपर आय बैठो। भगी कहै मान छोड़। जद ऊ कहै छोड़ूं नहीं। जद भगी कहै तूं कहै ज्यूं करूं मोनें छोड़। जद ऊ बोल्यो थारी स्त्री कनै चौको दराय कोरा घड़ा में पाणी मगाय महाजन रा हाट सूं आटा लेई इसी री इसी राटी कराय देवै तो छोड़ूं। जद भगी कबूल करी। ज्यूं कह्यौ तिण रीते स्त्री कनें राटी कराय दीधी। जे समजणो हुवै ते उणनें मूरख जाणै। जे भगी री सीधी तो न खाधी नें भगी री कीधी खाधी तिण सूं उणनें विवेकरो विकल जाणै। ज्यूं गृहस्थ कमाइ खोलनै देवै ते तो लेवै नहीं अनें अंधारी रात्रि में हाथ सूं कमाइ अनें उमाड़ै तिण री संक आणै नहीं। ❀

२३३

केई कहै कारण पड़ियां साधु नें असूझतो लेणा। अनें श्रावक नें पिण अल्प पाप बहुत निरजरा है। जद स्वामीजी बोल्या : रजपूत रो बेटो समाम करतां न्हास जाय ते सूर किम कहीये। तिण ने राजा पटो किम खावा द। लोकीक में आबरू किम रहै। भूंडो दीसै। ज्यूं भगवंत रा साधु बाजै नें कारण पड़ियां असूझता दियां अल्प पाप बहुत निरजरा कहै असूझता री थाप करै ते इहलोक परलोक में भूंडा दीसै। ❀

२३४

हलुकर्मी जीव खोटा गुरु छोड़नें साचा गुरु करै। जद सभा त्यांरा रा श्रावक कहै : पाली में विजैचंद पटवो रुपीया देईनें श्रावक कर है। जद स्वामीजी बोल्या : थांरा श्रावक रुपिया साटै परहा जावै जद उणां थांरो मारग क्यांई ओलख्यो। अनें रुपिया साटै ए समझ्या कहो तो बाकी रा पिण रुपिया साटै परहा आवा दीसे है। इण लेखै थांरो मारग उणां ओलख्यो नहीं। ❀

२३५

सावद्य दान देव लेव ते वेलां साधु नें पूछें तो वर्तमान काल में मून राखणी तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : हलवाणी रा छहड़ा दामू

सातां किसोयक अनर्थ कीधो हुवैला। जद मानो स्वामीयो बोल्यो म्हारे साथे धर्म पाखेक रो सावरी थो सो उणनें सो हाथ पकड़ उठाय दियो। काले ओ कीसो उपवास करेलो इम कहि सावद्या नै उठाय दियो। जद स्वामीजी बोल्या थें तो इसो आहार कियो है सो स्त्रीयादिक थी अकार्य ही कर उभो रहै अनें सावद्यो सो इसो काम करतो नहीं। सा तो दोनें पोप्यों ने उण न उठाय दिया सा इसो थांरा धर्म ने इसी थांरी क्या है। *

२४०

भीखणजी स्वामी रुघनाथजी कनें घर छोड़वा त्यार थया। जद स्वामीजी री भूआ बोली। दीक्षा लीधी तो हूं कुवारी वायनें मर जासूं। जद घर में छतां स्वामीजी बोल्या : पूणी नहीं है सो पेट में घालै। कुंवारी घणी करली है मा इसी बात क्यूं करै। *

: २४१

करै मद ? टोला एक हो। अनें भीखणजी न्यारा है। जद किणही कह्यो थारे माहों माहिं बणे नहीं नै भीखणजी सूं चरचा रा काम पड़्यां एकै क्यूं थावो। जद बोल्या रजपूता रे मायां ? रे तो माहों माहिं बणे नहीं पिण धार में कादयां सब एकै होय जावे। ए बात स्वामीजी सुणी ने दृष्टांत दियो। गाम रा कुत्तारे माहं माहिं तो कजियो। उण गाम रा कुत्ता दूजा गामवाला में आवा द नहीं। दूजा गामवाला स्वान उण गामवाला नें आवा द नहीं आपस में माहों माहिं कजिया घणा कर। अनें हाथी नीकल्यां मगला भेला हाय नै भूसवा लाग जावै। त्यां स्वान र माहों माहिं कद एको थो। पिण हाथी री बेला सब एकै होय जावै। इसो स्वान रो स्वभाव। क्यूं माहों माहिं वर्वे तो उणां री मदा खामी कद। जद उणां री मदा खामी करै। माहों माहिं अनेक बातां रा फर आपस में फ्यक माप पिण न मराचे। अनै माधां सूं चरचा रा काम पड़े जद स्वान ज्यूं एकै हाय जावै।

२४२

मारवाड़ टाला में केयक रा लाल बासी ठडी राटी में बेंद्री जीव कह।

म्हानीं सी एक टोपसी।
माहें घाल्यो सपेतो।
जल धमाकर राखजो।
नहीं तो पड़सा रेतो ॥१॥

ए गाथा जोड़ता बोल्या : यूं जोड़ा म्हां। जद प्रतापजी सुणनें घणो राजी हुओ।

: २४५ :

श्री जी दुवारा में रूपना रै मर्थ एक दादुपंथी आयो। स्वामीजी रो बखाण सुणनें घणो राजी हुओ। सुणतां २ एक दिन स्वामीजी नें कहै। आप श्रावकां नें कह्यो सो मोनें सातो उपजावै। जद स्वामीजी बोल्या : श्रावकां नें कहिन तोनें जीमावो भावै पात्रा माहिं थी काढन देवो। गृहस्थ नें कह्यो हुवै तो गोचरी बधसी बाहिरनें ईज तोनें पराही देवा। जद दादु पंथी बोल्या : तो थारे श्रद्धा लोकां नें बरजवारी नें कहिवारी है। जद स्वामीजी बोल्या :। देवा नें ना कह्या भावै थारो जोसस्यो। पछै दादुपंथी चाल्यो गयो।

: २४६ :

पोता नीं महिमा बधारवा बल सूं बोलै ते ओलखायवा अर्थे स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही बेलो कियो। ते आप रो बेलो बाबा करवा उपवास बाला रा गुण कहै : सूं धन है सो इण करली ऋतु में उपवास कियो है। जद उपवासवालो बोल्यो : म्हें तो उपवास ईज कियो है। पिण थे बेलो कीधा है सो थांनें धन छ। इम बल वचन करी आप रो बेला बाबो करै ते मानी अहंकारी जाणवो।

: २४७ :

रुपनायजी री मा पिण घर छोड़नें त्यां में भेप लियां हुती। सो सील में कारण पड़्या। जद रुपनाथजी बोल्या : भीखणजी संसार रै लेखै म्हारी मा नें दरसन दीजो। जद स्वामीजी दर्शन देवा गया। थानक आयनें आर्यां नें पूछ्यो। जद आर्या कह्यो : उवे तो गोचरी गया। जद

स्वामीजी पाछा आया। जद रूघनाथजी कह्यो थें दरसन दिया। जद स्वामीजी बोल्या : किसी ठीक। किण मेड़ी ऊपर गोचरी करै। सो हूं रू दरसन द्यूं। आ बात टोला माहि प्रकट नी छै। ❀

२४८

केइ हिंसाधर्मी कहै : एकेंद्री विचै पंचेंद्री रा पुन्य घणा तिणसूं एकेंद्री मार पंचेंद्री बचायां धर्म घणो हुवै। जद स्वामीजी बोल्या : एकेंद्री थी बेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। बेंद्री थी तेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। चउरेंद्री थी पचेंद्री रा पुन्य अनंत गुणा। अनें कोई पंचेंद्री मरतो हुवै तिणनें पइसाभर लटां खवायनें बचायो तिणनें धम हुवै के पाप हुवै। इम पूछ्या जाब देवा असमर्थ थया। स्वामीजी बोल्या जिम बेंद्री मार पचेंद्री बचायां धर्म नहीं तिम एकेंद्री मार पंचेंद्री बचायां धर्म नहीं। ❀

: २४९

हिंसाधर्मी इम कह्यो : आचार्य उपाध्यायादिक बड़ो साध हुंता ते विषय रा पाड्या गृहस्थ होयवा लागो। जद कोई श्रावक आपरी बहिन बेटी सूं अकाय करायनें पाछा थिर कीधो। तिण रा बड़ो लाभ हुवो। जद स्वामीजी बोल्या थांरा गुरु भ्रष्ट हुंता हुवै तो थांरी बहिन बेटी सूं इसो काम करावो के नहीं ? जद ते बोल्या : म्हें तो इसो काम न करावां। जद स्वामीजी बोल्या : थें इण बात रो धम कहो तो इसा काम क्यूं न करावो। थें इसो काम न करावो तो बीजारे बहिन बेटी किसरे रूंखड़ूं पड़ी है। इसी कुधी परूपणा तो कुशीलिया कुपात्र हुवै सो करै। ❀

२५०

अठाई मा खमा आदि तप पूरा थयां पछे भाप ¤ री सामग्री में लाडू दराव छै। जद स्वामीजी बोल्या ¤ आपरै मुलक लाडू दरावै छै। जाणे म्हांनें कहिराबसी। जद किणही कह्यो स्वामीनाथ ¤ लाडू किसा मगमाह बहिर छै। जद स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहुकार री बेटी परणीज सद चंवरी में बाह्मण वेद पाठ भणता पाता री डावरी करे थी

करे तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही मालूकार रे हाटे गराक घणा। मील धणी इसनें पाडासी देषाल्यो तिणनें गमें नहीं। आप्यौ इम र खरी मील था हूँ पिण मनुष्यां नें भेला करू । इम विचार कपड़ा न्हाक नागा हूआ। नाचवा लागो। मनुष्य तमासा देखवा घणा भला हुआ। जब आ मन में राजी हूआ। ज्यूं साधां कनें परिषदा देख नें तथा त्यांरा भायका नें गमें नहीं जद ते पिण कदाग्रह करे। मनुष्य भेला करे ॐ

२५३

सवत १८५५ पाली चौमासे खेतसीजी स्वामी र कारण ऊपनो रात्रि दिशा रो व्याधी गो। जद स्वामीजी हेमजी स्वामी नें जगायनें खेतसीजी स्वामी रसते पड्या सो आप सांप पकड़नें ले आया। स्वामीजी बोल्या संसार नीं माया काची। खेतसीजी सरीषो यूं हाय गयो। पछे खेतसीजी स्वामी नें सुवाणनें सिराणा माहि बी नषी पछेवड़ी काढनें ओढाय दीधी। थोड़ी वेला पछ सावचेत थया। मूंहडे बोलवा लागा। जद कह्यो : आप रूपांजी नें आशीर्वाद मणायजो। जद स्वामीजी बोल्या तूं तो भगवान रा स्मरण कर। रूपांजी री चिंता क्यां नें करे। पछे खेतसीजी स्वामी रा पिण कारण मिट गयो ॐ

२५४

सुपात्रदान री कला सीखावया ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : किणही गाम में साधां चौमासो कीधो। एकांतर गृहस्थ रे अंतराय तुटे तो दाय महिना लाग मिल्यां पातरे २ पाव २ घी वहिरावे तो चौमासा में १५ सेर रे आसरे थयो। ४।५ रुपिया रे आसरे थया। तिण में रसायण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बंधे। काई अनंक भव छेदकर दबे। अनें छकाय रा प्रतिपाल करे। साता ऊपजे। अने गृहस्थ रे आरा सामर में व्याह में अनक रुपिया लगावे तिण में पांच रुपिया तो कठीने जावे। ए रीत भायलां में तारवा मणी स्वामीजी दीधी। ॐ

: २५५

किणही साहुकार मारो कियो। घणा गाम नेहत्या। लोक जीमता कायक बारखानों घट गयो। जद पर गाम रा आया त तो जीम्यो नहीं तो पिण कहै म्हारा जगारा है सो घटताइ आया है मधमाई आया है। वली बेहिज कहै घणी घी घणी घणै जीमसी काइ कारण नहीं। अनै एक जणो सण साहुकार रा बेटी बाजार में आय गहरा ऊपर तो छोटे है अनैं मूंढा सूं कहै मारो बिगड्यो रे बिगड्यो। जद किणही पूछ्यो कारियावर में गुल गालणा में तो थोई सैमल हुइ हुसो नें बारखानो घण्यो क्यूं ? जद ऊ बोल्यो : नहीं सा। म्हानें पूछ्यो ही कदी। म्हांनें पूछ्यो हुवै तो बारखानो घटै इज क्यूं। अनै मारो बिगड़ै इज क्यूं। जद मढि उण नें पूछ्यो थे जीम्या के नहीं। जद ऊ बोल्यो : मैं तो आछीतरै जीम लिया। पहिलाइ जाणता था। इणरै बारखानो घटतो दीसे है। तिवै स्वामीजी बोल्या : इसा पूतला कुपात्रां नें पोख्या सो मारा काइ बिगड़ै बापरा रो जमारो बिगड्यो दीसै है।

: २५६

आमेट में पुर रा बाइ भाइ बांदवा आया। त्यां चरचा करतां पूछ्यो ६ पर्याय १ प्राण जीव के अजीव। जद कोइ तो जीव कहै। कोइ अजीव कहै। इम आपस में ताण घणी करवा लागा। पछै स्वामीजी नें आय नें पूछा कीधी : महाराज ६ पर्याय नें १० प्राण जीव के अजीव। जद स्वामीजी बोल्या : जिण चरचा में मर्म हुवै ते चरचा करणीज नहीं ओर ही घणी चरचा है। इम कही समझाय दिया। ताण मेट दीधी

२५७

मसार नो भाइ ओलखामणा स्वामीजी दृष्टांत दियो। काइ परण्यां पछै बाल अवस्था में आउखो पूरो कर गयो। जद लोक में घणो भयंकार मच्यो। लोक हाय हाय करता कहै : बापरी डोकरी रो काइ घाट हुसी। बापरी १० वर्ष री रांड हुइ सो आ दिन किम रीत सूं काटसी। इम विलाप

करै। स्वामीजी बोल्या : लोक तो जाणे ए दया करे है पिण एतो उणरा कामभोग बांछे है। जाणे क जीवतो रह्यो हुंतो तो इम रै २।४ डावरा डावरी हुंता। आ सुख भागवती तो ठीक इम बांछे पिण या न जाणे आ पया कामभोग भोगवती माठी गति में जाती। जिणरी चिंता नहीं तथा क किसी गति में गयो तिका पिण चिंता नहीं। ज्ञानी पुरुष हुवै ते तो मरण जीवण रो हर्ष सोग न आणे ❀

२५८

हेमजी स्वामी घर में था जद एक बहिन थी तिण में मामो आय मोमाले ए गयो। हेमजी स्वामी चिंता करवा लागा। भीखणजी स्वामी कनें आय कह्यो : स्वामीनाथ आज तो मन उदास घणो। बहिन री मन में घणी आवै। समसार छार मेलनें पाछी घोलाय ल्यूं मन में ता इसी आवै। जद स्वामीजी बोल्या : इसा संसार नों सुख काचा। संजोग रो विजोग पड़ जाय। शारीरिक मानसिक दुःख ऊपजै। उठे भगवान मोक्ष रा सुख सास्वता थिर कह्या है। उठै सुखां रा कदइ विरहो पड़ै इज नहीं। ए स्वामीजी रा वचन सुणनें सतोष आय गयो। ❀

२५९

एक आर्यां पाली में चरो कियो। पछ पारणा री आज्ञा मांगनें आगा वाला रा घर सूं दूजे दिन पारणो करवा सापमी आणी। स्वामीजी में दिखाइ। पछै स्वामीजी विचार्यां ने पूछ्यां थे चढा किया सा इम सापमी र वास्ते इज न कीधां है। साच वाम। जद आर्या बोली : स्वामीनाथ मन में भावना रही। जद स्वामीजी आर साध मापम्यां नें आगा रै दूजे दिन आणी परत दियो। आपाय कनें साध साध्वी स्यारी वरजणा न कीधी ❀

२६०

संवत १८५० स्वामीजी पुर चौमासा कीधा। काजवाला आपता जाग में स्वामीजी विहार करवा लागा। जद भाया बोल्या : आप विहार क्यूं करो। जद स्वामीजी बोल्या : म्हांरै अठै भाजावालो चौमासा कीधो।

में बुद्धिहीण। ज्यूं केई आपरी माया रा आप ही अजाण। त्यांनें केवली भाष्या धम री ओळखणा किण तरै आवै। ❀

२६३

साधु गोचरी में आहार मगायां सू वधतो ल्यायो। जद स्वामीजी पूछ्यो : आहार वधतो क्यू आण्यो। जद ऊ बोल्यो : जोरावरी सू नाख दियो। जद स्वामीजी बोल्या : जोरावरी सू माठो न्हांखै तो लेवो के नहीं। ❀

२६४ :

एकेंद्री मार पचेंद्री पाल्यां लाभ है इम किणहि कह्यो। जद स्वामीजी बोल्या : थारो अंगोछो किणहि खोसनें ब्राह्मण नें दियो तिण में लाभ है के नहीं। अथवा किणहि रो लाडो खोसनें छूटाय दियो तिण में लाभ है के नहीं। जद कहै : ओ तो लाभ नहीं। धणी रा मन बिना दीधो तिण सू। जद स्वामीजी बोल्या एकेंद्री कद कह्यो म्हारा प्राण लूंटनें ओरां नें पोखज्यो। इण न्याय एकेंद्री नी चोरी लागी तिण सू लाभ नहीं। ❀

२६५

दुख आयां लोक विलापात करै तिण ऊपर स्वामी जी दृष्टांत दियो : किण ही साहुकार गोहां रा कोठा भर्या। ऊपर घर लीपने तीका किया। एक पड़ोसी तिण पिण कोठा में धूळ नाख ऊपरो म्हासने घर लीपनें ऊपर साफ कीयो। गोहां रा भाव आया। एक ? रा दोय २ हुवै। साहुकार कोठो खोल बेचवा लागो। पाड़ोसी पिण गोहां री साई लेइ गराक लावे त्याय कोठो खोल्यो। मांहै नाख नीकल्यो। रोवा लागो। देखा देख लाग पिण रोवा लागा। देखो बापरा रे गोहूं बाहीजै नें नाख नीकल्यो। इम कहि रोवा लागा। जद किण ही समझणे पूछ्यो : अरे थें मांहै घाल्यो कांइ था। जद रोवतो बोल्या मैं घाल्यो तो धो

दीसै थो। जद ऊ बोल्यो : थास्यौं लारा तो गोहूं कठासूं नीकलसी ? ज्यूं जीव जिसा पुन्य पाप बांध्या तिसा उदय आवै। विलापात कियां कांइ हुवै। ❀

: २६६

पलासाण रा कुंभारसिंहजी ठाकुर, त्यां कनै रुघनाथजी आय बोल्या : म्हारै पेलो मीखन है सो बकरा बचायां पाप कहै है। दान दया उठाय दीधी। जद स्वामीजी आय बोल्या ठाकुरां कसाई रा घर नों पाणी साधु नें लेणो के नहीं। जद ठाकुर बोल्या : कसाई रा घर नों तो साधु न लेणो नहीं। जद स्वामीजी बोल्या इणां नें पूछो ए लेवै के नहीं। जद रुघनाथजी ऊठ नें चालता रह्या। ❀

२६७

गूदोच में रुघनाथजी स्वामीजी सूं चरचा करतां आवसगसूत्र खोलनें बतायो। ओ देखो काउसग मांगनेई उदरा ने मिनकी कनां सूं छोडाय देणो। जद स्वामीजी त्यां रा टोला मांहें थकां सं० १८११ रा साल रो आवसग काढ बतायो। ओ थांरा देखा दस लिख्यो। तिण में तो ओ अर्थ कोइ मंड्यो नहीं। जद रुघनाथजी बोल्या : मैं तो और नी देखादेख ओ अर्थ घाल्यो है। जद स्वामीजी बोल्या : इसा झूठो अर्थ घालणो कठे है। पछै पोथीयां बधणीयां बाळी म्हारा पात्रा में ऊन्हो पाणी ल्यौ इण में पाना परहा गालो। जद रुघनाथजी ने घणो कष्ट थयो। जिन मारग रो उद्योत थयो। घणा लोक समझ्या। ❀

२६८ :

स्वामीजी सूं कोइ चरचा करतां सुरै मध्दा रा बोल बेठा तो पिण बोल्यो : आप कह्यो सा बात ता ठीक छै। पिण केइ बोल पूरा भाव में आव नहीं। जद स्वामीजी दृष्टान्त दियो। दस सेर पाबड़ा रा घर पूड़ा ऊपर चढ़ाया ऊपरला चाल्या सीम्या हाथ सूं देख्या सा सेणा हुवत ऊन्दा पिण सीग्या जाण अनै मूर्ख हुवै ते जाणै ऊपरला तो

सीम्या पिण इंठै कोरा नहीं। इम विचार हेठै हाथ घाले तो हाथ चले। ज्यू चतुर हुवै ते मुदै बोल बेठा जाणै बीजा बाल पिण साचा ईज हुसी ॥

२६९

स्वामीजी सूं चरचा करतां न्याय निरणो बतायो पिण मानै नहीं। जद स्वामीजी बोल्या किणहि रोगी न वेद ओषध पावा लागा कहै ओ ओषध पी जा रोग जातो रहसी। जद रोगी बोल्यो : मूं हलक में तो घालूं नहीं। म्हारा मोरां में कूट दो। ओषध चोखा है तो मोरां में कूट्यांई रोग परहो जासी। जद वेद बोल्यो : पीयां विना तो रोग न जाय। ज्यूं सूत्र रा वचन साचा रो वचन सरध्यां मिथ्यात्व रूप रोग जाय। पिण सरध्यां विना कोरा सुणीयां न जाय। ॥

२७०

सं० १८५४ र वर्ष चदूं बीरां नें टोला बारे काढी। जद पीपार में भायनें हमजी स्वामी विराज्या तिण हाट घणा रा श्रावक सुणतां साध साध्या रा अवगुणवाद बोलवा लागी। जद कोफ बोल्या : या दस्यो थांरा टोला माहें हुती सो अब भीखनजी रा टोला रा अवगुणवाद बोले है। जद स्वामीजी सामली हाट सूं ऊठन पधारनें बोल्या आ कहै तिण रा थे साच मानो हो तो आ आगे रूपनाथजी रा टोला में फतूजी री चली हुती। जद फतूजी रे माथे दोष रो मेंजर पड्यो। जद पाछी सा मा चंदूजी पूं कहीती थी मूर्ख में स्नेह हुवै तो म्हारी गुरणी में स्नेह हुवै। पछे इण हिज बाई रा आठवा रा चासरा कपड़ा आप गुरणी न ओढायन नवी दीक्षा दराइ तिका या है। ए स्वामीजी रो वचन सुणनें साध श्रावक २ बीखर गया। चंदूजी पिण पाछली रही। तिण रा घाव बिजेचन्द पटवा आदि न्यायीला पिण तिण न अजाण जाणी। ॥

२७१

फर कांई कहा पगी ना पिण रा संग छाड़ै नहीं। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। गाड़ा रा बाटू पीलां रे बीच में घुमवे पर

कियो। गाड़ा आतां आवतां माथा में इसी री लागे। तो पिण ठिकाणो छोडै नहीं। इणरे पूछै मुसलै कह्यो : अठै माथा में लागै सो या जागां पराही छोड़। जद मुसलो बोल्यो : सैंहदी जागां छूटै नहीं। ज्यूं साधो भद्रा री रहिस बैठी तो पिण आगला सैंहदा कुगुरु त्यांरो संग छोड़ै नहीं। ●

: २७२

सं० १८५५ पाली में हेमजी स्वामी टीकमजी सूं चरचा करतां एक भेसरी बोल्यो : सर्प ने च्यार पइसा देई कालबेल्या कना थी छुड़ायो तिण रो काइ थयो। जद टीकमजी बोल्यो : चोखो धर्म थयो। जद ऊ भेसरी बोल्यो : ते सप पाधरो ऊदरां नें बिल में गयो। जद टीकम जी बोल्यो : माहि ऊदरो हुसी नहीं थो। ए बात हेमजी स्वामी स्वामीजी ने आय कही। जद स्वामीजी बोल्या : किणहि कागला ने गोली वाही। कागलो उड़ गयो तो कागला रो आउखो ऊभो। पिण गोली वावणवाला ने तो पाप लाग चूको। ज्यूं साप छोड़ायो ते साप ऊदरां सा बिल में गयो। माहि ऊदरो नहीं तो ऊदरा माथे भाग। पिण सर्प नें छोड़ावण वालो तो हिंसा रो कामी ठहर चूको। भीखणजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यो इसो जाब देणो। ●

: २७३

हेमजी स्वामी दीक्षा लेइ दशवैकालिक सीख्या। पछै उत्तराध्ययन सीखबा लागा। जद स्वामीजी बोल्या : बखाण सीख। कठकला है तिण सूं। मुझै उपगार तो बखाण रो है। मीठा पुरुषां रे इसी उपगार नी नीत। ●

: २७४ :

हेमजी स्वामी नें भारमलजी स्वामी कह्यो : म्हैं टोला वाला माहि थी नीकल्या। जद केवला एक वर्षां तांई चौमासा में अंबला देवकी रो बखाण तीन ७ बार बांचता। बखाण थोड़ा तिण कारण। ●

२७५

सं० १८२४ भीखनजी स्वामी तो चोमासो कन्टालीये कीधो। भारमलजी स्वामी नें बगड़ी करायो। बीच में नदी चढ़े सो मोटा पुरुषां पहिलां कहि राख्यो तिण सूं नदी री उरली तीर तो स्वामीजी पधारता अनें पेली तीर भारमलजी स्वामी पधारता। मांहोमांहि वातां कर हेतु युक्ति सीख सुमति आछी तरें दरशन देई पाछा कन्टालीये पधार जाता। अनें भारमलजी स्वामी बगड़ी पधारता। आ बात भारमलजी स्वामी कहिता था। ❀

२७६

भीखनजी स्वामी हेमजी स्वामी ने कह्यो। म्हें उणानें छोड़्या जद ५ वर्ष ताइ तो पूरो आहार न मिल्यो। घी चोपड़ तो कठे। कपड़ो कदाचित् वासती मिलती ते सवा रुपीया री। तो भारमलजी स्वामी कहिता पछेवड़ी आपरें करो। जद स्वामीजी कहिता १ चोलपटो थारें करो १ म्हारें करो। आहार पाणी आथनें उजाड़ में सब साध परहा जावता। रूंखरा री छायां तो आहार पाणी मेलनें आतापना लेता, आथण रा पाछा गाम में आवता। इण रीतें कष्ट भोगवता। कर्म काटता। म्हें या न जाणता म्हारो मारग जमसी नें म्हां में यूं दीक्षा लेसी न यूं श्रावक श्राविका हुसी। जाण्यो आत्मा रा कार्य सारसां मर पूरा देसां इम जाणनें तपस्या करता। पछे कोइ २ रे मरधा बसवा लागी। समझवा लागा। जद थिरपालजी फतेचन्दजी आदि मोटिला साधां कह्यो लोग तो समझता दीसे है। थें तपस्या क्यूं करो। तपस्या करण में तो म्हें छां। थें तो बुद्धिवान छो सो धर्म रो उद्योत करो। लोकां नें समझावो। जद पछे विशेष श्रम करवा लागा। आचार अनुकंपा री जोड़ां करी व्रत अव्रत री जोड़ां करी। घणा जीवां नें समझाया। पछे चरचाण आइ या। ❀

२७७

बालपणा में भारमलजी स्वामी छिदमा करता जद चार ? लोगस्स कहायवो करे। पछे भीखनजी स्वामी बारया १ चार लोगस्स काउसग्ग

त्याग है। जद आफइ काढ्या लागा। इम करतां २ लेखण काढ्वा री कला घणी चोखी आई। *

२७८

किणहि रे रोगादिक ऊपनो हाय तराय करे। जद स्वामीजी बोल्या : यूं न करणो। रोगादिक ऊपनो गाढो रहणो। ज्यूं किणहि रै माथै देणा हो। देवारा परिणाम नहीं हुवा। पिण पैसे जबरी सूं लिया। जद मूर्ख तो बिलाप करे। समझण हुवै ते देखे देणो मिट्यो। पछै देणा पड़ता तो पैहलांइ छूटो मिट्यो। माथा रो भार मिट्यो। ज्यूं रोगादिक ऊपना सैणा जाणै बांध्या कर्म भोगव्यां छूटो मिट्यो। यूं जाण नें बिलाप न करै *

२७९

स्वामीनाथ बखाण में मेरू शीतला नें निषेधे। जद हेमजी स्वामी बोल्या आप देवता नें निषेधो सो द्वेष करेला। जद स्वामीजी बोल्या : बरता रो समदृष्टी देवता रो है सो फोड़ा पाड़ै तो समदृष्टी इंद्र वज्र री देवे तिण सूं बरता माथां नें दुःख न देवै। *

२८०

स्वामीजी बोल्या मूओ मनुष्य काम आवे सो साधु संसार लेखे गृहस्थ रै काम आवे। साधु कने काइ आयो। पांच रुपिया मूल गया। चूओ ले गयो। साधु जाणै इणरा रुपिया है। अनें ऊ ले गयो आय नें पूछे म्हारा रुपिया अठे था सो कुण ले गयो तो साधु बतावे नहीं। एक धर्म सुणावा रो सीजारो है। बाकी सावद्य कामांरे लेखे साधु गृहस्थ रे काम आवे नहीं इसा साधु रा मारग है। *

२८१

भीखनजी स्वामी गृहस्थ री बकी पाड़िहारी सूई कतरणी छुरी रात्रि १ तथा घणा दिना रात्रि राखता। जद बोल्या : साध नें सूई रात्रि राखणी नहीं। छुरी कतरणी पिण रात्रि राखणी नहीं। जद स्वामीजी

तीन जणां र इसी सरधा । एक जणो सावद्यदान में पुन्य सरधै १। एक जणो सावद्यदान में मिश्र सरधै २। एक जणो सावद्यदान में पाप सरधै ३। यां तीनूं जणां अभिग्रह किन्यो आ संका मिटे तो घर में रहिवा रा त्याग। जबे ए संका काढवा दरबार में तो आए नहीं। एतो संका काढवा साधां कने ईज आवै। हिवे साधां नें पूछ्यां मन्धु कहै म्हारे तो मून है। तो त्यांरी संका किम मिटे। इण लेखे वर्तमान काले मून। सुयगडायङ्ग मु० १ अ० ११ तथा मु० २ अ० ५ अर्थ में मून कही। अनें उपदेश में भगवती श० ८ उ० ६ भगवान गोतम नें कह्यो : तथारूप असंजती नें सचित्त अचित्त सूझतो असूझतो दियां एकन्त पाप। इण न्याय उपदेश में छे जिसा फळ बताय समझाय साधपणो पराहो देणो। ●

२८६

केइ कहै साधु सामायक पढावे नहीं तो पाटी सीखावै क्यूं। जद स्वामीजी बोल्या : साधु सामायक पढावे नहीं। सो किसो सामायक में पाठो देई पाडै है। एक मुहूर्त भी सामायक कीधी। अनें १ मुहूर्त बर्या सामायक तो आय गई। पाडै सा तो दोष अतिचार री आलोयणा करै है। ते आलोयणा री भगवान री आज्ञा। जिम पाडवारी पाटी सीखावै है। अनें वर्तमानकाळ में पढावे नहीं। सो ते कठनें पराहो जाय तिण आश्री पढावे नहीं। पिण दोष री आलोयणा करायां सीखायां दोष नहीं। ●

२८७

एक जणो स्वामीजी सूं चरचा करतां ऊधा अवळो बोलै। जद स्वामी जी नें किणहि कह्यो : महाराज ! ए ऊधो अवळो बोलै तिण सूं कांई चरचा करो। जद स्वामीजी बोल्या : नान्हो बालक समझ न आई जितरै बाप री मूंछां खांचै। पिता री पाग में बेवै। पिण समझ आयां पछै कहीज चाकरी करै। ज्यूं साधां रा गुण न ओळख्या जितरे ए ऊधा अवळो बोलै गुण ओळख्यां पछै ए हीज भाव भक्ति करसी। ●

२८८

साध रातें वखाण देवै। पिण रातें वखाण दवै। साध बाजार में उतरै। देसावेस पिण बाजार में उतरै। इम देसावेस कार्य करै। पिण शुद्ध भद्धा आचार बिनां पाधरी न पड़ै। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : एक साहुकार में पाते सो समझ नहीं अनें पाड़ोसी भी देसावेस व्यापार करै। पाड़ोसी वस्तु खरीदै तिका वस्तु ओ पिण खरीदै। जद पाड़ोसी विचार्यो ओ देसावेस करै है के माँहें समझ है। जद पाड़ोसी घटा में कहै, अबारू टीपणा तेज है, सो देसावरा सूं खरीदणा। टीपणा थाड़ा दिना में एक २ रा चाय २ हुवे है। ए वात सुणनें साहुकार देसावर जायनें टीपणां जूना नया खरीद्या। सो पूंजी रो नास थयो। ज्यूं साधा री देसावेस पिण काय करै पिण शुद्ध भद्धा आचार बिना काइ गरज पड़ै नहीं। ❀

२८९

किणहि कह्यो पिणतपस्या मास खमणादिक करै। लोच करावै। धोवण उन्हो पाणी पीवै। या करणी थांरी सूंही जासी काँई। जद स्वामीजी बोल्या किणहि लाख रुपिया रा दिवालो काढ्यो। पछै पइसा रो तेल आण्यो तिणरा पइसो पाछा दिया तो पइसा रा साहुकार। रुपिया रा गाठ आण्या में रुपिया पाछा दियो तो रुपीया रा साहुकार। इम पइसा रुपीया रा तो साहुकार थयो पिण लाख रुपीया रा दिवालो काढ्यो तिण रा साहुकार नहीं। ज्यूं पांच महाव्रत पचखी आधाकर्मी स्थानक निरंतर भोगवै। इत्यादिक अनेक दोष सेवै। तिण रो प्रायश्चित्त पिण नहीं लेवै। आ मोटा देवाली लोप सू नें तपस्या सूं करै उतरै। पछै मास खमणादिक पचख में पारणा पाले ते तपस्या ना साहुकार पिण पांच महाव्रत भांग्या त दिवाला किम उतरै। ❀

२९०

किणहि कह्यो उपाई मूरत माथनें माथा में मंदिरावै ना मन्दिर लेवै अनें एक वामा ऊपर घण पग लागा हुवै नहीं। पर कमूमसो

गिणे ते किण कारण। जद स्वामीजी बोल्या : साधां नें बहिरावै ते मुख्य काया रो जोग है। तिण काया रा जोग सूं चालतां ऊठतां बेसतां अजैणा करतां बहिरावै तथा बहिरावतां फूंक देवै अनें तिणनें पडिलाभ साधां आरै कीमी है तो घर असूझतो है। अनें साधू आरै कियो नहीं अनें ते ऊठतो अजैणा करै तो उद्देश असूझतो थयो। ज्यारे मुख बोलै ते वचन रो जोग है, ते बोलतां अजैणा सूं घर तथा बोलणवालो एक ही असूझतो नहीं है। उववाई में कह्यो जे निंदा करनें देवै ता लेणो। तो ज निंदा करै गाल बोलै ते किसी जणा कर। इण कारण बोलणारी अजैणा सूं ऊंट नें असूझतो न कह्यो तिण सूं तिणरा हाथ सूं लियां दोष नहीं।

: २९१

सं १८५५ रे आषाढ महीने नाथजीद्वारा स्वामीजी घणा साथ आर्यां सूं विराज्या। तिहां अजबूजी गोचरी ऊठ्या। किणहि घी बहिरायो। आगे गया एक बाई घाट बहिरावनें पूछ्यो : थे किण री आर्यां। जद स्वा कह्यो : म्हें भीखनजी स्वामी रा टोला री। जद ते बोली : हे रांडां! थे पैल्केई म्हारी रात्री ले गई। उरही द्यो म्हारी घाट। इम कहि घाट लेवा लागी। जद एक ब्राह्मणी बोली : हे कीकी! अतीत नें दियो पाछो मत ले। जद ते बोली : कुत्ता नें म्हाख देसूं पिण इणा कना सूं तो उरहो लेसूं। इम कहि घी सहित घाट जबरी सूं उरही लीधी। अजबूजी ए वात स्वामीजी न आय कही। जद स्वामीजी घणा विमासवा लागा। पछे बोल्या : इण कलिकाल में नहीं पिण देवै ना पिण कदे जाणनें असूझता पिण होवै पिण देनें उरहो लेवै ए बात तो नवीन सुणी। ब्राह्मणी रा कहिण थी बात गाम में फैली। ज्यारा धणी नें लाफ कह्यो : हाटे तो में कमायो में घरे थारी बहू कमाव। ऊ पिण मन में लागी। थोरा दिनां पछै रातरी रे दिन ता एकाएक बडो मर गयो। थोड़ा दिनां में धणी पिण मर गयो। जद सामजी भायक तुको आदयो।

बदर साहरी दीकरी कीकी थारो नाम।
घाट सहित घी ले लियो। ठाकीकर दियो ठाम ॥१॥

काणी हुवे। पिचळी नेज तत हुवे तो अंतरकाण न पड़े। ज्यूं देव गुरु धर्म तिण में गुरु आधम। जो गुरु चोखा हुवे तो देव पिण चोखा हुवे। धर्म पिण चोखो बतावे। गुरु खोटा हुवे तो देव में फरक पाड़ देवे अनें धर्म में ई फरक पाड़ देवे। जो गुरु मिळे ब्राह्मण तो देव बतावे शिव अनें धर्म बतावे ब्राह्मण जीमावो १। गुरु मिळे जो भोपा तो देव बतावे धर्म राजा। धर्म बतावे भोपा जीमावो पाती लेवो २। गुरु मिळे कामड़िया तो देव बतावे रामदेवजी। धर्म बतावे जमा री रात जगावो कामड़ी जीमावो ३। गुरु मिळे मुल्ला तो देव बतावे अल्ला। धर्म बतावे जब करो। पर धरंती मेर धरंती। सब धरती पगु तेरा। हुकम आवा अल्ला साहिब रा सो गळा काटूं तेरा ४। अनें जो गुरु मिळे निग्रंथ तो देव बतावे असल अरिहंत। धर्म भगवान री आज्ञा में ५। गजी में मूं खी बासती। तीनूं एकण गोत। जिणनें जैसा गुरु मिल्या तिसा काढ़िया पोत। इण दृष्टान्ते जैसा गुरु मिळे तेसाईं देव अनें धर्म बतावे।

२९४

केई अज्ञाण कहे : म्हें तो ओघा मुंहपती नें वांदां। म्हारे करणी सूं काई काम। तिण ऊपर स्वामीजी बोल्या : ओघा नें वांदां फिरे तो ओघो तो हुवे है ऊन रो अनें ऊन होवे है गाडर री। जो ओघा नें वांदां फिरे तो गाडर रा पग पकड़णा। धन्य है माता तूं सो थारो ओघो पैदास हुवे है। अनें मुंहपती नें वांदां फिरे तो मुंहपती तो होवे है कपास री अनें कपास हुवे वणरा। जो मुंहपती नें वांदां फिरे तो। वण में नमस्कार करणो। धन्य है तूं सा थारी मुंहपती हुवे है।

२९५

कोई कहे प दोष लगावे तो पिण गृहस्थ थिके तो आछा है। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो। एक साहुकार री हाटे प्रभाते कोई पइसो लेई आयो। कहे साहजी पइसा रो गुड़ दे। जद तिण पइसो लेई बाखमे ग्राहको दियो। गुड़ दे दियो। जाण्यो प्रभाते तांबा माणा री

बोहरणी हुई। दूजे दिन रुपियो लेई आयो। कहै साहजी रुपिया रा टका दे। जद तिण रुपियो लेइ पाडने उराह्यो लियो। टका गिण दिया। मन में राजी हुआ आछ रूपा नाणा रा दर्शण हुओ। तीजे दिन खाटा रुपियो लेइ आयो। कहै साहजी रुपइया रा टका दे। जद ते राजी हाय थाल्यो : म्हारे काढ़ का गराक आयो। रुपियो हाथ में लेइ दूजै तो खाटा। माहि तांबो नें ऊपर रूपो। अलगा न्हाखने बाल्यो प्रभाते खाटा नाणा रा दरसन हुओ। जद ऊ बोल्या : साहजी बेराजी क्यूं हुआ। परभू तो म्हे पहलो आण्यो सो तांबा नाणा थांनो। काल रुपियो आण्यो सो रूपो नाणो थांनो। अने इणमें तो तांबो रूपा दान् ई सो हाथ पार थांनो। जद ऊ बाल्यो : र मूरख परभू तो एकलो तांबो हो या ठीक। काले एक लो रूपा हो सो विशेष चोखो। दवे तो न्यारा २ हा। तिण सू खाटा नहीं। अने इणरे माहि तो तांबो अने ऊपर रूपा रा झाल तिण सू ए खाटा। ए काम रा नहीं। इण दृष्टांते पइसा समान तो गृहस्थ श्रावक। रुपिया समान साधु। खोटा रुपिया समान । ऊपर भेष तो साध रा नें लक्षण गृहस्थ रा। ए खाटा नाणा सरीषा। नां तो साध में नां गृहस्थ में अपथेरा ए बांदवा जोग नहीं। श्रावक री प्ररासबा जाग अराधक। साध री प्ररासबा जाग आराधक। पिण खोटा नाणा रा साथी भेषधारी आराधक नहीं। ६

२९६

किणहि कह्या रामाबासा नें बंदणा कियो तब कहै : दया पालो। कहै पाछा नमावे। अने आप जी कहा सो कारण कांई। जद स्वामीजी बोल्या : नाथां में कहै आदेश। जद उव कहै आदि पुरुष है। पीछे आदेश कहै नहीं। पाछा में गुण नहीं तिणसूं। आदेश किया त आदि पुरुष कूं भलायो। गुसांई में कहे नमो नारायण। जद ते बोल्या : नारायण। इसरा गुरां का म्हां में करामात कांई नहीं है। नमस्कार नारायन कूं करो। बष्णु में कहे राम २ जद उवे कहै रामजी। उमो पिण रामजी न भलायो। पाछे मल्या नहीं। फकीर नें कहै मांई साहिब। जद ऊ कहै साहिब। उन पिण साहिब में भलायो। जती नें कहै गुरांजी वंदना। जद उव कहै धम लाभ।

धर्म करो थो लाभ हुसी। म्हारे भरोसे रहिज्यो मती। नें कहै समाज स्वामी, चोरू स्वामी। उबे कहै दया पाळो। दया पाल्यां निहाल हुओ पिण म्हानें थोथां कोई तिरै नहीं। इम रो गुरी यो है। ए पिण वयमा मेळे नहीं। घर में माल बिना हुंडी सीकारणी आवै नहीं। अनें साधां नें वंदना करे। जद उबे कहे थी थांरी वंदना में सतकारी थानें वंदणा रो धर्म हाथ चूको। कोई कहै जी कहिणो कठै चाल्यो है। तिण रो उत्तर : राय प्रसेणी में सूर्याभ वंदना कीधी जद भगवान ६ बोल कह्या। तिण में जीवमेयं पुरियामा। ए वंदना करी ते थांरो जीव आचार है इम कह्यो। कोई कहै जीय शब्द सूत्र में है थें थी एक अक्षर ईज किम कह्यो छो। तेह नो उत्तर ए जीय शब्द नो एक अक्षर थी ते वेरा है। ते वेरा कह्यां दोष नहीं। सूत्र में कठेक तो वचन रो पाठ। वचण आवे अनें कठेक मय आवे। इहां पिण वेरा आयो। यथा धर्मास्तिकाय नें कठेक तो धम्मत्थिकाए एहवो पाठ। कठेक धम्मा धम्मे आकासे। इहां पिण वेरा कह्यो : तिम जीय ए पाठ नों वेरा थी इम कहिये दोष नहीं। ❀

२१७

स्वामीनाथ बोल्या : धर्म तो दया में है। जद हिंसाधर्मी बोल्या : दया २ स्यूं पुकारो छो। दया रांड पड़ी अवरळी में काटे। जद स्वामीजी कह्यो। दया तो माता कही। उत्तराध्ययन अ० २४ आठ प्रवचन माता कहै छे। तिण में दया आय गई। जिम कोई साहुकार आउखो पूरो कियो। जारे तिण री स्त्री रही। सो सपूत हुवे सा तो पिण माता रा यत्न करे अनें कपूत हुवे ते ऊंधा अवळा चाले। माता नें रंडकारा री गाळ बोले। ज्यूं दया रा धणी तो भगवान थे तो मुक्ति गया। जारे साध श्रावक सपूत ते तो दया माता रा यत्न करे। अनें थां जिसा कपूत प्रगटिया सो रांड २ कहि नें बोलावो। ❀

२१८ :

साधपणा लेई शुद्ध न पाळे अनें साधरो नाम धराव माम धराय पूजाव। तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टान्त दियो : एक मुसळा रे पाळ पोष

घाडी नाहर ताइया। जद मुसलो न्हासनें बिल में पेस गयो। बिल में आगे लूंकड़ी बैठी तिण पूछ्यो : तूं सास घमण हाय न्हास नें क्यूं आयो। मुसलो कुवरी ते बोल्या अटवी ना जानवर भेला होयनें मानें चोधर पणो दवै। सो हुंतो कोई लेऊ नहीं। तिण सूं न्हासनें उरहा आयो। जद लूंकड़ी बोली अरे चोधरपणा में तो बड़ो स्वाद है। जद मुसलो बोल्यो : थारो मन हुवै तो तूं ले। म्हारे तो कोइ चाहीजे नहीं। जद लूंकड़ी चोधरपणो लेवा बारै नीकली। जब दोनूं घाडी नाहर ऊभा हा। सो दानूं कान पकड़ लिया। जद लोही करती पाछी आइ। जद मुसलै पूछ्यो : पाछी क्यूं आई। तब लूंकड़ी बोली चोधरपणो में साधा खाण घणी सो कान टूट गया तिण सूं पाछी आई। ज्यूं साधपणो लेई चोखा न पाले दोष लगावे प्रायश्चित न ले अने साध रा नाम धरावे लोकां में पूजावे ते इहलोक परलोक में लूंकड़ी ज्यूं सताय ह। नरक निगोद म गोता खावै।

२९९

किणहि कह्यो : भीखनजी जिहां थें जावो तिहां लोकां र धमका पड़े। जद स्वामीजी बोल्या गारड़ू आवे गाम में ते कदे डाकणियां नें प्रभावे भीला कानां में घालमा जद धसका डाकणियां रे पड़े। तथा स्वांग ध्यातीलां रै पड़े। पिण दूजा लोक तो राजी हुवे। ज्यूं साध गाम में आयां भेषधारी हीण आचारी ज्यां रै धमका पड़े। के त्यांरा श्रावकां रै धमका पड़े। अनें हलुकर्मी जीव है ते तो घणा राजी है। जाणै वखाण सुणस्यां। सुपात्रदान देस्यां। ज्ञान सीखस्यां। साधां री सेवा करस्यां। इम राजी हुवै।

३००

स्वामीजी सूं चरचा करतां कोइ ऊंधो अंपलो बोले : थांरी श्रद्धा कपट री। आचार में धर्म घणा। जद स्वामीजी बोल्या : म्हारी श्रद्धा आचार तो चोखो है। पिण थांनें इमीज दीसै है। आप री आंख में पीलिया हुवै जद मनुष्य पीला ? निजर आवै। लोकां नें कदे भाव फल

जद टोडरमलजी कह्यो : रे मूरख म्हें इसो काम क्यां में करां। जद भीरजी कह्यो : न करावो तो कणा न सरायो क्यूं।

३१२ :

फेर टोडरमलजी भीरे पोसरणे ने कह्यो : भीखनजी सूत्र नो पाठ उथाप्यो। साधु नें असूझतो दियां अल्प पाप बहुत निरजरा भगवती में कह्यो है। जद भीरजी कह्यो : पूज्यजी आप गोचरी पधारया म्हारे कटोरदान में लाडू है। ते कटोरदान गोहां में है सो थारे कार बहिराय देसूं। म्हारेई अल्प पाप बहुत निरजरा हुसी। जद टोडरमलजी कह्यो : रे मूरख म्हें क्यां में क्यां। जद भीरजी कह्यो : न क्यों तो आप क्यूं करो।

ए दृष्टांत केयक तो स्वामीजी रे मूंडे सुण्यां। केयक और आगां पिण सुण्यां। तिण अनुसारे मंडाय कोई सक्षेप हुंतो तिणनें अनुमान न्याय जाण ने वधारयो। विस्तार जाणनें संकोच्यो। तिण में कोइ विरुद्ध आयो हुवै। तथा मूळ लागो हुवे आगो पाछो विपरीत कह्यो हुवै तो "मिच्छामि दुक्कड़।"

॥ दुहा ॥

संवत उगणीसे तीए। कातिक मास मझार।
सुदि पख तेरस तिथ भली। सूर्यवार श्रीकार ॥ १ ॥
हेम जीत आप आदि दे द्वादश संत दिपंत।
श्रीजीद्वारा सहर में। कियो चोमासो धर संत ॥ २ ॥
हेम टिकाया हर्ष सं शिष्य जीत धर संत।
सरस रसे करी सोभता। भीखणु ना दृष्टांत ॥ ३ ॥
उत्पतिया बुद्धि आगला। भिक्षु गुण भंडार।
हितकारी दृष्टंत तसु। सांभलतां सुखकार ॥ ४ ॥

★

: २०८

आधाकर्मी थानक में रहे अनें घर छोड्या कहे तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ज्यूं जती रे उपासरो १। मथेरण रे पोशाळ २। फकीर रे तकियो ३। भक्तां रे अस्तल ४। फुटकर भक्त रे मढी ५। कनफड़ां रे आसण ६। सन्यासी रे मठ ७। रामसनेहियां रे राम दुवारो कठेयक कहे राममोहिलो ८। घर रा धणी रे घर ९। सेठरे हवेली १०। गाम रा धणी रे कोटरी। कठेयक कहे रावळो ११। राजा रे महल तथा दरबार १२। अन साधां रे थानक १३। नाम में फेर है बाकी सगला घर रा घर है। कठेक कसी धूड़ी। कठेयक झुलाला धूड़ा। पिण छकाया रो आरम्भ तो ज्यूं रो ज्यूं परहो हुवा।

: २०९ :

अमरसींगजी रो चेलेरो बोहरजी ने किणहि पूछ्यौ : शीतलजी रा साधां में साधपणो है। जद बोहरजी कह्यौ : ज्यां में तो किसो ही हुंतो मोमेंई न सरधूं। जद फेर पूछ्यौ। भीखनजी में साधपणो है। जद बोहरजी कह्यौ : इणामें तो हुवे तो कहवाय नहीं। एवे तो रूप करे है।

: २१० :

खेमरूजी पुर में बखाण देतां धणी परिषदा में किणहि गृहस्थ पूछ्यौ : भरी सभा में मिश्र भाषा बोल्यां महामोहणी कर्म बंधे। भीखनजी साध है के असाध। जद खेमरूजी बोल्या : भीखनजी चोखा साध है पिण म्हांनें भेषधारी २ कहे तिण सूं म्हेंई निन्हव कह्या छा।

२११

केलारण में धीरो पोखरणो तिणनें टोडरमलजी कह्यौ : भीखनजी कहै थोड़ा दोष सूं साधपणो भागै। जो यूं साधपणो भागे तो पारसनाथजी री २०६ आर्य्यां हाथ पग धोया काजल घाल्या डाबरा डाबरी रमाया ते पिण मर ने इन्द्रनी इन्द्राणियां हुई अनें एकाभवतारी हुई। जद धीरजी पोखरणे कह्यौ : पूज्यजी आपा री आर्य्यां रे काजल घलावो हाथ पग धोवावो डाबरा डाबरी रमावा री आज्ञा दो। सो ए पिण एकाभवतारी होय जावे।

जद टोडरमलजी कह्यो : रे मूरख म्हें इमो काम क्यांनें करां । जद धीरजी कह्यो : न कराबो तो कया न सराबो क्यूं । ॐ

३१२

फेर टोडरमलजी धीरे पासरणे न कह्यो : भीखनजी सूत्र मो पाठ उथाप्यो । साधु नें असूझतो दियां अल्प पाप बहुत निर्जरा भगवती में कह्यो है । जद धीरजी कह्यो : पूज्यजी आप गोचरी पधारस्यां म्हारै कठोरदान में लाडू है । ते कठोरदान गाडा में है सो थारे काढ बहिराय देसूं । म्हारेई अल्प पाप बहुत निर्जरा हुसी । जद टोडरमलजी कह्यो : रे मूरख म्हें क्यां नें ल्यां । जद धीरजी कह्यो : न ल्यो तो थाप क्यूं करो । ॐ

ए दृष्टांत केयक तो स्वामीजी रे मूंडे सुण्या । केयक और आगो पिण सुण्यां । तिण अनुसारे मंडाय कोई संक्षेप हुतो तिणनें वनमान न्याय आण नें थपायो । विस्तार आपनें संकोच्यो । तिण में कोइ विरुद्ध आया हुवै । तथा झूठ लागा हुवै आघो पाछो विपरीत कह्यो हुवै तो "मिच्छामि दुक्कड़ ।"

॥ दुहा ॥

संवत उगणीसे तीए । कातिक मास मझार ।
सुदि पख तेरस तिथ भली । सूर्यवार श्रीकार ॥ १ ॥
हेम जीत ऋष आदि दे द्वादश संत दिपंत ।
श्रीजीद्वारा सहर में । कियो चोमासो धरखंत ॥ २ ॥
हेम लिखाया हर्ष सूं लिख्या जीत धर खंत ।
सरस रसे करी सोमता । भीखणु ना दृष्टांत ॥ ३ ॥
उत्पतिया बुद्धि आगला । भिक्षु गुण भंडार ।
हितकारी दृष्टंत तसु । सांभलतां सुखकार ॥ ४ ॥

★

: ३०८

आधाकर्मी थानक में रहै अनें घर छोड्या कहै तिण ऊपर स्वामीजी दृष्टांत दियो : ज्यूं जती रे उपासरो १। मथेरण रे पोशाल २। फकीर रे तकियो ३। भक्तां रे अस्थल ४। कुंडापंथ मत रे मढी ५। कनफड़ा रे आसन ६। सन्यासी रे मठ ७। रामसनेहियां रे राम दुवारो कठेयक कहै रामसोहिलो ८। घर रा धणी रे घर ९। सेठ रे हवेली १०। गाम रा धणी रे कोटड़ी। कठेयक कहै गावड़ो ११। राजा रे महल तथा दरबार १२। अनें साधां रे थानक १३। नाम में फेर है बाकी सगला घर रा घर है। कठेक कसी मुड़ी। कठेयक कुशाला गूफा। पिण छकाया रो आरम्भ तो ज्यूं रो ज्यूं पहलो हुओ। ❁

: ३०९ :

अमरसींघजी रो चेलो जोरजी ने किणहि पूछ्यो : भीखणजी रा साधां में साधपणो है। जद जोरजी कह्यो : त्यां में तो किहां ही हुवै मो में ई न धरूं। जद फेर पूछ्यो। भीखणजी में साधपणो है। जद जोरजी कह्यो : त्यां में तो हुवै तो अटकाव नहीं। इसो तो तप करे है। ❁

: ३१० :

जैमलजी पुर में वखाण देतां घणी परिषदा में किणहि गृहस्थ पूछ्यो : भरी सभा में मिश्र भाषा बोल्यां महामोहणी कर्म बंधै। भीखणजी साध है के असाध। जद जैमलजी बोल्या : भीखणजी चोखा साध है पिण म्हांनें भेषधारी २ कहै तिण सूं म्हेंई निन्हव कहां छां। ❁

: ३११ :

खेरवा में धीरो पोकरणो तिणनें टोकरमलजी कह्यो : भीखणजी कनै चोखा होय सूं साधपणो मांगै। जो तूं साधपणो मांगे तो पार्श्वनाथजी री २०६ आर्यां हाथ पग धोया काजल घाल्या छावरा छावरी रमाया ते पिण मर ने इन्द्राणी इन्द्राणियां हुई अनें एकाभवतारी हुई। जद धीरजी पोकरण कह्यो : पूज्यजी आपरी भी आर्यां रे काजल घलावो हाथ पग धोवावो छावरा छावरी रमावा री आज्ञा दो। सो ए पिण एकाभवतारी होय जावै।